卐

जैन पूजा संग्रह



प्रकाशक—

महावीर प्रशाद जैन ठेकेदार

मालिक फ़र्म महावीर प्रशाद एण्ड सन्स

चावड़ी बाजार देहली।

५०००

मूल्य
स्वाध्याय मात्र



लाला महावीर प्रशाद जैन ठेकेदार

विषय-सूची



मेरे यम व नियम

तारीख

हस्ताक्षर

"दो शब्द"

कर्म भूमि शुभ आर्य क्षेत्र अरु, मनुष गती उत्तम कुल धार।
दीरघ आयु अक्ष पूरणता, तन नीरोग जीविका सार॥
जगत मान्य सुख थान विपुल धन, निर्विकल्प हो हृदय उदार।
पुत्र पौत्र परिवार सुखी सब, शुद्धाचरणी आज्ञाकार॥१॥
श्रवण जिनागम सुज्जन संगति, गुणियन कथा भक्ति जिनदेव।
पूजा दान नेम व्रत संयम, वसें हृदय हो दूरि कुटेव॥
ऐसा दुर्लभ अवसर कोई, बड़े पुण्य से पाता है।
ज्ञानी नर भव सफल करें, मूरख जन वृथा गमाता है॥२॥

ये उपर्युक्त बातें कभी किसी को प्रवल पुण्योदय से मिलती हैं इसलिये धर्मात्मा पुरुषों को धर्म के कामों द्वारा मनुष्य जन्म सफल बनाना चाहिये।

जैसा कहा है:—

जिनेन्द्र पूजा गुरु पर्युपास्ति सत्वानुकम्पा शुभ पात्र दानम्।
गुणानुरागः श्रुतरागमस्य नृजन्म वृक्षस्य फलान्य मुनि॥

अर्थात्—जिनेन्द्रदेव की पूजा गुरु की उपासना समस्त प्राणियों में दया शुभ पात्रों को दान गुणियों से अनुराग और शास्त्रों का श्रवण ये मनुष्य जन्म रूपी वृक्ष के फल हैं इसलिये गृहस्थियों को घरमें रहते हुये नित्य षट् कर्मों को साधन करना चाहिये।

देव पूजा गुरोपास्ति स्वाध्याय संयमस्तपः ।
दानं चेति गृहस्थानां षट् कर्माणि दिने दिने ॥

गृहस्थों के षट कर्मों में भगवान की पूजा और सुपात्रों को दान की मुख्यता है यहांपर हमें यह कहने में कोई संकोच नहीं कि श्रीमान् लाला महावीर प्रसाद जी ठेकेदार और उनके ज्येष्ठ पुत्र लाला श्यामलाल जी भगवान की पूजा में और दान में सदैव संलग्न रहते हैं तथा आपके अन्य सब पुत्र पौत्र सबही का चित्त धार्मिक कामों में रहता है आपके यहां से हजारों रुपये का दान होता रहता है आपने यह "जैन नित्य पूजन पाठ संग्रह" नाम का गुटका करीब ४०० पृष्ठ का छपाया है जोकि इसकी ५००० प्रतियां स्वाध्याय प्रेमी भक्तों को बिना मूल्य बांटेंगे इससे सर्व साधारण जनता को अत्यन्त धर्म लाभ होगा। आशा है अन्य भी धनी दानी धर्मात्मा आपका अनुकरण करेंगे।

पं० मक्खनलाल जैन
धरमपुरा छैं घरा देहली

नोट—इस गुटके को शुद्धता पूर्वक छपाने में ला० जुगलकिशोर जी मालिक फ़र्म धूमीमल धरमदास ने बड़ा परिश्रम किया है अतएव धन्यवाद के पात्र हैं।

पुस्तक मिलने का पता—
महावीर प्रशाद एन्ड सन्स
चावड़ी बाजार देहली, ६

श्रीजिनेन्द्राय नमः ।



श्री जैन पूजापाठ संग्रह

मंगलाचरण

दोहा

श्रीमत वीर जिनेन्द्रको, बार बार शिर नाय ।
संग्रह पूजापाठ का, करूं स्व-पर सुखदाय ॥१॥

दर्शन पाठ

दर्शनं देवदेवस्य, दर्शनं पापनाशनं ।
दर्शनं स्वर्गसोपानं, दर्शनं मोक्षसाधनं ॥१॥
दर्शनेन जिनेन्द्राणां, साधूनां वंदनेन च ।
न चिरं तिष्ठते पापं, छिद्रहस्ते यथोदकम् ॥२॥
वीतरागमुखं दृष्ट्वा, पद्मरागसमप्रभं ।
अनेकजन्मकृतं पापं, दर्शनेन विनश्यति ॥३॥
दर्शनं जिनसूर्यस्य संसारध्वान्तनाशनं ।
बोधनं चित्तपद्मस्य, समस्तार्थप्रकाशनं ॥४॥

दर्शनं जिनचन्द्रस्य, सद्धर्मामृतवर्षणं ।
जन्मदाहविनाशाय, वर्धनं सुखवारिधेः ॥५॥
जीवादितत्वंप्रतिपादकाय, सम्यक्त्वमुख्याष्टगुणार्णवाय ।
प्रशांतरूपाय दिगंबराय, देवाधिदेवाय नमो जिनाय ॥६॥
चिदानन्दैकरूपाय, जिनाय परमात्मने ।
परमात्मप्रकाशाय, नित्यं सिद्धात्मने नमः ॥७॥
अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम ।
तस्मात्कारुण्यभावेन, रक्ष रक्ष जिनेश्वर ! ॥८॥
न हि त्राता न हि त्राता, न हि त्राता जगत्त्रये ।
वीतरागात्परो देवो, न भूतो न भविष्यति ॥९॥
जिने भक्तिर्जिने भक्तिर्जिने भक्तिर्दिने दिने ।
सदा मेऽस्तु सदा मेऽस्तु सदा मेऽस्तु भवे भवे ॥१०॥
जिनधर्मविनिर्मुक्तो, मा भवेच्चक्रवर्त्यपि ।
स्याच्चेटोऽपि दरिद्रोऽपि जिनधर्मानुवासितः ॥११॥
जन्म जन्म कृतं पापं, जन्मकोटिमुपार्जितं ।
जन्ममृत्युजरारोगं, हन्यते जिनदर्शनात् ॥१२॥

अद्याभवत्सफलता नयनद्वयस्य,
देव त्वदीय चरणांबुजवीक्षणेन ।
अद्य त्रिलोकतिलकं प्रतिभाषते मे,
संसारवारिधिरयं चुलुकप्रमाणम् ॥१३॥

पंच मंगल

पणविवि पंच परमगुरु, गुरु जिनशासनो।
सकलसिद्धिदातार सु विघनविनाशनो॥
सारद अरु गुरु गौतम सुमति प्रकाशनो।
मंगल कर चउ-संघहि पापपणासनो॥

पापहिंपणासन गुणहिं गरुवा, दोष अष्टादश—रहिउ।
धरि ध्यान कर्मविनाश केवल, ज्ञान अविचल जिन लहिउ॥
प्रभु पञ्चकल्याणक विराजित, सकल सुर नर ध्यावहीं।
त्रैलोक्यनाथ सुदेव जिनवर, जगत मङ्गल गावहीं ॥१॥

१—गर्भकल्याणक

जाके गरभकल्याणक धनपति आइयो।
अवधिज्ञान—परवान सु इंद्र पठाइयो॥
रचि नव बारह जोजन, नयरि सुहावनी।
कनकरयणमणिमंडित, मंदिर अति बनी॥

अति बनी पौरि पगारि परिखा, सुवन उपवन सोहये।
नरनारि सुन्दर चतुर भेख सु, देख जनमन मोहये॥
तहं जनकगृह छहमास प्रथमहिं, रतनधारा बरसियो।
पुनि रुचिकवासिनि जननि-सेवा करहिं सबविधि हरसियो॥२॥

सुरकुंजरसम कुंजर, धवल धुरंधरो ।
केहरि-केशरशोभित, नख-शिखसुन्दरो ॥
कमलाकलस-न्हवन, दुइ दाम सुहावनी ।
रवि-ससि मंडल मधुर, मीन जुग पावनी ॥
पावनि कनक घट जुगमपूरण, कमलकलित सरोवरो ।
कल्लोलमालाकुलितसागर, सिंहपीठ मनोहरो ॥
रमणीक अमरविमान फणिपति-भवन भुविछवि छाजई ।
रुचि रतनरासि दिपंत, दहन सु तेजपुंज विराजई ॥३॥

ये सखि सोरह सुपने सूती सयनहीं ।
देखे माय मनोहर, पश्चिम रयनहीं ॥
उठि प्रभात पिय पूछियो, अवधि प्रकाशियो ।
त्रिभुवनपति सुत होसी, फल तिहँ भासियो ॥
भासियो फल तिहिं चिंत दम्पति परम आनन्दित भये ।
छहमासपरि नवमास पुनि तहं, रयन दिन सुखसों गये ॥
गर्भावतार महंत महिमा, सुनत सब सुख पावहीं ।
भणि 'रूपचन्द' सुदेव जिनवर जगत मङ्गल गावहीं ॥४॥

२—जन्मकल्याणक

मतिश्रुतअवधिविराजित, जिन जब जनमियो ।
तिहुंलोक भयो छोभित, सुरगन भरमियो ।

कल्पवासि घर घंट अनाहद वज्जियो।
जोतिषघर हरिनाद, सहज गल गज्जियो॥
गज्जियो सहजहिं संख भावन, भुवन सबद सुहावने।
विंतरनिलय पटु पटहिं बज्जिय, कहत महिमा क्यों बने॥
कंपित सुरासन अवधिबल जिन-जनम निहचै जानियो।
धनराज तब गजराज मायामयी निरमय आनियो॥५॥

जोजन लाख गयंद, वदन सौ निरमये।
वदन वदन वसुदंत, दंत-सर-संठये॥
सरसर सौ-पनवीस, कमलिनी छाजहीं।
कमलिनि कमलिनि कमल पचीस विराजहीं॥
राजहीं कमलिनि कमलऽठोतरसौ मनोहर दल बने।
दल दलहिं अपछर नटहिं नवरस, हाव भाव सुहावने॥
मणि कनककिंकणि वर विचित्र सु अमरमण्डप सोहये।
घन घंट चँवर धुजा पताका, देखि त्रिभुवन मोहये॥६॥

तिहिं करि हरि चढ़ि आयउ सुरपरिवारियो।
पुरहिं प्रदच्छन दे त्रय, जिन जयकारियो॥
गुप्त जाय जिन-जननिहिं, सुखनिद्रा रची।
मायामई सिसु राखि तौ, जिन आन्यो सची॥
आन्यो सची जिनरूप निरखत, नयन तृपति न हूजिये।

तब परम हरषित हृदय हरिने सहस लोचन १ पूजिये ॥
पुनि करि प्रणाम जु प्रथम इन्द्र, उछंग धरि प्रभु लीनऊ ।
ईशान इन्द्र सुचंद्र छवि सिर, छत्र प्रभुके दीनऊ ॥७॥

सनतकुमार महेन्द्र, चमर दुइ ढारहीं ।
शेष शक्र जयकार, शबद उच्चारहीं ॥
उच्छवसहित चतुरविधि सुर हरषित भये ।
जोजन सहस निन्यानवै, गगन उलंघि गये ॥
लँघिगये सुरगिरि जहां पांडुक, वन विचित्र विराजहीं ।
पांडुकशिला तहं अर्द्धचन्द्र समान, मणि छवि छाजहीं ॥
जोजन पचास विशाल दुगुणायाम, वसु ऊंची गनी ।
वर अष्ट-मंगल-कनक कलशनि सिंहपीठ सुहावनी ॥८॥

रचि मणिमंडप शोभित, मध्य सिंहासनो ।
थाप्यो पूरब मुख तहँ प्रभु कमलासनो ॥
बाजहिं ताल मृदंग, वेणु वीणा घने ।
दुंदुभि प्रमुख मधुरधुनि, और जु बाजने ॥
बाजने बाजहिं सची सब मिलि. धवल मङ्गल गावहीं ।
पुनि करहिं नृत्य सुरांगना सब, देव कौतुक ध्यावहीं ॥
भरि छीरसागर जल जु हाथहिं, हाथ सुरगिरि ल्यावहीं ।
सौधर्म अरु ईशान इन्द्र सु कलश ले प्रभु न्हावहीं ॥९॥

१-पूजिये अर्थात् सहस्र नेत्र बनाकर पूजा की

वदन उदर अवगाह, कलशगत जानिये ।
एक चार वसु जोजन, मान प्रमानिये ॥
सहस-अठोतर कलसा, प्रभुके सिर ढरे ।
पुनि सिंगार प्रमुख, आचार सबै करे ॥
करि प्रगट प्रभु महिमा महोच्छव, आनि पुनि मातहिं दयो ।
धनपतिहिं सेवा राखि सुरपति, आप सुरलोकहिं गयो ॥
जन्माभिषेक महंत महिमा, सुनत सब सुख पावहीं ।
भणि 'रूपचन्द' सुदेव जिनवर जगत मङ्गल गावहीं ॥१०॥

३—तपकल्याणक

श्रमजलरहित सरीर, सदा सब मलरहिउ ।
छीर वरन वर रुधिर, प्रथम आकृति लहिउ ॥
प्रथम सार संहनन, सरूप विराजहीं ।
सहज सुगंध सुलच्छन, मंडित छाजहीं ॥
छाजहिं अतुलबल परम प्रिय हित, मधुर वचन सुहावने ।
दस सहज अतिशय सुभग मूरति, बाललील कहावने ॥
आबाल काल त्रिलोकपति मन, रुचिर उचित जु नित नये ।
अमरोपनीत पुनीत अनुपम सकल भोग विभोगये ॥११॥

भव-तन-भोग-विरत्त, कदाचित चिंतए ।
धन-योवन पिय पुत्त, कलित्त अनित्तए ॥

कोउ न सरन मरनदिन, दुख चहुंगति भर‍्यो।
सुखदुख एकहि भोगत, जिय विधिवसि पर‍्यो॥
पर‍्यो विधिवस आन चेतन, आन जड़ जु कलेवरो।
तन असुचि परतैं होय आस्त्रव, परिहरे तैं संवरो॥
निरजरा तपबल होय समकित, विन सदा त्रिभुवन भम्यो।
दुर्लभ विवेक विना न कबहू, परम धरमविषै रम्यो॥१२॥

ये प्रभु बारह पावन, भावन भाइया।
लौकांतिक वर देव, नियोगी आइया॥
कुसुमांजलि दे चरन, कमल सिर नाइया।
स्वयंबुद्ध प्रभु थुतिकर, तिन समुझाइया॥
समुझाय प्रभुको गये निजपुर, पुनि महोच्छव हरि कियो।
रुचि रुचिर चित्र विचित्र सिविका,-करसु नंदन वन लियो।
तहँ पंचमुट्ठी लोंच कीनों, प्रथम सिद्धिनि नुति करी।
मंडिय महाव्रत पंच दुद्धर सकल परिगह परिहरी॥१३॥

मणिमयभाजन केश परिट्ठिय सुरपती।
छीरसमुद-जल खिपकरि, गयो अमरावती॥
तपसंयमबल प्रभुको, मनपरजय भयो।
मौन सहित तप करत, काल कछु तहँ गयो॥

गयो कछु तहँ काल तपबल, रिद्धि वसुविधि सिद्धिया ।
जसु धर्मध्यानबलेन खयगय, सप्त प्रकृति प्रसिद्धिया ॥
खिप सातवें गुण जतनबिन तहँ, तीन प्रकृति जु बुधि बढ़िउ ।
करि करण तीन प्रथम सुकलबल, खिपकसेनी प्रभु चढ़िउ ॥१४॥

प्रकृति छतीस नवें, गुण-थान विनासिया ।
दसवें सूच्छमलोभ, प्रकृति तहँ नासिया ॥
सुकल ध्यानपद दूजो, पुनि प्रभु पूरियो ।
बाहरवें-गुण सोरह, प्रकृति जु चूरियो ॥

चूरियो त्रेसठ प्रकृति इहविधि, घातियाकरमनि तणी ।
तप कियो ध्यानपर्यन्त बारह-विधि त्रिलोकसिरोमणी ।
निःक्रमणकल्याणक सु महिमा, सुनत सब सुख पावहीं ।
भणि 'रूपचंद' सुदेव जिनवर, जगत मंगल गावहीं ॥१५॥

४—ज्ञानकल्याणक

तेहरवें गुणथान सयोगि जिनेसुरो ।
अनंतचतुष्टयमंडित, भयो परमेसुरो ॥
समवसरन तब धनपति, बहुविधि निरमयो ।
आगमजुगति प्रमान, गगनतल परिठयो ॥

परिठयो चित्र विचित्र मणिमय, सभामण्डप सोहये ।
तिहिमध्य बारह बने कोठे, कनक सुरनर मोहये ।

मुनि कलपवासिनि अरजिका पुनि ज्योंति भौमि-व्यन्तरतिया ।
पुनि भवनव्यंतर नभग सुरनर पसुनि कोठे बैठिया ।।१६।।

मध्यप्रदेश तीन, मणिपीठ तहां बने ।
गंधकुटी सिंहासन, कमल सुहावने ॥
तीन छत्र सिर सोहत त्रिभुवन मोहए ।
अंतरीच्छ कमलासन, प्रभुतन सोहए ॥

सोहये चौमठ चमर ढरत. अशोकतरुतल छाजए ।
पुनि दिव्यधुनि प्रतिसबदजुत तहँ, देव दुंदभि बाजए ।।
सुरपुहुपवृष्टि सुप्रभामण्डल. कोटि रवि छवि छाजए ।
इमि अष्ट अनुपम प्रातिहारज, वर विभूति विराजए ।।१७।।

दुइसै जोजनमान सुभिच्छ चहूं दिसी ।
गगनगमन अरु प्राणी, वध नहिं अहनिसी ॥
निरुपसर्ग निराहार, सदा जगदीशए ।
आनन चार चहूंदिसि, सोभित दीसए ॥

दीसय असेस विसेस विद्या. विभव वर ईसुरपना ।
छायाविवर्जित सुद्ध फटिक समान तन प्रभुका बना ॥
नहिं नयनपलकपतन कदाचित्. केश नख सम छाजहीं ।
ये घातिया छयजनित अतिशय. दस विचित्र विराजहीं ।।१८।।

सकल अरथमय मागधि-भाषा जानिए ।
सकल जीवगत मैत्री-भाव बखानिए ॥

सकल रितुज फलफूल, वनस्पति मनहरैं।
दरपनसम मनि अवनि, पवन गति अनुसरैं॥
अनुसरैं परमानंद सबको, नारि नर जे सेवता।
जोजन प्रमान धरा सुमार्जहिं, जहां मारुत देवता॥
पुनि करहिं मेघकुमार गंधोदक सुवृष्टि सुहावनी।
पदकमलतर सुर खिपहिं कमलसु धरणि ससिसोभा बनी॥१९॥
अमलगगनतल अरु दिसि, तहँ अनुहारहीं।
चतुरनिकाय देवगण, जय जयकारहीं॥
धर्मचक्र चलै आगें, रवि जहँ लाजहीं।
पुनि भृंगार-प्रमुख, वसु मंगल राजहीं॥
राजहीं चौदह चारु अतिशय, देव रचित सुहावने।
जिनराज केवलज्ञान महिमा, अवर कहत कहा बने॥
तब इन्द्र आय कियो महोच्छव, सभा सोभा अति बनी।
धर्मोपदेश दियो तहां, उच्चरिय वानी जिनतनी॥२०॥
छुधातृषा अरु राग, रोष असुहावने।
जनम जरा अरु मरण, त्रिदोष भयावने॥
रोग सोग भय विस्मय, अरु निद्रा घनी।
खेद स्वेद मद मोह, अरति चिंता गनी॥

गनिये अठारह दोष तिनकरि रहित देव निरंजनो ।
नव परम केवललब्धिमंडिय सिवरमनि-मनरंजनो ॥
श्रीज्ञानकल्याणक सुमहिमा, सुनत सब सुख पावहीं ।
भणि 'रूपचंद' सुदेव जिनवर, जगत मंगल गावहीं ॥२१॥

५—निर्वाण कल्याणक

केवलदृष्टि चराचर, देख्यो १जारिसो ।
भव्यनि प्रति उपदेश्यो, जिनवर २तारिसो ।
भव-भय-भीत भविकजन, सरणै आइया ।
रत्नत्रयलच्छन सिवपंथ लगाइया ॥

लगाइया पंथ जु भव्य पुनि प्रभु तृतिय सुकल जु पूरियो ।
तजि तेरवां गुणथान जोग अजोगपथ पग धारियो ।
पुनि चौदहें चौथे सुकलबल बहत्तर तेरह हतीं ।
इमि घाति वसुविध कर्म पहुंच्यो, समयमें पंचमगती ॥२२॥

लोकसिखर तनुवात, वलयमहँ संठियो ।
धर्मद्रव्यविन गमन न, जिहि आगैं कियो ॥
मयनरहित मूषोदर, अंबर जारिसो ।
किमपि हीन निजतनुतैं, भयो प्रभु तारिसो ॥

१—जारिसो—जैसा । २—तारिसो-तैसा ।

तारिसो पर्जय नित्य अविचल. अर्थपर्जय छनछयी।
निश्चयनयेन अनंतगुण. विवहार नय वसुगुणमयी॥
वस्तुस्वभाव विभावविरहित. सुद्ध परिणति परिणयो।
चिदरूपपरमानंद मंदिर. सिद्ध परमातम भयो॥२३॥

तनुपरमाणू दामिनिवत, सब खिरगए।
रहे शेष नखकेश-रूप, जे परिणए॥
तब हरिप्रमुख चतुरविधि, सुरगण शुभ सच्यो।
मायामयि नखकेश-रहित, जिनतनु रच्यो॥

रचि अगरचंदन प्रमुख परिमल. द्रव्य जिन जयकारियो।
पदपतित अगनिकुमार मुकुटानल, सुविध संस्कारियो॥
निर्वाणकल्याणक सु महिमा. सुनत सब सुख पावहीं।
भणि 'रूपचंद' सुदेव जिनवर. जगत मंगल गावहीं॥२४॥

मैं मतिहीन भगतिवस, भावन भाइया।
मंगल गीतप्रबंध, सु जिनगुण गाइया॥
जो नर सुनहिं बखानहिं सुर धरि गावहीं।
मनवांछित फल सो नर, निहचै पावहीं॥

पावहीं आठों सिद्धि नवनिधि. मन प्रतीत जो लावहीं।
भ्रम भाव छूटैं सकल मनके निज स्वरूप लखावहीं॥
पुनि हरहिं पातक टरहिं विघन सु होहिं मंगल नितनये।
भणि 'रूपचंद' त्रिलोकपति. जिनदेव चउसंघहिं जये॥२५॥

जलाभिषेक वा प्रचालन पाठ

प्रचाल करते समय पढ़ना चाहिये।

जय जय भगवंते सदा, मंगल मूल महान।
वीतराग सर्वज्ञ प्रभु, नमों जोरि जुगपान॥

ढाल मंगल की, छंद अडिल्ल और गीता

श्रीजिन जगमें ऐसो को बुधवंत जू।
जो तुम गुणवरननि करि पावै अंत जू॥
इंद्रादिक सुर चार ज्ञानधारी मुनी।
कहि न सकै तुम गुणगण हे त्रिभुवनधनी॥
अनुपम अमित तुमगुणनिवारिध, ज्यों अलोकाकाश है।
किमि धरैं हम उर कोषमें सो अकथगुणमणिराश है॥
पै निजप्रयोजन सिद्धि की तुम नाममें ही शक्ति है।
यह चित्तमें सरधान यातैं नाम ही में भक्ति है॥१॥

ज्ञानावरणी दर्शन-आवरणी भने।
कर्म मोहनी अंतराय चारों हने॥
लोकालोक विलोक्यो केवलज्ञान में।
इंद्रादिकके मुकुट नये सुरथानमें॥
तब इंद्र जान्यो अवधितैं, उठि सुरनयुत बंदत भयो।

तुम पुन्यको प्रेरयो हरी ह्वै मुदित धनपतिसौं चयो ॥
अब वेगि जाय रचौ समवसृति सफल सुरपदको करौ ।
साक्षात् श्री अरहंतके दर्शन करौ कल्मष हरौ ॥२॥
ऐसे वचन सुने सुरपतिके धनपती ।
चल आयो तत्काल मोद धारै अती ॥
वीतराग छवि देखि शब्द जय जय चयौ ।
दे प्रदच्छिना बार बार वंदत भयो ॥
अति भक्तिभीनो नम्रचित ह्वै समवशरण रच्यौ सही ।
ताकी अनूपम शुभगतीको, कहन समरथ कोउ नहीं ॥
प्राकार तोरण सभामंडप कनक मणिमय छाजहीं ।
नगजडित गंधकुटी मनोहर मध्यभाग विराजहीं ॥३॥
सिंहासन तामध्य बन्यौ अद्भुत दिपै ।
तापर वारिज रच्यो प्रभा दिनकर छिपै ॥
तीनछत्र सिर शोभित चौसठ चमरजी ।
महाभक्तियुत ढोरत हैं तहां अमरजी ॥
प्रभु तरन तारन कमल ऊपर, अन्तरीक्ष विराजिया ।
यह वीतरागदशा प्रतच्छ विलोकि भविजन सुख लिया ॥
मुनि आदि द्वादश सभाके भविजीव मस्तक नायकें ।
बहुभांति बारंबार पूजें, नमैं गुणगण गायकें ॥४॥
परमौदारिक दिव्य देह पावन सही ।
क्षुधा तृषा चिंता भय गद दूषण नहीं ॥

जन्म जरा मृति अरति शोक विस्मय नसे ।
राग रोष निद्रा मद मोह सबै खसे ॥
श्रमबिना श्रमजलरहित पावन अमल ज्योतिस्वरूपजी ।
शरणागतनिकी अशुचिता हरि, करत विमल अनूपजी ॥
ऐसे प्रभू की शांतिमुद्रा को न्हवन जलतैं करैं ।
'जस' भक्तिवश मन उक्तितैं हम भानुढिग दीपक धरैं ॥५॥
तुमतो सहज पवित्र यही निश्चय भयो ।
तुम पवित्रता हेत नहीं मज्जन ठयो ॥
मैं मलीन रागादिक मलतैं ह्वै रह्यो ।
महामलीन तनमें वसुविधिवश दुख सह्यो ॥
बीत्यो अनंतो काल यह मेरी अशुचिता ना गई ।
तिस अशुचिताहर एक तुम ही भरहु बांछा चित ठई ॥
अब अष्टकर्म विनाश सब मल रोषरागादिक हरौ ।
तनरूप कारागेहतैं उद्धार शिव वासा करौ ॥६॥
मैं जानत तुम अष्टकर्म हरि शिव गये ।
आवागमन विमुक्त रागवर्जित भये ॥
पर तथापि मेरो मनोरथ पूरत सही ।
नयप्रमानतैं जानि महा साता लही ॥
पापाचरण तजि न्हवन करता चित्तमें ऐसे धरूं ।
साक्षात श्रीअरहंतका मानों न्हवन परसन करूं ॥

ऐसे विमल परिणाम होते अशुभ नसि शुभबंध तैं ।
विधि अशुभ नसि शुभबंधतैं ह्वै शर्म सब विधि तासतैं ॥७॥

पावन मेरे नयन, भये तुम दरसतैं ।
पानि भये तुम चरननि परसतैं ॥
पावन मन ह्वै गयो तिहारे ध्यानतैं ।
पावन रसना मानी, तुम गुण गानतैं ॥

पावन भई परजाय मेरी, भयौ मैं पूरणधनी ।
मैं शक्तिपूर्वक भक्ति कीनी, पूर्णभक्ति नहीं बनी ॥
धन धन्न ते बड़भागि भवि तिन नींव शिवघरकी धरी ।
वर क्षीरसागर आदि जलमणिकुंभ भर भक्ती करी ॥८॥

विघनसघन-वनदाहन-दहन प्रचंड हो ।
मोहमहातमदलन प्रबल मारतण्ड हो ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश, आदि संज्ञा धरो ।
जगविजयी जमराज नाश ताको करो ॥

आनन्दकारण दुखनिवारण, परममंगल-मय सही ।
मोसो पतित नहिं और तुमसो, पतित-तार सुन्यौ नहीं ॥
चिंतामणी पारस कल्पतरु, एकभव सुखकार ही ।
तुम भक्तिनवका जे चढ़ैं ते, भये भवदधिपार ही ॥९॥

दोहा—

तुम भवदधितैं तरि गये, भये निकल अविकार
तारतम्य इस भक्तिको, हमैं उतारो पार ॥१०॥

॥ इति हरजसराय कृत अभिषेक पाठ ॥

नित्य नियम पूजा

पूजन प्रारम्भ करने के समय नौ बार णमोकार मन्त्र पढ़कर नीचे लिखा विनय पाठ बोल कर पूजा प्रारम्भ करना चाहिये।

विनयपाठ दोहावली

इह विधि ठाडो होयके, प्रथम पढ़ै जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशो कर्मजु आठ ॥१॥
अनंत चतुष्टयके धनी, तुमही हो सिरताज।
मुक्तिवधूके कंथ तुम, तीन भुवन के राज ॥२॥
तिहुं जगकी पीड़ाहरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्वके शिवसुखके करतार ॥३॥
हरता अघअंधियारके, करता धर्मप्रकाश।
थिरतापद दातार हो, धरता निजगुण रास ॥४॥

धर्मामृत उर जलधिसों, ज्ञानभानु तुम रूप ।
तुमरे चरणसरोजको, नावत तिहुंजग भूप ॥५॥
मैं बंदौं जिनदेवको, कर अति निर्मल भाव ।
कर्मबंधके छेदने, और न कछू उपाव ॥६॥
भविजनकों भवकूपतैं, तुमही काढनहार ।
दीनदयाल अनाथपति, आतम गुणभंडार ॥७॥
चिदानंद निर्मल कियो, धोय कर्मरज मैल ।
सरल करी या जगतमें भविजनको शिवगैल ॥८॥
तुम पदपंकज पूजतैं, विघ्न रोग टर जाय ।
शत्रु मित्रताको धरै, विष निरविषता थाय ॥९॥
चक्रीखगधरइंद्रपद, मिलैं आपतैं आप ।
अनुक्रमकर शिवपद लहैं, नेमसकल हनि पाप १०॥
तुमविन मैं व्याकुल भयो, जैसे जलबिन मीन ।
जन्मजरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन ॥११॥
पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव ।
अंजनसे तारे प्रभू, जय जय जय जिनदेव ॥१२॥

थकी नाव भवदधिविषै, तुम प्रभु पार करेय।
खेवटिया तुम हो प्रभू, जय जय जय जिनदेव।१३।
रागसहित जगमें रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेट्यो अबै, मेटो राग कुटेव ॥१४॥
कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यंच अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो पायो जिनवर थान।१५।
तुमको पूजें सुरपती, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करनलग्यो तुम सेव।१६।
अशरणके तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भवसिंधुमें खेओ लगाओ पार ॥१७॥
इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान।
अपनो विरद निहारिकैं, कीजैं आप समान।१८।
तुमरी नेक सुदृष्टितें, जग उतरत है पार।
हाहा डूबो जात हों, नेक निहार निकार ॥१९॥
जो मैं कहहूं औरसों, तो न मिटै उरझार।
मेरी तो तोसों बनी, तातैं करौं पुकार ॥२०॥

बंदों पाचौं परमगुरु, सुरगुरु बंदत जास ।
विघनहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश ।२१।
चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय ।
शिवमग साधक साधु नमि रच्यो पाठ सुखदाय।२२

पूजा प्रारम्भ

ओं जय जय जय । नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु ।
णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरीयाणं ।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ॥१॥
ओं ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः ।
(पुष्पांजलि क्षेपण करना) चत्तारि मंगलं-अरहंतामंगलं,
सिद्धामंगलं, साहूमंगलं, केवलिपण्णत्तो, धम्मो मंगलं ।
चत्तारि लोगुत्तमा-अरहंतालोगुत्तमा सिद्धालोगुत्तमा,
साहूलोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मोलोगुत्तमा ।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरहंते सरणं पव्वज्जामि,
सिद्धं सरणं पव्वज्जामि, साहुसरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि ॥
ओं नमोऽर्हते स्वाहा ।

(यहां पुष्पांजलि क्षेपण करना)

अपवित्रः पवित्रो वा सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा ।
ध्यायेत्पंचनमस्कारं सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥१॥
अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत्परमात्मानं स वाह्याभ्यंतरे शुचिः ॥२॥
अपराजितमंत्रोऽयं सर्वविघ्नविनाशनः ।
मंगलेषु च सर्वेषु प्रथमं मंगलं मतः ॥३॥
एसो पंचणमोयारो सव्वपावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होइ मंगलं ॥४॥
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्मवाचकं परमेष्ठिनः ।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहं ॥५॥
कर्माष्टकविनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मीनिकेतनं ।
सम्यक्त्वादिगुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहं ॥६॥
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति शाकिनीभूतपन्नगाः ।
विषो निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे ॥७॥

(पुष्पांजलि)

पंचकल्याणक अर्घ

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः ।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे कल्याणमहं यजे ॥१॥

ओं ह्रीं श्रीभगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाणपंचकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

पंचपरमेष्ठी का अर्घ

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः ।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनइष्टमहं यजे ॥२॥

ओं ह्रीं श्री अरहंतसिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

यदि अवकाश हो, तो यहांपर सहस्रनाम पढ़कर दश अर्घ देना चाहिये। नहीं तो नीचे लिखा श्लोक पढ़कर एक अर्घ चढ़ाना चाहिये।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः ।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाम अहं यजे ॥३॥

ओं ह्रीं श्री भगवज्जिनसहस्रनामभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

स्वस्ति मंगल

श्रीमज्जिनेंद्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशं
स्याद्वादनायक-मनंतचतुष्टयार्हम् ।
श्रीमूलसंघसुदृशां सुकृतैकहेतु
जैनेंद्रयज्ञविधिरेष मयाऽभ्यधायि ॥१॥

स्वस्ति त्रिलोकगुरवे जिनपुंगवाय,
स्वस्ति स्वभावमहिमोदयसुस्थिताय ।
स्वस्ति प्रकाशसहजोर्जितदृङ्मयाय,
स्वस्ति प्रसन्नललिताद्भुतवैभवाय ॥२॥
स्वस्त्युच्छलद्विमलबोधसुधाप्लवाय,
स्वस्ति स्वभावपरभावविभासकाय ।
स्वस्ति त्रिलोकविततैकचिदुद्गमाय,
स्वस्ति त्रिकालसकलायतविस्तृताय ॥३॥
द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्ययथानुरूपं,
भावस्य शुद्धिमधिकामधिगंतुकामः ।
आलंबनानि विविधान्यवलंब्य वल्गन्,
भूतार्थयज्ञपुरुषस्य करोमि यज्ञं ॥४॥
अर्हत्पुराणपुरुषोत्तमपावनानि,
वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव ।
अस्मिन् ज्वलद्विमलकेवलबोधवह्नौ,
पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि ॥५॥

श्रों विधियज्ञप्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री वृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअजितः।
श्रीसंभवः स्वस्ति, स्वस्ति, श्रीअभिनंदनः।
श्रीसुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः।
श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः।
श्रीपुष्पदंतः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः।
श्रीश्रेयांन् स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः।
श्रीविमलः स्वस्ति स्वस्ति श्रीअनंतः।
श्रीधर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशांतिः।
श्रीकुंथुः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअरनाथः।
श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः।
श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीनेमिनाथः।
श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः।

(पुष्पांजलि क्षेपण)

इति जिनेन्द्र स्वस्तिमङ्गलविधानं।

नित्याप्रकंपाद्भुतकेवलौघाः स्फुरन्मनःपर्ययशुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञानबलप्रबोधाः स्वस्तिक्रियासुः परमर्षयो नः ॥१॥

यहांसे प्रत्येक श्लोक के अंत में पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिये

कोष्ठस्थधान्योपममेकबीजं संभिन्नसंश्रोतृपदानुसारि ।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः स्वस्तिक्रियासुः परमर्षयो नः ॥२॥
संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादनघ्राणविलोकनानि ।
दिव्यान् मतिज्ञानबलाद्वहंतः स्वस्तिक्रियासुः परमर्षयो नः ॥३॥
प्रज्ञाप्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः प्रत्येकबुद्धा दशसर्वपूर्वैः ।
प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्तविज्ञाः स्वस्तिक्रियासुः परमर्षयो नः ॥४॥
जंघावलिश्रेणिफलांबुतंतुप्रसूनबीजांकुरचारणाह्वाः ।
नभोंऽगणस्वैरविहारिणश्च स्वस्तिक्रियासुः परमर्षयो नः ॥५॥
अणिम्नि दक्षाः कुशला महिम्नि लघिम्नि शक्ताः
कृतिनो गरिम्णि ।
मनोवपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्तिक्रियासुः परमर्षयो नः ॥६॥
सकामरूपित्ववशित्वमैश्यं प्राकाम्यमतर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः ।
तथाऽप्रतीघातगुणप्रधानाः स्वस्तिक्रियासुः परमर्षयो नः ॥७॥
दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः ।
ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरंतःस्वस्तिक्रियासुः परमर्षयो नः ॥८॥
आमर्षसर्वौषधयस्तथाशीर्विषंविषादृष्टिविषंविषाश्च ।
सखिल्ल विड् जल्लमलौषधीशाः स्वस्तिक्रियासुः परमर्षयो नः ॥९॥
क्षीरं स्रवंतोऽत्र घृतं स्रवंतो मधुस्रवंतोऽप्यमृतं स्रवंतः ।
अक्षीणसंवासमहानसाश्च स्वस्तिक्रियासुः परमर्षयो नः ॥१०॥

इति परमर्षिस्वस्तिमंगलविधानं ।

देवशास्त्रगुरु भाषा पूजा

अडिल्लछन्द।

प्रथम देव अरहंत सुश्रुत सिद्धांतजू।
गुरुनिरग्रंथ महन्त मुकतिपुरपंथ जू॥
तीन रतन जगमांहि सो ये भवि ध्याइये।
तिनकी भक्तिप्रसाद परमपद पाइये॥१॥

दोहा —

पूजौं पद अरहंतके पूजौं गुरुपद सार।
पूजौं देवी सरस्वती, नितप्रति अष्टप्रकार॥१॥

ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह! अत्रावतरावतर, संवौषट् आह्वाननं। ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठः ठः स्थापनं। ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

गीता छन्द।

सुरपति उरगनरनाथ तिनकर, बन्दनीक सुपदप्रभा।
अति शोभनीक सुवरण उज्वल, देखि छवि मोहित सभा॥
वर नीर क्षीरसमुद्रघटभरि अग्रतसु बहुविधि नचूं।
अरहंत श्रुतसिद्धांत गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूं॥१॥

दोहा—

मलिन वस्तु हरलेत सब, जल स्वभाव मलछीन ।
जासों पूजों परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ॥१॥

ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्व०॥५॥

जे त्रिजग उदर मँझार प्राणी तपत अति दुद्धर खरे ।
तिन अहितहरन सुवचन जिनके, परम शीतलता भरे ॥
तसु भ्रमर लोभित घ्राण पावन सरस चंदन घसि सचूं ।
अरहंत श्रुतसिद्धांत गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूं ॥१॥

दोहा—

चंदन शीतलता करै, तपत वस्तु परवीन ।
जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ॥२॥

ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्व ॥२॥

यह भवसमुद्र अपार तारण,-के निमित्त सुविधि ठई ।
अति दृढ़ परमपावन जथारथ भक्ति वर नौका सही ॥
उज्वल अखंडित सालि तंदुल पुंज धरि त्रयगुण जचूं ।
अरहंत श्रुतसिद्धांत गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूं ॥१॥

दोहा—

तंदुल सालि सुगंध अति, परम अखंडित बीन ।
जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ॥३॥

ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्निर्वपामीति स्वाहा ॥

जे विनयवंत सुभव्य उर अंबुजप्रकाशन भान हैं ।
जे एक मुख चारित्र भाषत त्रिजगमाहिं प्रधान हैं ॥

लहि कुंद कमलादिक पहुप, भव भव कुवेदनसों बचूं ।
अरहंत श्रुतसिद्धांत गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूं ।१।।

दोहा—

विविधभांति परिमलसुमन, भ्रमर जास आधीन ।
जासों पूजौं परमपद देव शास्त्र गुरु तीन ।४।।

ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व० ।।४।।

अतिसबल मदकंदर्प जाको क्षुधाउरग अमान है ।
दुस्सह भयानक तासु नाशनको सु गरुड़ समान है ।।
उत्तम छहों रसयुक्त नित, नैवेद्य करि घृतमें पचूं ।
अरहंत श्रुतसिद्धांत गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूं ।।१।।

दोहा—

नानाविधि संयुक्तरस, व्यंजनसरस नवीन ।
जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ।।५।।

ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व० ।।५।।

जे त्रिजगउद्यम नाश कीने, मोहतिमिर महाबली ।
तिहिं कर्मघाती ज्ञानदीपप्रकाशजोतिप्रभावली ।।
इह भांति दीप प्रजाल कंचनके सुभाजनमें खचूं ।
अरहंत श्रुतसिद्धांत गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूं ।।१।।

दोहा—

स्वपरप्रकाशक जोति अति, दीपक तमकरि हीन ।
जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ।।६।।

ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्व० ॥६॥

जो कर्म-ईंधन दहन अग्निसमूह सम उद्धत लसै।
वर धूप तासु सुगंधताकरि, सकल परिमलता हंसै॥
इहभांति धूप चढ़ाय नित भवज्वलनमाहिं नहीं पचूं।
अरहंत श्रुतसिद्धांत गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूं ॥१॥

दोहा—

अग्निमांहि परिमलदहन, चंदनादि गुणलीन।
जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ॥७॥

ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्योऽष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्व० ॥७॥

लोचन सुरसना घ्रान उर, उत्साहके करतार हैं।
मो पै न उपमा जाय वरणी, सकलफल गुणसार हैं॥
सो फल चढ़ावत अर्थपूरन, परम अमृतरस सचूं।
अरहंत श्रुतसिद्धांत गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूं ॥१॥

दोहा—

जे प्रधान फल फलविषैं, पंचकरण-रस लीन।
जासों पूजौं परमपद, देवशास्त्र गुरु तीन ॥८॥

ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा॥

जल परम उज्वल गंध अक्षत, पुष्प चरु दीपक धरूं।
वर धूप निरमल फल विविध, बहु जनम के पातक हरूं॥
इहि भांति अर्घ चढ़ाय नित भवि करत शिवपंकति मचूं।
अरहंत श्रुतसिद्धांत गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूं ॥१॥

दोहा—

वसुविधि अर्घ संयोजके, अति उछाह मन कीन ।
जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ॥९॥

ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्योऽनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ जयमाला ।

देवशास्त्रगुरु रतन शुभ, तीन रतन करतार ।
भिन्न भिन्न कहुँ आरती, अल्प सुगुण विस्तार ॥

पद्धरि छन्द ।

कर्मनकी त्रेसठ प्रकृति नाशि,
जीते अष्टादशदोषराशि ।
जे परम सुगुण हैं अनंत धीर,
कहवतके छयालिस गुण गँभीर ॥२॥
शुभ समवशरण शोभा अपार,
शतइंद्र नमत कर सीस धार ।
देवाधिदेव अरहंत देव,
बंदौं मनवचतन करि सु सेव ॥३॥
जिनकी ध्वनि ह्वै ओंकाररूप,
निर-अक्षरमय महिमा अनूप ।

दश अष्ट महाभाषा समेत,
लघुभाषा सात शतक सुचेत ॥४॥
सो स्याद्वादमय सप्तभंग,
गणधर गूंथे बारह सुअंग।
रवि शशि न हरैं सो तम हराय,
सो शास्त्र नमों बहु प्रीति ल्याय ॥५॥
गुरु आचारज उवझाय साधु,
तन गमन रतनत्रयनिधि अगाध।
संसारदेह वैराग्य धार,
निरवांछि तपैं शिवपद निहार ॥६॥
गुण छत्तिस पच्चिस आठबीस,
भवतारन तरन जिहाज ईस।
गुरु की महिमा वरनी न जाय,
गुरुनाम जपों मनवचनकाय ॥७॥

सोरठा—

कीजै शक्ति प्रमान, शक्ति बिना सरधा धरै।
द्यानत सरधावान, अजर अमरपद भोगवै ॥८॥

ओं ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा—

श्री जिनके परसाद तैं सुखी रहैं सब जीव ।
यातैं तन मन वचन तैं सेवो भव्य सदीव ॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

तीस चौबीसीका अर्घ

द्रव्य आठों जु लीना है, अर्घ करमें नवीना है ।
पूजतां पाप छीना है, भानुमल जोर कीना है ।
दीप अढ़ाई सरस राजै, क्षेत्र दश ताविषै छाजै ।
सातशत बीस जिनराजै, पूजतां पाप सब भाजै ॥१॥

ओं ह्रीं पांच भरत पांच ऐरावत दश क्षेत्रके विषैं तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनेन्द्रभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

सूचना—आगे जिस भाई को निराकुलता हो, वह नीचे लिखे अनुसार बीस तीर्थंकरोंकी भाषा पूजा करै । यदि स्थिरता न हो तो इस पूजाके आगेमें जो अर्घ लिखा है उसको पढ़कर अर्घ चढ़ा देवे ।

श्रीविदेहक्षेत्र बीस तीर्थंकर पूजा ।

द्वीप अढ़ाई मेरु पन, अरु तीर्थंकर बीस ।
तिन सबकी पूजा करूं, मनवचतन धरि सीस ॥

ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकराः ! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् आह्वाननं। ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकराः ! अत्र तिष्ठत तिष्ठत, ठः ठः स्थापनं। ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकराः ! अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट्, सन्निधिकरणम।

इंद्र फणींद्र नरेंद्र-वंद्य पद निर्मल धारी।
शोभनीक संसार, सारगुण हैं अविकारी॥
क्षीरोदधि सम नीरसों (हो), पूजों तृषा निवार।
सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेह मँझार॥
श्री जिनराज हो भव, तारणतरण जिहाज॥१॥

ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्यो जन्ममृत्युविनाशनाय जलं०
(इस पूजामें बीस पुंज करना हो. तो इस प्रकार मंत्र बोलना)
ओं ह्रीं सीमंधर-युग्मंधर-बाहु-सुबाहु-संजातक-स्वयंप्रभ-ऋषभानन-अनंतवीर्य-सूरप्रभ-विशालकीर्ति-वज्रधर-चंद्रानन-भद्रबाहु-भुजंगम-ईश्वर-नेमिप्रभ-वीरसेन-महाभद्र-देवयशोऽजितवीर्येति विंशतिविद्यमानतीर्थंकरेभ्यो जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

तीनलोकके जीव, पाप आताप सताये।
तिनकों साता दाता, शीतल वचन सुहाये॥
बावन चंदनसों जजूं (हो) भ्रमन-तपन निरवार।
सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेह मँझार॥
श्री जिनराज हो भव, तारणतरण जहाज॥२॥

ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्यो भवतापविनाशनाय चंदनं०
(इसके स्थानमें यदि इच्छा हो, तो बड़ा मंत्र पढ़ें)

यह संसार अपार महासागर जिनस्वामी ।
तातैं तारे बड़ी भक्ति-नौका जगनामी ॥
तंदुल अमल सुगंधसों (हो) पूजों तुम गुणसार ।
सीमंधर जिन आदि दे बीस विदेह मँझार ॥
श्री जिनराज हो भव, तारणतरण जहाज ॥३॥

ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थकरेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०

भविक-सरोज-विकास, निंद्यतमहर रविसे हो ।
यति श्रावक आचार, कथनको, तुमही बड़े हो ॥
फूलसुवास अनेकसों (हो) पूजों मदन प्रहार ।
सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेह मँझार ॥
श्री जिनराज हो भव, तारणतरण जहाज ॥४॥

ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थकरेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं०

काम-नाग विषधाम, नाशको गरुड़ कहे हो ।
क्षुधा महादवज्वाल, तासको मेघ लहे हो ॥
नेवज बहुघृत मिष्टसों (हो) पूजों भूखविडार ।

सीमंधर जिन आदि दे बीस विदेह मँझार ॥
श्री जिनराज हो भव, तारणतरण जिहाज ॥५॥
ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थकरेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं०
उद्यम होन न देत, सर्व जगमांहिं भर्‌यो है।
मोह महातम घोर, नाश परकाश कर्‌यो है ॥
पूजों दीपप्रकाशसों (हो) ज्ञानज्योतिकरतार।
सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेह मँझार ॥
श्री जिनराज हो भव, तारणतरण जिहाज ॥६॥
ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं०
कर्म आठ सब काठ,-भार विस्तार निहारा।
ध्यान अगनि कर प्रकट, सरव कीनों निरवारा ॥
धूप अनूपम खेवतें (हो), दुःख जलें निरधार।
सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेह मँझार ॥
श्री जिनराज हो भव, तारणतरण जिहाज ॥७॥
ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्योऽष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं०
मिथ्यावादी दुष्ट, लोभऽहंकार भरे हैं।
सबको छिनमें जीत जैनके मेरु खरे हैं ॥

फल अतिउत्तमसों जजों (हो) वांछितफलदातार।
सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेह मँझार ॥
श्री जिनराज हो भव, तारणतरण जिहाज ॥८॥

ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व०

जल फल आठों दर्व, अरघकर प्रीति धरी है।
गणधरइंद्रनहूतैं, थुति पूरी न करी है ॥
द्यानत सेवक जानके (हो) जगतैं लेहु निकार।
सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेह मँझार ॥
श्री जिनराज हो भव, तारणतरण जिहाज ॥९॥

ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व०

अथ जयमाला।

सोरठा—ज्ञान सुधाकर चंद, भविकखेतहित मेघ हो।
भ्रमतमभान अमंद, तीर्थंकर बीसों नमों ।

चौपाई १६ मात्रा।

सीमंधर सीमंधर स्वामी, जुगमंधर जुगमंधर नामी ।
बाहु बाहु जिन जगजन तारे, करम सुबाहु बाहुबल दारे ॥१॥
जात सुजातं केवलज्ञानं, स्वयंप्रभू प्रभु स्वयं प्रधानं ।
ऋषभानन ऋषि भानन दोषं, अनंतवीरज वीरजकोषं ॥२॥

सौरीप्रभ सौरीगुणमालं, सुगुण विशाल विशाल दयालं।
वज्रधार भव गिरिवज्जर हैं, चंद्रानन चंद्रानन वर हैं ॥३॥
भद्रबाहु भद्रनिके करता, श्रीभुजंग भुजंगम भरता।
ईश्वर सबके ईश्वर छाजैं, नेमिप्रभु जस नेमि विराजैं ॥४॥
वीरसेन वीरं जग जानैं, महाभद्र महाभद्र बखानैं।
नमों जसोधर जसधरकारी, नमों अजितवीरज बलधारी ॥५॥
धनुष पांचसै काय विराजै, आयु कोडि पूरब सब छाजै।
समवशरण शोभित जिनराजा, भवजलतारनतरन जिहाजा ॥६॥
सम्यक रत्नत्रयनिधिदानी, लोकालोक प्रकाशक ज्ञानी।
शतइन्द्रनिकरि वंदित सोहैं, सुरनर पशु सबके मन मोहैं ॥७॥

दोहा—

तुमको पूजें वंदना, करै धन्य नर सोय।
'द्यानत' सरधा मन धरै, सो भी धरमी होय ॥

ओं ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

विद्यमान बीस तीर्थङ्करोंका अर्घ

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनराजमहं यजे ॥१॥

ओं ह्रीं श्री सीमंधरयुगमंधरबाहुसुबाहुसंजातस्वयंप्रभऋषिभानन अनन्तवीर्य सूर्यप्रभविशालकीर्तिवज्रधरचंद्रानन भद्रबाहु-भुजंगमईश्वरनेमिप्रभवीरसेनमहाभद्रदेवयशअजितवीर्येति विंशति-विद्यमानतीर्थङ्करेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत्रिम चैत्यालयोंके अर्घ

कृत्याकृत्रिमचारुचैत्यनिलयान् नित्यं त्रिलोकींगतान्,
वंदे भावनव्यंतरद्युतिवरस्वर्गामरावासगान् ।
सद्गंधाक्षतपुष्पदामचरुकैः सद्दीपधूपैः फलै,
र्नीराद्यैश्च यजे प्रणम्य शिरसा दुष्कर्मणां शांतये ॥१॥
ओं ह्रीं कृत्रिमाकृत्रिमचैत्यालयसंबंधिजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्व०
वर्षेषु वर्षांतरपर्वतेषु नंदीश्वरे यानि च मंदरेषु ।
यावंति चैत्यायतनानि लोके सर्वाणि वंदे जिनपुंगवानां ॥२॥
अवनितलगतानां कृत्रिमाकृत्रिमाणां,
वनभवनगतानां दिव्यवैमानिकानां ।
इह मनुजकृतानां देवराजार्चितानां,
जिनवरनिलयानां भावतोऽहं स्मरामि ॥३॥
जंबूधातकिपुष्करार्धवसुधाक्षेत्रत्रये भवाः,
चन्द्रांभोजशिखंडिकण्ठकनकप्रावृड्घना भाजिनाः ॥
सम्यग्ज्ञानचरित्रलक्षणधरा दग्धाष्टकर्मेन्धनाः ।
भूतानागतवर्तमानसमये तेभ्यो जिनेभ्यो नमः ॥४॥
श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ रजतगिरिवरे शाल्मलौ जंबुवृक्षे,
वक्षारे चैत्यवृक्षे रतिकररुचिके कुंडले मानुषांके ।
इष्वाकारांजनाद्रौ दधिमुखशिखरे व्यन्तरे स्वर्गलोके,
ज्योतिर्लोकेऽभिवंदे भुवनमहितले यानि चैत्यालयानि ॥५॥

द्वौ कुंदेंदुतुषारहारधवलौ द्वाविंद्रनीलप्रभौ,
द्वौ बंधूकसमप्रभौ जिनवृषौ द्वौ च प्रियंगुप्रभौ।
शेषाः षोडश जन्ममृत्युरहिताः संतप्तहेमप्रभाः,
ते संज्ञानदिवाकराः सुरनुताः सिद्धिं प्रयच्छंतु नः ॥६॥

ओं ह्रीं त्रिलोकसंबंधि-कृत्याकृत्रिमचैत्यालयेभ्योऽर्घ्यं निर्व०

(इच्छामि भक्ति बोलते समय पुष्पांजलि क्षेपण करना।)

इच्छामि भंते चेइयभत्ति काओसग्गो कओ तस्सालोचेओ अहलोय तिरियलोय उड्ढलोयम्मि किट्टिमाकिट्टिमाणि जाणि जिणचेइयाणि ताणि सव्वाणि,
तीसुवि लोयेसु भवणवासिय वाणविंतरजोयसियकप्पवासियत्ति चउविहा देवाः सपरिवारा दिव्वेण गंधेण दिव्वेण पुप्फेण दिव्वेण धुव्वेण दिव्वेण चुण्णेण दिव्वेण वासेण दिव्वेण ह्राणेण णिच्चकालं अच्चंति पुज्जंति वंदंति णमस्संति।
अहमवि इहसंतो तत्थसंताइ णिच्चकालं अच्चेमि पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं॥

अथ पौर्वाह्निक-माध्यान्हिक-आपराह्निकदेववंदनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावंदनास्तवसमेतं श्रीपंचमहागुरुभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम्॥

(इत्याशीर्वादः । पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरीयाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।
तावकायं पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि।

(यहां पर नौ बार णमोकार मंत्र जपना चाहिये)

अथ सिद्धपूजा

ऊर्ध्वाधोरयुतं सबिंदु सपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितं।
वर्गापूरितदिग्गतांबुजदलं तत्संधितत्त्वान्वितं॥
अंतःपत्रतटेष्वनाहतयुतं ह्रींकार-संवेष्टितं।
देवं ध्यायति यः स मुक्तिसुभगो वैरीभकंठीरवः॥

ओं ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपते! सिद्धपरमेष्ठिन! अत्र अवतर अवतर संवौषट्! ओं ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपते! सिद्धपरमेष्ठिन! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ओं ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपते! सिद्ध-परमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

निरस्तकर्मसंबंधं, सूक्ष्मं नित्यं निरामयम्।
वन्देऽहं परमात्मानममूर्त्तमनुपद्रवम् ॥१॥

(यहां सिद्धयंत्रकी स्थापना करना)

जिनको बिना द्रव्य चढ़ाये भाव पूजा करना हो, वे आगे भावाष्टक छपा है, उसको बोलकर करें। अष्टद्रव्यसे पूजा करने वालों को भावपूजा का अष्टक नहीं बोलना चाहिये।

द्रव्याष्टक।

सिद्धौ निवासमनुगं परमात्मगम्यं,
हान्यादि-भावरहितं भववीतकायं।
रेवापगावरसरोयमुनोद्भवानां,
नीरैर्यजे कलशगैर्वरसिद्धचक्रं ॥१॥

ओं ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने जन्ममृत्युविनाशनाय जलं०

आनंदकंदजनकं घनकर्ममुक्तं,
सम्यक्त्वशर्मगरिमं जननार्तिवीतं।
सौरभ्यवासितभुवं हरिचंदनानां,
गंधैर्यजे परिमलैर्वरसिद्धचक्रम् ॥२॥

ओं ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने संसारतापविनाशनाय चं०

सर्वावगाहनगुणं सुसमाधिनिष्ठं,
सिद्धं स्वरूपनिपुणं कमलं विशालं।
सौगंध्यशालिवनशालिवराक्षतानां,
पुंजैर्यजे शशिनिभैर्वरसिद्धचक्रम् ॥३॥

ओं ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं०

नित्यं स्वदेहपरिमाणमनादिसंज्ञं,
द्रव्यानपेक्षममृतं मरणाद्यतीतम्।
मंदारकुंदकमलादिवनस्पतीनां,
पुष्पैर्यजे शुभतमैर्वरसिद्धचक्रम् ॥४॥

ओं ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं०

ऊर्ध्वस्वभावगमनं सुमनोव्यपेतं,
ब्रह्मादिबीजसहितं गगनावभासम् ।
क्षीरान्नसाज्यवटकै रसपूर्णगर्भै
र्नित्यं यजे चरुवरैर्वरसिद्धचक्रम् ॥५॥

ओं ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं

आतंकशोकभयरोगमदप्रशांतं-
निर्द्वंद्वभावधरणं महिमानिवेशं ।
कर्पूरवर्तिबहुभिः कनकावदातै
र्दीपैर्यजे रुचिवरैर्वरसिद्धचक्रम् ॥६॥

ओं ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मोहांधकारविनाशनाय दीपं

पश्यन्समस्तभुवनं युगपन्नितांतं
त्रैकाल्यवस्तुविषये निविडप्रदीपम् ।
सद्द्रव्यगंधघनसारविमिश्रितानां
धूपैर्यजे परिमलैर्वरसिद्धचक्रम् ॥७॥

ओं ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अष्टकर्मदहनाय धूपं०

सिद्धासुरादिपतियक्षनरेंद्रचक्रै,
र्ध्येयं शिवं सकलभव्यजनैः सुवंद्यं ।

नारिंगपूगकदलीफलनारिकेलैः
सोऽहं यजे वरफलैर्वरसिद्धचक्रम् ॥८॥

ओं ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मोक्षफलप्राप्तये फलं।

गंधाढ्यं सुपयोमधुव्रतगणैः संगं वरं चंदनं,
पुष्पौघं विमलं सदक्षतचयं रम्यं चरुं दीपकं।
धूपं गंधयुतं ददामि विविधं श्रेष्ठं फलं लब्धये,
सिद्धानां युगपत्क्रमाय विमलं सेनोत्तरं वांछितं॥

ओं ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीति

ज्ञानोपयोगविमलं विशदात्मरूपं,
सूक्ष्मस्वभावपरमं यदनंतवीर्यं।
कर्मौघकक्षदहनं सुखशस्यवीजं,
वंदे सदा निरुपमं वरसिद्धचक्रम्॥१०॥

ओं ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने महार्घं निर्व० स्वाहा॥

त्रैलोक्येश्वरवंदनीयचरणाः प्रापुः श्रियं शाश्वतीं
यानाराध्य निरुद्धचंडमनसः संतोऽपि तीर्थंकराः।
सत्सम्यक्त्वविबोधवीर्यविशदाऽव्याबाधताद्यैर्गुणै
र्युक्तांस्तानिह तोष्टवीमि सततं सिद्धान्वि-
शुद्धोदयान्॥ (पुष्पांजलिं)

अथ जयमाला ।

विराग सनातन शांत निरंश ।
निरामय निर्भय निर्मल हंस ॥
सुधाम विबोधनिधान विमोह ।
प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥१॥
विदूरित-संसृतिभाव निरंग ।
समामृतपूरित देव विसंग ॥
अबंध कषाय-विहीन विमोह ।
प्रसीद विशुद्धसुसिद्धसमूह ॥२॥
निवारितदुष्कृतकर्मविपाश ।
सदामल केवलकेलिनिवास ॥
भवोदधिपारग शान्त विमोह ।
प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥३॥
अनंतसुखामृतसागर धीर ।
कलङ्करजोमलभूरिसमीर ॥
विखंडितकाम विराम विमोह ।
प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥४॥

विकार-विवर्जित तर्जितशोक ।
विबोधसुनेत्रविलोकितलोक ॥
विहार विराव विरंग विमोह ।
प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥५॥

रजोमलखेदविमुक्त विगात्र ।
निरंतर नित्य सुखामृतपात्र ॥
सुदर्शनराजित नाथ विमोह ।
प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥६॥

नरामरवंदित निर्मल भाव ।
अनंत मुनीश्वरपूज्य विहाव ॥
सदोदय विश्वमहेश विमोह ।
प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥७॥

विदंभ वितृष्ण विदोष विनिद्र ।
परापर शंकर सार वितंद्र ॥
विकोप विरूप विशंक विमोह ।
प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥८॥

जरामरणोज्झित वीतविहार ।
विचिंतित निर्मल निरहंकार ॥
अचिंत्यचरित्र विदर्प विमोह ।
प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥९॥
विवर्ण विगंध विमान विलोभ ।
विमाय विकाय विशब्द विशोभ ॥
अनाकुल केवल सर्व विमोह ।
प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥१०॥
असमसमयसारं चारुचैतन्यचिह्नं,
परपरणतिमुक्तं पद्मनंदींद्रवंद्यं ।
निखिलगुणनिकेतं सिद्धचक्रं विशुद्धं,
स्मरति नमति यो वा स्तौति सोऽभ्येति मुक्तिं ॥११॥

ओं ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथाशीर्वादः । अडिल्लछन्द ।

अविनाशी अविकार परमरसधाम हो,
समाधान सर्वज्ञ सहज अभिराम हो ।

शुद्धबोध अविरुद्ध अनादि अनंत हो,
जगत शिरोमणि सिद्ध सदा जयवंत हो ॥१॥
ध्यान-अगनिकर कर्म कलंक सबै दहे,
नित्य निरंजनदेव सरूपी ह्वै रहे।
ज्ञायकके आकार ममत्वनिवारिकैं,
सो परमातम सिद्ध नमूं सिर नायके ॥२॥

दोहा—

अविचलज्ञान प्रकाशतैं, गुण अनंत की खान।
ध्यान धरैं सो पाइये, परमसिद्ध भगवान ॥३॥
अविनाशी आनन्दमय, गुणपूरण भगवान।
शक्ति हिये परमातमा, सकल पदारथज्ञान ॥४॥

इत्याशीर्वादः।

सिद्धपूजाका भावाष्टक तथा भाषा द्रव्याष्टक।

निजमनोमणिभाजनभारया, समरसैकसुधारसधारया।
सकलबोधकलारमणीयकं, सहजसिद्धमहं परिपूजये॥

मोहि तृषा दुख देत, सो तुमने जीती प्रभू।
जलसे पूजूं मैं तोय, मेरो रोग निवारियो॥

ओं ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिने (सम्यक्त्व, णाण, दंसण, वीर्यत्व, सुहमत्त, अवगाहनत्व, अगुरुलघुत्व, अव्याबाधत्व अष्टगुणसहिताय) जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सहजकर्मकलंकविनाशनैरमलभावसुवासितचन्दनैः।
अनुपमानगुणावलिनायकं सहजसिद्धमहं परिपूजये॥

हम भव आतप के मांहिं, तुम न्यारे संसारसे।
कीज्यो शीतल छांह, चन्दनसे पूजा करूं॥ चन्दनं

सहजभावसुनिर्मलतंदुलैः, सकलदोषविशालविशोधनैः।
अनुपरोधसुबोधनिधानकं, सहजसिद्धमहं परिपूजये॥

हम अवगुण समुदाय, तुम अक्षयगुणके भरे।
पूजूं अक्षतल्याय, दोष नाश गुण कीजियो॥ अक्षतं

समयसारसुपुष्पसुमालया, सहजकर्मकरेण विशोधया।
परमयोगबलेन वशीकृतं, सहजसिद्धमहं परिपूजये॥

काम अग्नि है मोहि, निश्चय शीलस्वभाव तुम।
फूल चढ़ाऊं मैं तोय, मेरो रोग निवारियो॥ पुष्पं

अकृतबोधसुदिव्यनैवेद्यकैर्विहितजातजरामरणांतकैः।
निरवधिप्रचुरात्मगुणालयं, सहजसिद्धमहं परिपूजये॥

मोहि क्षुधा दुख भूर, ध्यान खड्ग करि तुम हती।
मेरी बाधा चूर, नेवजसे पूजा करूं ॥ नैवेद्यं

सहजरत्नरुचिप्रतिदीपकैः. रुचिविभूतितमःप्रविनाशनैः।
निरवधिस्वविकासप्रकाशनैः सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥

मोह तिमिर हम पास, तुम पै चेतन ज्योति है।
पूजों दीप प्रकाश, मेरो तम निरवारियो ॥ दीपं

निजगुणाक्षयरूपसुधूपनैः. स्वगुणघातिमलप्रविनाशनैः।
विशदबोधसुदीर्घसुखात्मकं, सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥

अष्टकर्म वन जाल, मुक्ति माहिं स्वामी सुख करो।
खेऊं धूप रसाल, अष्ट कर्म निरवारियो ॥ धूपं

परमभावफलावलिसम्पदा. सहजभावकुभावविशोधया।
निजगुणास्फुरणात्मनिरंजनं. सहजसिद्धमहं परिपूजये ॥

अन्तराय दुख टाल, तुम अनन्त थिरता लही।
पूजूं फल दरशाय, विघ्न टाल शिवफल करो ॥ फलं

नेत्रोन्मीलिविकासभावनिवहैरत्यन्तबोधाय वै.
वार्गंधाक्षतपुष्पदामचरुकैः सद्दीपधूपैः फलैः।
यश्चिन्तामणिशुद्धभावपरमज्ञानात्मकैरर्चयेत्.
सिद्धं स्वादुमगाधबोधमचलं सञ्चर्चयामो वयं ॥९॥

हममैं आठों ही दोष, जजहुं अर्घले सिद्धजी।
दीज्यो वसु गुण मोय, करजोड़े सेवक खड़ा ॥ अर्घं

सोलह कारणका अर्घ

जल फल आठों द्रव्य चढ़ाय,
'द्यानत' वरत करों मन लाय।
परम गुरु हो,
जय जय नाथ परम गुरु हो॥
दरश विशुद्धि भावना भाय,
सोलह तीर्थंकर पददाय।
परम गुरु हो,
जय जय नाथ परम गुरु हो॥१॥

ओं ह्रीं दर्शनविशुद्धि, विनयसम्पन्नता, शीलव्रतेष्वनतीचार, अभीक्ष्णज्ञानोपयोग, संवेग, शक्तितस्त्याग, शक्तितस्तप, साधु-समाधि, वैयावृत्यकरण, अर्हतभक्ति आचार्यभक्ति, बहुश्रुतभक्ति, प्रवचनभक्ति, आवश्यकापरिहानि, मार्गप्रभावना, प्रवचनवात्सल्य षोडशकारणेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥५॥

पंचमेरुका अर्घ

आठ दरवमय अर्घ बनाय,
द्यानत पूजौं श्री जिनराय।

महा सुख होय,
देखे नाथ परम सुख होय ॥
पांचों मेरु असी जिन धाम,
सब प्रतिमाको करों प्रणाम ।
महा सुख होय,
देखे नाथ परम सुख होय ॥२॥

ओं ह्रीं पंचमेरुसंबंधि अस्सी जिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

नंदीश्वर द्वीपका अर्घ

यह अरघ कियो निज हेत तुमको अरपत हों,
द्यानत कीनों शिव खेत भूमि समरपतु हों ॥
नंदीश्वर श्रीजिनधाम बावन पुंज करों ।
वसु दिन प्रतिमा अभिराम आनंद भाव धरों ॥३॥

ओं ह्रीं नंदीश्वर द्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणे द्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति०

दश लक्षण धर्मका अर्घ

आठों द्रव्य संवार, द्यानत अधिक उछाह सों ।
भवआताप निवार, दशलक्षण पूजों सदा ॥४॥

ओं ह्रीं उत्तमक्षमा मार्दव. आर्जव. सत्य. शौच. संयम. तप, त्याग. आकिंचन. ब्रह्मचर्य दशलक्षणधर्मेभ्योऽर्घं निर्वपामीति०

रत्नत्रयका अर्घ

आठ द्रव्य निरधार, उत्तमसों उत्तम लिये।
जन्म रोग निरवार, सम्यकरतनत्रय भजों॥५॥

ओं ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शनाय. अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय त्रयोदश प्रकार सम्यकचारित्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥

समुच्चयचौबीसी पूजा

वृषभ अजित संभव अभिनंदन
सुमति पद्म सुपास जिनराय।
चंद पुहुप शीतल श्रेयांस नमि,
वासुपूज्य पूजितसुरराय॥
विमल अनंत धर्म जस उज्वल,
शांति कुंथु अर मल्लि मनाय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्वप्रभु,
वर्द्धमान पद पुष्प चढ़ाय॥१॥

ओं ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरांतचतुर्विंशतिजिनसमूह! अत्र अवतर अवतर, संवौषट् आह्वाननं। ओं ह्रीं श्रीवृषभादिमहावीरांतचतुर्विंशतिजिनसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठः ठः स्थापनं। ओं ह्रीं श्री वृषभादिमहावीरांतचतुर्विंशतिजिनसमूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्, सन्निधिकरणम्।

मुनिमनसम उज्वल नीर, प्रासुक गंध भरा।
भरि कनककटोरी धीर दीनी धार धरा॥
चौबीसों श्रीजिनचंद, आनंदकंद सही।
पद जजत हरत भवफंद, पावत मोक्षमही॥२॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो जन्ममृत्युविनाशनाय जलं०

गोशीरकपूर मिलाय, केशर रंगभरी।
जिन चरनन देत चढ़ाय, भवआताप हरी।
चौबीसों श्रीजिनचंद, आनंदकंद सही।
पद जजत हरत भवफंद, पावत मोक्षमही॥३॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो भवातापविनाशनाय चंदनं०

तंदुल सित सोमसमान, सुंदर अनियारे।
मुकता-फलकी उनमान, पुंज धरों प्यारे॥
चौबीसों श्रीजिनचंद, आनंदकंद सही।
पद जजत हरत भवफंद, पावत मोक्षमही॥४॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०

वरकंज कदंब कुरंड सुमन सुगंध भरे ।
जिन अग्र धरों गुनमंड, कामकलंक हरे ॥
चौबीसों श्रीजिनचंद, आनंदकंद सही ।
पद जजत हरत भवफंद, पावत मोक्षमही ॥५॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०

मनमोहन मोदक आदि, सुंदर सद्य बने ।
रसपूरित प्रासुक स्वाद, जजत क्षुधादि हने ॥
चौबीसों श्रीजिनचंद, आनन्दकन्द सही ।
पद जजत हरत भवफन्द, पावत मोक्षमही ॥६॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०

तमखंडन दीप जगाय, धारों तुम आगें ।
सब तिमिरमोह क्षयजाय, ज्ञानकला जागै ॥
चौबीसों श्रीजिनचन्द, आनन्द कन्द सही ।
पद जजत हरत भवफन्द, पावत मोक्षमही ॥७॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि०

दशगंध हुताशनमांहि, हे प्रभु खेवत हों ।
मिस धूमकरम जरिजाहिं, तुमपद सेवत हों ॥
चौवीसों श्रीजिनचंद, आनंदकंद सही ।
पद जजत हरत भवफंद, पावत मोक्षमही ॥८॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं नि० ॥७॥

शुचि पक्व सुरसफल सार, सब ऋतुके ल्यायो ।
देखत दृगमनको प्यार, पूजत सुख पायो ॥
चौवीसों श्रीजिनचंद, आनंदकंद सही ।
पद जजत हरत भवफंद, पावत मोक्षमही ॥९॥

ओं ह्रीं श्रीऋषभादिवीरांतेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व० ॥८॥

जलफल आठों शुचिसार, ताको अर्घ करों ।
तुम को अरपों भवतार, भवतरि मोक्ष वरों ॥
चौवीसों श्रीजिनचन्द, आनन्दकन्द सही ।
पद जजत हरत भवफंद, पावत मोक्षमही ॥१०॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व०

जयमाला । दोहा—

श्रीमत तीरथनाथपद, माथ नाय हित हेत ।
गाऊं गुणमाला अवै, अजर अमरपद देत ॥१॥

घत्ता।

जय भवतमभंजन जनमनकंजन,
रंजन दिनमनि स्वच्छ करा।
शिवमगपरकाशक अरिगननाशक,
चौबीसों जिनराज वरा ॥२॥

पद्धरि छन्द।

जय ऋषभदेव ऋषिगन नमंत,
जय अजित जीत वसुअरि तुरंत।
जय संभव भवभय करत चूर,
जय अभिनंदन आनंद पूर ॥३॥
जय सुमति सुमतिदायक दयाल,
जय पद्म पद्मदुतितन रसाल।
जय जय सुपास भवपास नाश,
जय चंद चंद तनदुतिप्रकाश ॥४॥
जय पुष्पदंत दुतिदंत सेत,
जय शीतल शीतलगुन-निकेत।

जय श्रेयनाथ नुतसहसभुज्ज,
जय वासवपूजित वासुपुज्ज ॥५॥
जय विमल विमलपद-देनहार,
जय जय अनंत गुनगन अपार ।
जय धर्म धर्म शिवशर्म देत,
जय शांति शांति पुष्टी करेत ॥६॥
जय कुंथु कुंथुवादिक रखेय,
जय अर जिन वसु अरि क्षय करेय ।
जय मल्लि मल्ल हत मोहमल्ल,
जय मुनिसुव्रत व्रतशल्ल दल्ल ॥७॥
जय नमि नित वासवनुत सपेम,
जय नेमिनाथ वृषचक्र नेम ।
जय पारसनाथ अनाथनाथ,
जय वर्द्धमान शिवनगर साथ ॥८॥

छन्द घत्तानंद

चौबीस जिनंदा आनंदकंदा पापनिकंदा सुखकारी।

तिनपदजुगचंदा उदय अमंदा,
वासव वंदा हितधारी ॥९॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेभ्यो महार्घं निर्व० स्वाहा ॥

सोरठा—

भुक्ति मुक्ति दातार, चौवीसों जिनराजवर।
तिनपद मनवचधार, जो पूजै सो शिव लहै ॥

(इत्याशीर्वादः। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत)

निर्वाणक्षेत्र पूजा

सोरठा—

परम पूज्य चौवीस, जिहँ जिहँ थानक शिव गये।
सिद्धभूमि निशदीस, मनवचतन पूजा करौं ॥१॥

ओं ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थङ्करनिर्वाणक्षेत्राणि! अत्र अवतरत अवतरत, संवौषट् आह्वाननं। ओं ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्राणि! अत्र तिष्ठत तिष्ठत, ठः ठः स्थापनं। ओं ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्राणि! अत्र मम सन्निहितानि भवत भवत वषट् सन्निधिकरणं।

गीता छन्द।

शुचि क्षीरदधि सम नीर निरमल,
कनकझारी में भरौं।

संसार पार उतार स्वामी,
जोरकर विनती करों ॥
सम्मेदगिरि गिरनार चंपा,
पावापुरि कैलासकों ।
पूजों सदा चौवीसजिननिर्वाण-
भूमि निवासकों ॥१॥

ओं ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो जलं निर्व० स्वाहा ॥

केशर कपूर सुगंध चंदन सलिल शीतल विस्तरों,
भवतापको संताप मेटो, जोरकर विनती करों ॥
सम्मेदगिरि गिरनारि चंपा,
पावापुरि कैलासकों ।
पूजों सदा चौवीसजिन निर्वाण-
भूमि निवासकों ॥२॥

ओं ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो चंदनं नि० ॥२॥

मोतीसमान अखंड तंदुल,
अमल आनंद धरि तरों ।

औगुन हरौ गुन करौ हमको,
जोरकर विनती करों ॥
सम्मेदगिरि गिरनार चंपा,
पावापुरि कैलासकों ।
पूजों सदा चौवीसजिननिर्वाण,
भूमि निवासकों ॥३॥

ओं ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो अक्षतान् नि० ॥३॥

शुभ फूलरास सुवासवासित,
खेद सब मनकी हरों ।
दुखधामकाम विनाश मेरो जोरकर विनती करों ॥
सम्मेदगिरि गिरनार चंपा,
पावापुरि कैलासकों ।
पूजों सदा चौवीसजिननिर्वाण,
भूमि निवासकों ॥४॥

ओं ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः पुष्पं नि० ॥४॥

नेवज अनेक प्रकार जोग,
मनोग धरि भय परिहरों ।

ओं ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यः फलं नि० ॥८॥

जल गंध अच्छत पुष्प चरु फल,
दीप धूपायन धरों ।
'द्यानत' करो निरभय जगतसों,
जोरकर विनती करों ।
सम्मेदगिरि गिरनार चंपा,
पावापुरि कैलासकों ।
पूजों सदा चौबीसजिननिर्वाण
भूमि निवासकों ॥९॥

ओं ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं नि० ॥९॥

अथ जयमाला ।

श्रीचौबीसजिनेश, गिरि कैलाशादिक नमों ।
तीरथ महाप्रदेश, महापुरुष निरवाणतें ॥

चौपाई १६ मात्रा ।

नमों ऋषभ कैलासपहारं, नेमिनाथ गिरनार निहारं ।
वासुपूज्य चंपापुर वंदों, सनमति पावापुर अभिनंदों ॥१॥
वंदों अजितअजितपददाता, वंदों संभव भवदुखघाता ।
वंदों अभिनंदन गणनायक, वंदों सुमति सुमतिके दायक ॥२॥

बंदौं पदमप्रभ मुकति पदमाधर, बंदौं सुपास आशपासाहर ।
बंदौं चंद्रप्रभ प्रभुचंदा, बंदौं सुविधि सुविधिनिधि कंदा ॥३॥
बंदौं शीतल अघतपशीतल, बंदौं श्रेयांस श्रेयांस महीतल ।
बंदौं विमल विमल उपयोगी, बंदौं अनंत अनंत सुखभोगी ॥४॥
बंदौं धर्म धर्म-विस्तारा, बंदौं शांति शांतिमनधारा ।
बंदौं कुंथु कुंथु-रखवालं, बंदौं अर अरिहर गुणमालं ॥५॥
बंदौं मल्लि काममलचूरन, बंदौं मुनिसुव्रत व्रतपूरन ।
बंदौं नमि जिन नमितसुरासर, बंदौं पास पास भ्रमजगहर ॥६॥
बीसों सिद्धभूमि जा ऊपर, शिखर सम्मेद महागिरि भूपर ।
एकबार बंदै जो कोई, ताहि नरकपशुगति नहिं होई ॥७॥
नरगतिनृप सुरशक्र कहावें, तिहुँजग भोग भोगिशिव जावें ।
विघनविनाशक मंगलकारी, गुणविशाल बंदें नरनारी ॥८॥

घत्ता—

जो तीरथ जावें पाप मिटावें, ध्यावें गावें भगति करें ।
ताको जस कहिये संपति लहिये, गिरिके गुण को बुध उचरें ॥९॥
ओं ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थङ्करनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घं नि० ॥१०॥

इत्याशीर्वादः ।

सप्त-ऋषि पूजा

छप्पय ।

प्रथम नाम श्रीमन्व दुतिय स्वरमन्व ऋषीश्वर ।
तीसर मुनि श्रीनिचय सर्वसुन्दर चौथो वर ॥

पंचम श्रीजयवान विनयलालस षष्ठम भनि।
सप्तम जयमित्राख्य सर्व चारित्रधाम गनि॥
ये सातों चारणऋद्धिधर, करूं तासपद थापना।
मैं पूजूं मनवचकायकरि, जो सुख चाहूं आपना॥

ओं ह्रीं चारणऋद्धिधरा श्रीसप्तऋषीश्वरा! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक - गीता छन्द।

शुभतीर्थउद्भव जल अनूपम मिष्ट शीतल लायकैं।
भवतृषा-कंद निकंदकारण, शुद्ध घट भरवायकैं॥
मन्वादिचारणऋद्धिधारक, मुनिन की पूजा करूं।
ता करें पातिक हरें सारे, सकल आनन्द विस्तरूं॥१॥

ओं ह्रीं श्रीमन्व, स्वरमन्व, निचय, सर्वसुन्दर, जयवान, विनयलालस जयमित्र ऋषिभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

श्रीखंड कदलीनंद केशर, मंद मंद घिसायकैं।
तसुगंध प्रसरित दिगादिगंतर, भर कटोरी लायकैं॥
मन्वादिचारणऋद्धिधारक, मुनिन की पूजा करूं।
ता करें पातिक हरें सारे, सकल आनन्द विस्तरूं॥२॥

ओं ह्रीं श्रीमन्वादिचारणऋद्धिधारकसप्तऋषिभ्यः चंदनं नि०

अति धवल अक्षत खण्ड-वर्जित मिष्ट राजन भोगके।
कलधौत थारा भरत सुन्दर चुनित शुभ उपयोगके॥
मन्वादिचारणऋद्धिधारक, मुनिन की पूजा करूं।
ता करें पातिक हरें मारे, सकल आनन्द विस्तरूं॥३॥

ओं ह्रीं श्रीमन्वादिचारणऋद्धिधारकसप्तऋषिभ्यो अक्षतान०

बहुवर्णसुवरण सुमन आछे, अमल कमल गुलावके।
केतकी चंपा चारु मरुआ, चुने निज कर चावके॥
मन्वादिचारणऋद्धिधारक, मुनिन की पूजा करूं।
ता करें पातिक हरें मारे, सकल आनन्द विस्तरूं॥४॥

ओं ह्रीं श्रीमन्वादिचारणऋद्धिधारकसप्तऋषिभ्यः पुष्पं नि०

पकवान नानाभांति चातुर, रचित शुद्ध नये नये।
सदमिष्ट लाडू आदि भर बहु, पुरटके थारा लये॥
मन्वादिचारणऋद्धिधारक, मुनिन की पूजा करूं।
ता करें पातिक हरें मारे, सकल आनन्द विस्तरूं॥५॥

ओं ह्रीं श्रीमन्वादिचारणऋद्धिधारकसप्तऋषिभ्यो नैवेद्यं नि०

कलधौत दीपक जड़ित नाना, भरित गोघृतसारसों।
अति ज्वलितजगमगज्योति जाकी, तिमिरनाशनहारसों॥
मन्वादिचारणऋद्धिधारक, मुनिन की पूजा करूं।
ता करें पातिक हरें मारे, सकल आनन्द विस्तरूं॥६॥

ओं ह्रीं श्रीमन्वादिचारणऋद्धिधारकसप्तऋषिभ्यो दीपं नि०

दिक्‌चक्र गंधित होत जाकर, धूप दशअंगी कही।
सो लाय मनवचकाय-शुद्ध, लगायकर खेऊं सही ॥
मन्त्रादिचारणऋद्धिधारक, मुनिन की पूजा करूं।
ता करें पातिक हरें सारे, सकल आनन्द विस्तरूं ॥७।

ओं ह्रीं श्रीमन्त्रादिचारणऋद्धिधारकसप्तऋषिभ्यो धूपं नि०

वर दाख खारक अमित प्यारे, मिष्ट चुष्ट चुनायकैं।
द्राक्ष्डी दाड़िम चारु पुंगी, थाल भर भर लायकैं ॥
मन्त्रादिचारणऋद्धिधारक, मुनिन की पूजा करूं।
ता करें पातिक हरें सारे, सकल आनन्द विस्तरूं ॥८॥

ओं ह्रीं श्रीमन्त्रादिचारणऋद्धिधारकसप्तऋषिभ्यः फलं नि०

जलगंधअक्षतपुष्पचरुवर, दीप धूप सु लावना।
फल ललित आठों द्रव्यमिश्रित, अर्घ कीजे पावना ॥
मन्वादिचारणऋद्धिधारक, मुनिन की पूजा करूं।
ता करें पातिक हरें सारे, सकल आनन्द विस्तरूं ॥९॥

ओं ह्रीं श्रीमन्वादिचारणऋद्धिधारक सप्तऋषिभ्यो अर्घं नि०

अथ जयमाला। छन्द त्रिभंगी।

वन्दूँ ऋषिराजा, धर्मजहाजा, निजपरकाजा, करत भले।
करुणाके धारी, गगनविहारी, दुख अपहारी, भरम दले ॥
काटत जमफंदा, भविजन वृंदा, करत अनंदा चरणनमें।
जो पूजैं ध्यावैं मंगल गावैं, फेर न आवें भववनमें ॥१॥

छन्द पद्धरी।

जय श्रीमनु मुनिराजा महंत, त्रस थावरकी रक्षा करंत।
जय मिथ्यातम नाशक पतंग, करुणारसपूरित अंग अंग॥२॥
जय श्रीस्वरमनु अकलंकरूप, पदसेव करत नित अमर भूप।
जय पंच अक्ष जीते महान, तप तपत देह कंचनसमान॥३॥
जय निचय सप्त तत्त्वार्थभास, तप-रमातनों तनमें प्रकाश।
जय विषयरोध संबोध भान, परणतिके नाशन अचल ध्यान॥४॥
जय जयहि सर्वसुंदर दयाल, लखि इंद्रजालवत जगतजाल।
जय तृष्णाहारी रमण राम, निज परणतिमें पायो विराम॥५॥
जय आनंदघन कल्याणरूप, कल्याण करत सबको अनूप।
जय मद नाशन जयवान देव, निरमद विचरत सब करत सेव॥६॥
जय जयहि विनयलालस अमान, सब शत्रु मित्र जानत समान।
जय कृशितकाय तपके प्रभाव, छवि छटा उडति आनंद दाय॥७॥
जयमित्र सकल जगके सुमित्र, अनगिनत अधम कीने पवित्र।
जय चंद्रवदन राजीव-नैन, कबहूं विकथा बोलत न बैन॥८॥
जय सातों मुनिवर एकसंग, नित गगन-गमन करते अभंग।
जय आये मथुरापुरमें भार, तहँ मरी रोगको अति प्रचार॥९॥
जय जय तिन चरणनिके प्रसाद, सब मरी देवकृत भई वाद।
जय लोक करै निर्भय समस्त, हम नमत सदा तिन जोड़हस्त॥१०॥

जय ग्रीषमऋतु परवत मँझार, नित करत अतापन योगसार।
जय तृषापरीषह करत जेर, कहुं रंच चलत नहिं मनसुमेर ११॥
जय मूल अठाइस गुणनधार, तप उग्र तपत आनंदकार।
जय वर्षाऋतुमें वृक्षतीर, तहँ अति शीतल झेलत समीर॥१२॥
जय शीतकाल चौपटमँझार, कै नदी सरोवर तट विचार।
जय निवसत ध्यानारूढ़ होय, रंचक नहिं मटकत रोम कोय १३॥
जय मृतकासन वज्रासनीय, गोदूहन इत्यादिक गनीय।
जय आसन नाना भांति धार, उपसर्ग सहत ममता निवार॥१४॥
जय जपत तिहारो नाम कोय, लख पुत्र पौत्र कुलवृद्धि होय।
जय भरे लक्ष अतिशय भंडार, दारिद्र तनों दुख होय छार १५॥
जय चोरअग्निडाकिनपिशाच, अरु ईति भीति सब नसत सांच।
जय तुम सुमरत सुख लहत लोक, सुर असुर नवत पद देत धोक १६

छन्द रोला।

ये सातों मुनिराज, महातप लछमी धारी।
परम पूज्य पद धरें, सकल जगके हितकारी॥
जो मन वच तन शुद्ध होय सेवै औ ध्यावै।
सो जन मनरंगलाल अष्टऋद्धिनकों पावै॥१७॥

दोहा।

नमन करत चरनन परत, अहो गरीब निवाज।
पंच परावर्तननितैं, निरवारो ऋषिराज॥१८॥

ओं ह्रीं श्रीमन्वादिचारणऋद्धिधारकसप्तऋषिभ्यः पूर्णार्घं नि०

व्रतों का अर्घ

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिन गृहे जिनवृत्तमहं यजे ॥१॥

ओं ह्रीं श्रीभगवज्जिनभाषितव्रतेभ्यो अर्घ्यं निर्व० ॥१॥

समुच्चय अर्घ

प्रभूजी अष्ट दरवदरवजु ल्यायो भावसों,
प्रभू थां का हरष हरष गुण गाऊं महाराज।
यो मन हरख्यो प्रभू थांकी पूजा जी रे कारणे ॥
प्रभू जी थांकी तो पूजा भवि जन नित करै,
जाका अशुभ कर्म कट जाय महाराज।
यो मन हरख्यो प्रभू थांकी पूजा जी रे कारणे ॥१॥
प्रभूजी थांकी तो पूजा भवि जीव जो करै,
सो तो सुरग मुकतिपद पावै महाराज।
यो मन हरख्यो प्रभू थांकी पूजा जी रे कारणे ॥२॥
प्रभूजी इन्द्र धरणेंद्रजी सब मिलि गाय,
प्रभू का गुणांको पार न पाइया।
प्रभूजी थे छो जी अनन्ता जी गुणवान,
थांने तो सुमरयां संकट परिहरै।
प्रभूजी थे छो जी साहिब तीनों लोक का,

जिनराय मैं छूं जी निपट अज्ञानी महाराज।
यो मन हरख्यो प्रभू थांकी पूजा जी रे कारणे ॥३॥
प्रभूजी थांका तो रूपजी निरखन कारणे,
सुरपति रचिया छै नयन हजार महाराज।
यो मन हरख्यो प्रभू थांकी पूजा जी रे कारणे ॥४॥
प्रभूजी नरक निगोदमें भव भव मैं रुल्यो,
जिनराय सहिया छै दुःख अपार महाराज।
यो मन हरख्यो प्रभू थांकी पूजा जी रे कारणे ॥५॥
प्रभूजी अब तो शरणोजी थारो मैं लियो,
किस विधि कर पार लगावो महाराज।
यो मन हरख्यो प्रभू थांकी पूजा जी रे कारणे ॥६॥
प्रभूजी म्हारो तो मनड़ो थांमेंजी घुल रह्यो,
ज्यों चकरी बिच रेशमकी डोरी महाराज।
यो मन हरख्यो प्रभू थांकी पूजा जी रे कारणे ॥७॥
प्रभूजी तीन लोक में है जिन-बिम्ब,
कृत्रिम अकृत्रिम चैत्यालय पूजस्यां।
प्रभूजी जल चंदन अक्षत पुष्प नैवेद,
दीप धूप फल अर्घ चढ़ाऊं महाराज,
जिन चैत्यालय महाराज,
सब चैत्यालय जिनराज।

यो मन हरख्यो प्रभू थांकी पूजा जी रे कारणे ॥८॥
प्रभूजी अष्ट दरब जुल्याओ बनाय,
पूजा रचाऊं श्रीभगवान की ॥९॥

ओं ह्रीं भावपूजा भाववंदना त्रिकालपूजा त्रिकालबंदना करै करावै भावना भावै श्रीअरहंतजी सिद्धजी आचार्यजो उपाध्यायजी सर्वसाधुजी पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोगकरणानुयोगचरणानुयोगद्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। दर्शन विशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो नमः। उत्तम क्षमादि दश लाक्षणिक धर्मेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान सम्यक चारित्रेभ्यो नमः। जलके विषै थलके विषै आकाशके विषै गुफाके विषै पहाड़के विषै नगर नगरी विषै ऊर्ध्वलोक मध्यलोक पाताललोक विषै विराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालय जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्रे विद्यमान बीस तीर्थङ्करेभ्यो नमः। पांच भरत पांचऐरावत दशक्षेत्र सम्बन्धी तीस चौबीसीके सातसौ बीस जिनराजेभ्यो नमः। नंदीश्वर द्वीपसम्बन्धि बावन जिन चैत्यालयेभ्यो नमः। पंचमेरु सम्बन्धि अस्सी जिन चैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेद शिखर कैलाश चंपापुर पावापुर गिरनार आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री मूलबद्री राजगृही शत्रुंजय तारंगा चमत्कार महावीर स्वामी आदि अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारण ऋद्धिधारी सप्त परमर्षिभ्यो नमः।

ओं ह्रीं श्रीमंतं भगवन्तं कृपालसन्तं श्रीवृषभादि महावीर पर्यन्त चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बू द्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे········ नाम्नि नगरे मासानामुत्तमे मासे ········मासे शुभे ·· पक्षे शुभ······तिथौ····वासरे

मुनि आर्यिकानां श्रावकश्राविकानां क्षुल्लकक्षुल्लिकानां सकल कर्मं क्षयार्थं (जलधारा) अनर्घपदप्राप्तये महार्घं सम्पूर्णार्घ निर्वपामीति स्वाहा।

भावपूजावंदनास्तवसमेतं श्रीपंचमहागुरुभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम्।

यहां पर कायोत्सर्ग पूर्वक नौ वार णमोकारकार मंत्र जपना चाहिये।

शांतिपाठ भाषा

शांतिपाठ बोलते समय पुष्प क्षेपण करते रहना चाहिये।

चौपाई १६ मात्रा।

शांतिनाथ मुख शशि उनहारी,
शीलगुणव्रत-संयमधारी।
लखन एक सौ आठ विराजैं,
निरखत नयन कमलदल लाजैं ॥१॥
पंचम चक्रवर्ति पदधारी,
सोलम तीर्थंकर सुखकारी।
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य निज नायक,
नमो शांतिहित शान्ति विधायक ॥२॥

दिव्य विटप पुहुपनकी वरषा,
दुन्दुभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामण्डल भारी,
ये तुव प्रातिहार्य मनहारी ॥३॥
शांति जिनेश शांति सुखदाई,
जगतपूज्य पूजों शिरनाई।
परमशांति दीजै हम सबको,
पढ़ैं तिन्हें पुनि चार संघको ॥४॥
पूजैं जिन्हें मुकुट हार किरीट लाके,
इन्द्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके।
सो शांतिनाथ वरवंश जगतप्रदीप,
मेरे लिये करहिं शांति सदा अनूप ॥५॥

इन्द्रवज्रा

संपूजकों को प्रतिपालकों को,
यतीन को औ यतिनायकों को।
राजा प्रजा राष्ट्र सुदेश को ले,
कीजै सुखी हे जिन शांति को दे ॥६॥

स्रग्धरा छन्द।

होवै सारी प्रजाको,
सुख बलयुत हो धर्मधारी नरेशा।
होवै वर्षा समै पै
तिलभर न रहै व्याधियों का अन्देशा।
होवै चोरी न जारी,
सुसमय वरतै हो न दुष्काल भारी।
सारे ही देश धारैं,
जिनवर वृषको जो सदा सौख्यकारी ॥७॥

दोहा—

घातिकर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज।
शांति करें ते जगतमें, वृषभादिक जिनराज ॥८॥

मन्दाक्रान्ता।

शास्त्रों का हो, पठन सुखदा,
लाभ सत्संगती का।
सद्वृत्तों का, सुजस कहके,
दोष ढांकूं सभीका ॥

बोलूं प्यारे वचन हितके,
आप का रूप ध्याऊं ।
तौलौं सेऊं चरण जिनके,
मोक्ष जौ लौं न पाऊं ॥९॥

आर्य्या

तव पद मेरे हियमें,
मम हिय तेरे पुनीत चरणों में ।
तबलौं लीन रहो प्रभु,
जबलौं पाया न मुक्ति पद मैंने ॥१०॥
अक्षर पद मात्रा से,
दूषित जो कछु कहा गया मुझ से ।
क्षमा करो प्रभु सो सब,
करुणा करि पुनि छुड़ाहु भवदुःखसे ॥११॥
हे जगबन्धु जिनेश्वर,
पाऊं तव चरण चरण बलिहारी ।
मरण-समाधि सुदुर्लभ,
कर्मों का क्षय सुबोध सुखकारी ॥१२॥

(परिपुष्पांजलि क्षेपण)

यहां पर नौ बार णमोकार मंत्र जपना चाहिये।

भजन।

नाथ! तोरी पूजाको फल पायो, मेरेयों निश्चय अब आयो।।टेक।।
मेंढ़क कमल पांखड़ी मुखमें, वीर जिनेश्वर धायो,
श्रेणिक गजके पगतल मूवो, तुरत स्वर्गपद पायो।
नाथ! तोरी पूजाको फल पायो, मेरेयों निश्चय अब आयो।।१।।
मैनासुन्दरि शुभमन सेती, सिद्धचक्र गुण गायो,
अपने पतिको कोढ़ गमायो, गंधोदक फल पायो।
नाथ! तोरी पूजाको फल पायो, मेरेयों निश्चय अब आयो।।२।।
अष्टापदमें भरत नरेश्वर, आदिनाथ मन लायो,
अष्टद्रव्य से पूजा कीनी, अवधिज्ञान दरशायो।
नाथ! तोरी पूजाको फल पायो, मेरेयों निश्चय अब आयो।।३।।
अंजनसे सब पापी तारे, मेरो मन हुलसायो,
महिमा मोटी नाथ तुमारी, मुक्तिपुरी सुख पायो।
नाथ! तोरी पूजाको फल पायो, मेरे यों निश्चय अब आयो।।४।।
थकि थकि हारे सुरपति, नरपति आगम सीख जतायो,
देवेंद्रकीर्ति गुरु ज्ञान मनोहर, पूजा ज्ञान बतायो।
नाथ! तोरी पूजाको फल पायो, मेरे यों निश्चय अब आयो।।५।।

भाषा स्तुति।

तुम तरणतारण भवनिवारण, भविकमन आनन्दनो।
श्रीनाभिनन्दन जगतवंदन, आदिनाथ निरंजनो ॥१॥
तुम आदिनाथ अनादि सेऊँ सेय पदपूजा करूं।
कैलाश गिरिपर ऋषभजिनवर, पदकमल हिरदै धरूं ॥२॥
तुम अजितनाथ अजीत जीते, अष्टकर्म महाबली।
यह विरद सुनकर शरण आयो, कृपा कीज्यो नाथजी ॥३॥
तुम चंद्रवदन सु चंद्रलच्छन चंद्रपुरि परमेश्वरो।
महासेननंदन, जगतवंदन चंद्रनाथ जिनेश्वरो ॥४॥
तुम शांति पांचकल्याण पूजों, शुद्धमनवचकाय जू।
दुर्भिक्ष चौरी पापनाशन, विघन जाय पलाय जू ॥५॥
तुम बालब्रह्म विवेकसागर, भव्यकमल विकाशनो।
श्रीनेमिनाथ पवित्र दिनकर, पापतिमिर विनाशनो ॥६॥
जिन तजी राजुल राजकन्या, कामसेन्या वश करी।
चारित्ररथ चढ़ि भये दूलह, जाय शिवरमणी वरी ॥७॥
कंदर्प दर्प सुसर्पलच्छन, कमठ शठ निर्मद कियो।
अश्वसेननंदन जगतवंदन सकलसंघ मंगल कियो ॥८॥
जिनधरी बालकपणे दीक्षा, कमठमानविदारकैं।
श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्रके पद, मैं नमों शिरधारकैं ॥९॥

तुम कर्मघाता मोक्षदाता, दीन जानि दया करो।
सिद्धार्थनंदन जगतवंदन, महावीर जिनेश्वरो ॥१०॥
छत्र तीन सोहैं सुरनर मोहैं, वीनती अब धारिये।
करजोड़ि सेवक वीनवैं प्रभु आवागमन निवारिये ॥११॥
अब होउ भव भव स्वामि मेरे, मैं सदा सेवक रहौं।
करजोड़ यो वरदान मांगूं, मोक्षफल जावत लहौं ॥१२॥
जो एक मांहीं एक राजै एक मांहि अनेकनो।
इक अनेककी नहीं संख्या नमूं सिद्ध निरंजनो ॥१३॥

चौपाई—

मैं तुम चरणकमलगुणगाय, बहुविधि भक्ति करौं मनलाय।
जनम जनम प्रभु पाऊं तोहि, यह सेवाफल दीजै मोहि ॥१४॥
कृपा तिहारी ऐसी होय, जीवन मरन मिटावो मोय।
बारबार मैं विनती करूं, तुम सेयां भवसागर तरूं ॥१५॥
नाम लेत सब दुःख मिटजाय, तुम दर्शन देख्यो प्रभु आय।
तुम हो प्रभु देवनके देव, मैं तो करूं चरण तव सेव ॥१६॥
जिन पूजा तैं सब सुख होय, जिन पूजा सम अवर न कोय।
जिनपूजातैं स्वर्ग विमान, अनुक्रम तैं पावैं निर्वाण ॥१७॥
मैं आयो पूजनके काज, मेरो जन्म सफल भयो आज।
पूजा करके नवाऊं शीश, मुझ अपराध क्षमहु जगदीश ॥१८॥

दोहा।

सुख देना दुख मेटना, यही तुम्हारी बान।
मो गरीबकी बीनती, सुन लीज्यो भगवान ॥१६॥
पूजन करते देवकी, आदि मध्य अवसान।
सुरगन के सुख भोगकर, पावै मोक्ष निदान ॥२०॥
जैसी महिमा तुमविषैं, और धरै नहिं कोय।
जो सूरजमें जोति है, नहिं तारागण सोय ॥२१॥
नाथ तिहारे नामतैं, अघ छिनमांहिं पलाय।
ज्यों दिनकर परकाशतैं, अंधकार विनशाय २२॥
बहुत प्रशंसा क्या करूं, मैं प्रभु बहुत अजान।
पूजाविधि जानूं नहीं, सरन राखि भगवान ॥२३॥

विसर्जन

दोहा।

बिन जाने वा जानके, रही टूट जो कोय।
तुव प्रसाद तैं परमगुरु, सो सब पूरन होय ॥१॥
पूजनविधि जानों नहीं, नहिं जानों आह्वान।
और विसर्जन हू नहीं, क्षमा करो भगवान ॥२॥

मंत्रहीन धनहीन हूँ क्रियाहीन जिनदेव।
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरणकी सेव ॥३॥
आये जो जो देवगन, पूजे भक्ति प्रमान।
ते सब जावहु कृपाकर, अपने अपने थान ॥४॥

इत्याशीर्वादः।

आशिका लेनेका मन्त्र।

दोहा।

श्री जिनवरकी आशिका, लीजे शीस चढ़ाय।
भव भवके पातक कटें, दुःख दूर हो जाय ॥१॥

आरती श्री पार्श्वनाथ स्वामी की।

(चाल, जय जगदीश हरे)

जय पारस देवा स्वामी जय पारस देवा। सुर नर मुनि जन तुव चरणनकी करते नित सेवा ॥टेर॥ पौष वदी ग्यारस काशी में आनन्द अति भारी, स्वामी आनन्द अति भारी। अश्वसेन वामा माता उर लीनो अवतारी ॥ जय० ॥१॥ श्याम वरण नवहस्त काय पग-उरग लखन सोहै, स्वामी उरग लखन सोहै। सुरकृत अति अनूप पट भूषण सबका मन मोहै ॥ जय० ॥२॥ जलते देख नाग नागिनको मंत्र नवकार दिया, स्वामी मंत्र नवकार दिया। हरा कमठका मान ज्ञान का भानु प्रकाश किया ॥जय०॥३॥ मात पिता तुम स्वामी मेरे, आश करूं किसकी, स्वामी! आश करूं

किसकी। तुम बिन दाता और न कोई शरण गहूं जिसकी ॥जय०॥४॥
तुम परमातम तुम अध्यातम तुम अंतरयामी, स्वामी तुम अंतरयामी।
स्वर्ग मोक्षके दाता तुम हो त्रिभुवनके स्वामी ॥ जय० ॥ ५ ॥
दीनबंधु दुखहरण जिनेश्वर! तुम ही हो मेरे, स्वामी तुम ही हो मेरे।
द्यो शिवधामको वास दास, हम द्वार खड़े तेरे ॥ जय० ॥ ६ ॥
विपद विकार मिटाओ मनका अर्ज सुनो दाता, स्वामी अर्ज सुनो दाता।
सेवक द्वयकर जोड़ प्रभूके चरणों चित लाता ॥ जय पारश० ॥७॥

इति।

❀ समाप्त ❀

सोलहकारण पूजा।

अडिल्ल

सोलहकारण भाय तीर्थंकर जे भये,
हरषे इन्द्र अपार मेरुपर ले गये।
पूजा करि निज धन्य लखो बहु चावसों,
हम हूं षोडस कारण भावें भावसों॥

ओं ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणानि अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् आह्वाननं. अत्र तिष्टत तिष्ठत ठः ठः स्थापनं, अत्र मम सन्निहितानि भवत भवत वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकम्।

कंचनझारी निर्मल नीर, पूजूं जिनवर गुणगंभीर,
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।
दरशविशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद पाय,
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।

ओं ह्रीं दर्शनविशुद्धि १. विनयसम्पन्नता २. शीलव्रतेष्वनतीचार ३. अभीक्ष्णज्ञानोपयोग ४. संवेग ५. शक्तितस्त्याग ६, शक्तितस्तप ७, साधुसमाधि ८. वैयावृत्यकरण ९, अर्हद्भक्ति १०. आचार्यभक्ति ११. बहुश्रुतभक्ति १२. प्रवचनभक्ति १३. आवश्यकापरिहाणि १४. मार्गप्रभावना १५. प्रवचनवात्सल्य १६. इति षोडशकारणेभ्यो नमः जलं॥ १॥

चंदन घसों कपूर मिलाय, पूजूं श्रीजिनवरके पांय।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो॥
दरशविशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद पाय,
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो॥ २॥

ओं ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यः चंदनं।

तन्दुल धवल अखंड अनूप, पूजूं जिनवर तिहुं जगभूप।
परमगुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो॥
दरशविशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद पाय,
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो॥ ३॥

ओं ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो अक्षतं नि०

फूल सुगन्ध मधुप गुंजार, पूजूं जिनवर जग आधार।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो॥
दरशविशुद्धि भावना भाय, सोलह, तीर्थंकर पद पाय,
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो॥ ४॥

ओं ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यः पुष्पं०

सद नेवज बहु विधि पकवान, पूजूं श्रीजिनवर गुणखान।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो॥
दरशविशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद पाय,
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो॥ ५॥

ओं ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो नैवद्यं

दीपक ज्योति तिमिर क्षयकार, पूजूं श्रीजिन केवलधार।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥
दरशविशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद पाय,
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥ ६ ॥

ओं ह्रीं दर्शविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो दीपं०

अगर कपूर गन्ध शुभ खेय, श्री जिनवर आगे महकेय।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥
दरशविशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद पाय,
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥ ७ ॥

ओं ह्रीं दर्शविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो धूपं निर्व०

श्रीफल आदि बहुत फल सार, पूजूं जिन वांछितदातार।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥
दरशविशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद पाय,
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं दर्शविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यः फलं निर्व०

जल फल आठों द्रव्य चढ़ाय, 'द्यानत' वरत करों मनलाय।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥
दरशविशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद पाय,
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं दर्शविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो अर्घं०

सोलह अंगों के १६ अर्घ।

सवैया तेईसा

दरशन शुद्ध न होवत जो लग,
तो लग जीव मिथ्याती कहावे।
काल अनंत फिरै भवमें,
महादुःखनको कहुं पार न पावे।
दोष पचीस रहित गुण-अम्बुधि,
सम्यकदर्शन शुद्ध ठरावै।
'ज्ञान' कहे नर सोहि बड़ो,
मिथ्यात्व तजे जिन-मारग ध्यावै॥

ओं ह्रीं दर्शनविशुद्धिभावनायै नमः अर्घं॥ १॥

देव तथा गुरुराय तथा,
तप संयम शील व्रतादिक-धारी।
पापके हारक कामके क्षारक,
शल्य-निवारक कर्म-निवारी।
धर्मके धीर कषायके भेदक,
पंच प्रकार संसारके तारी।

'ज्ञान' कहे विनयो सुखकारक,
भाव धरो मन राखो विचारी ॥

ओं ह्रीं विनयसम्पन्नताभावनायै नमः अर्घं ॥ २ ॥

शील सदा सुखकारक है,
अतिचार-विवर्जित निर्मल कीजे ।
दानव देव करें तसु सेव,
विषानल भूत पिशाच पतीजे ।
शील बड़ो जगमें हथियार,
जु शीलको उपमा काहेकी दीजे ।
'ज्ञान' कहे नहिं शील बराबर,
तातें सदा दृढ़ शील धरीजे ॥

ओं ह्रीं निरतिचारशीलव्रतभावनायै नमः अर्घं ॥ ३ ॥

ज्ञान सदा जिनराजको भाषित,
आलस छोड़ पढ़े जो पढ़ावे ।
द्वादस दोउ अनेकहुं भेद,
सुनाम मती श्रुति पंचम पावे ।

चार हुं भेद निरन्तर भाषित,
ज्ञान अभीक्षण शुद्ध कहावे।
'ज्ञान' कहे श्रुत भेद अनेक जु,
लोकालोक हि प्रगट दिखावे॥

ओं ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै नमः अर्घं ॥ ४ ॥

भ्रात न तात न पुत्र कलत्र न,
संयम सज्जन ए सब खोटो।
मन्दिर सुन्दर काय सखा,
सबको इहको हम अन्तर मोटो।
भाउके भाव धरी मन भेदन,
नाहिं संवेग पदारथ छोटो।
'ज्ञान' कहे शिव-साधनको जैसो,
साहको काम करे जु वणोटो॥

ओं ह्रीं संवेगभावनायै नमः अर्घं ॥ ५ ॥

पात्र चतुर्विध देख अनूपम,
दान चतुर्विध भावसुं दीजे।

शक्ति-समान अभ्यागतको,
अति आदरसे प्रणिपत्य करीजे।
देवत जे नर दान सुपात्रहि,
तास अनेकहिं कारण सीजे।
बोलत 'ज्ञान' देहि शुभ दान जु,
भोग सुभूमि महासुख लीजे॥

ओं ह्रीं शक्तितस्त्यागभावनायै नमः अर्घं॥६॥

कर्म कठोर गिरावनको निज,
शक्ति-समान उपोषण कीजे।
बारह भेद तपे तप सुन्दर,
पाप जलांजलि काहे न दीजे।
भाव धरी तप घोर करो नर,
जन्म सदा फल काहे न लीजे
'ज्ञान' कहे तप जे नर भावत,
ताके अनेकहिं पातक छीजे॥

ओं ह्रीं शक्तितस्तपभावनायै नमः अर्घं॥७॥

साधुसमाधि करो नर भावक,
पुण्य बड़ो उपजे अघ छीजे।
साधु की संगति धर्मको कारण,
भक्ति करे परमारथ सीजे।
साधुसमाधि करे भव छूटत,
कीर्ति-छटा त्रैलोक में गाजे।
'ज्ञान' कहे यह साधु बड़ो,
गिरिशृङ्ग गुफा बिच जाय विराजे॥

ओं ह्रीं साधुसमाधिभावनायै नमः अर्घ ॥ ८ ॥

कर्मके योग व्यथा उदई मुनि,
पुंगव कुन्तसभेषज कीजे।
पीत कफान लसास भगन्दर,
तापको मूल महागद छीजे।
भोजन साथ बनायके औषध,
पथ्य कुपथ्य विचार के दीजे।
'ज्ञान' कहे नित ऐसी वैय्या-
वृत्य करे तस देव पतीजे॥

ओं ह्रीं वैयावृत्यकरणभावनायै नमः अर्घं ॥ ९ ॥

देव सदा अरिहन्त भजो जेई,
दोष अठारा किये अति दूरा ।
पाप पखाल भये अति निर्मल,
कर्म कठोर किये चकचूरा ।
दिव्य-अनन्त-चतुष्टय शोभित,
घोर मिथ्यान्ध-निवारण सूरा ।
'ज्ञान' कहे जिनराज अराधो,
निरन्तर जे गुण-मन्दिर पूरा ॥

ओं ह्रीं अर्हद्भक्तिभावनायै नमः अर्घं ॥ १० ॥

देवत ही उपदेश अनेक सु,
आप सदा परमारथ-धारी ।
देश विदेश विहार करें,
दश धर्म धरें भव-पार उतारी ।
ऐसे अचारज भाव-धरी भज,
सो शिव चाहत कर्म निवारी ।

'ज्ञान' कहे गुरु-भक्ति करो नर,
देखत हो मनमांहि विचारी ॥
ओं ह्रीं आचार्यभक्तिभावनायै नमः अर्घं ॥ ११ ॥

आगम छन्द पुराण पढ़ावत,
साहित तर्क वितर्क बखाने ।
काव्य कथा नव नाटक पूजन,
ज्योतिष वैद्यक शास्त्र प्रमाने ।
ऐसे बहुश्रुत साधु मुनीश्वर,
जो मनमें दोउ भाव न आने ।
बोलत 'ज्ञान' धरी मनसान जु,
भाग्य विषेशतें जानहिं जाने ॥
ओं ह्रीं बहुश्रुतभक्तिभावनायै नमः अर्घं । १२ ॥

द्वादस अंग उपांग सदागम,
ताकी निरंतर भक्ति करावे ।
वेद अनूपम चार कहे तस,
अर्थ भले मन माहिं ठरावे ।

पढ़ै बहु भाव लिखो निज अक्षर,
भक्ति करी बड़ि पूज रचावै ।
'ज्ञान' कहै जिन-आगम-भक्ति,
करो सद्-बुद्धि बहुश्रुत पावै ॥

ओं ह्रीं प्रवचनभक्तिभावनायै नमः अर्घं ॥ १३ ॥

भाव धरै समता सब जीवसु,
स्तोत्र पढ़ै मुख से मनहारी ।
कायोत्सर्ग करै मन प्रीतसुं,
बंदन देव-तणों भव तारी ।
ध्यान धरी मद दूर करी,
दोउ बेर करै पड़कम्मन भारी ।
'ज्ञान' कहै मुनि सो धनवन्त जु,
दर्शन ज्ञान चरित्र उधारी ॥

ओं ह्रीं आवश्यकापरिहाणिभावनायै नमः अर्घं ॥ १४ ॥

जिन-पूजा रचो परमारथसूं,
जिन आगल नृत्य महोत्सव ठाणों ।

गावत गीत बजावत ढोल,
मृदंगके नाद सुधांग बखाणो ।
संग प्रतिष्ठा रचो जल-जातरा,
सद्गुरुको साहमो कर आणो ।
'ज्ञान' कहे जिनमार्ग प्रभावन,
भाग्य-विशेषसु जानहिं जाणो ॥

ओं ह्रीं मार्गप्रभावनायै नमः अर्घं ॥ १५ ॥

गौरव-भाव धरी मनसे मुनि-
पुङ्गवको नित वत्सल कीजे ।
शीलके धारक भव्यके तारक,
तासु निरंतर स्नेह धरीजे ।
धेनु यथा निजबालकके,
अपने जिय छोड़ि न और पतीजे ।
'ज्ञान' कहे भवि लोक सुनो,
जिन वत्सल भाव धरे अघ छीजे ॥

ओं ह्रीं प्रवचनवात्सल्यभावनायै नमः अर्घं ॥ १६ ॥

जाप—ओं ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यै नमः. ओं ह्रीं विनयसम्पन्नतायै नमः ओं ह्रीं शीलव्रताय नमः. ओं ह्रीं अभीक्ष्णयज्ञानोपयोगाय नमः. ओं ह्रीं सम्वेगाय नमः. ओं ह्रीं शक्तितस्त्यागाय नमः. ओं ह्रीं शक्तितस्तपसे नमः ओं ह्रीं साधुसमाध्यै नमः. ओं ह्रीं वैयावृत्यकरणाय नमः. ओं ह्रीं अर्हद्भक्त्यै नमः, ओं ह्रीं आचार्यभक्त्यै नमः. ओं ह्रीं बहुश्रुतभक्त्यै नमः. ओं ह्रीं प्रवचनभक्त्यै नमः. ओं ह्रीं आवश्यकापरिहाण्यै नमः. ओं ह्रीं मार्गप्रभावनायै नमः. ओं ह्रीं प्रवचनवत्सलत्वाय नमः ॥ १६ ॥

जयमाला दोहा

षोड़श कारण जे करें, हरें चतुरगति वास ।
पाप पुण्य सब नास कै, ज्ञान भानु परकास ॥

चौपाई

दर्श विशुद्ध धरे जो कोई, ताको आवागमन न होई ।
विनय महा धारे जो प्राणी, शिव वनिताकी सखी बखानी ॥२॥
शील सदा दृढ़ जो नर पाले, सो औरनकी आपद टाले ।
ज्ञान अभ्यास करे मन माहीं, ताके मोह महातम नाहीं ॥३॥
जो संवेग भाव विस्तारें, स्वर्ग मुक्ति पद आप निहारें ।
दान देइ मनहर्ष विशेषें, इह भव यश परभव सुख देखें ॥४॥
जो तप तपें खपें अभिलाषा, चूरे कर्मशिखर गुरु भाषा ।
साधुसमाधि सदा मन लावे, तिहुं जग भोग भोगि शिव जावे ५॥
निश दिन वैयावृत्य करैया, सो निश्चय भवनीर तरैया ।
जो अरहन्तभक्ति मन आनै सो जन विषयकषाय न जानैं ॥६॥

जो आचारज भक्ति करै हैं, सो निरमल आचार धरै हैं।
बहुश्रुतवन्त भक्ति जो करई, सो नर संपूरण श्रुत धरई ॥७॥
प्रवचन-भक्ति करै जो ज्ञाता, लहै ज्ञान परमानन्द दाता।
षट् आवश्यकाल जो साधै, सोई रत्नत्रय आराधै ॥८॥
धर्म प्रभाव करैं जो ज्ञानी, तिन शिव मारग रीति पिछानी।
वत्सल अंग सदा जो ध्यावै, सो तीर्थंकर पदवी पावै ॥९॥

दोहा

ये ही षोडश भावना, सहज धरै व्रत जोय।
देव इन्द्र नागेन्द्र पद, 'द्यानत' शिव पद होय॥

ओं ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो अर्घं निर्वपामीति

सवैया तेईसा

सुन्दर षोडशकारण भावना निर्मल चित्त सु धारक धारै,
कर्म अनेक हनै अति दुर्धर जन्म जरा भय मृत्यु निवारै।
दुःख दरिद्र विपत्ति हरै भव-सागरको पर पार उतारै,
'ज्ञान' कहै यही षोडशकारण कर्म निवारण सिद्ध सुधारै॥

इत्याशीर्वादः।

पंचमेरु पूजा।

गीता छन्द।

तीर्थंकरोंके न्हवन-जलतैं, भये तीरथ शर्मदा।
तातैं प्रदच्छन देत सुरगन, पंचमेरुनकी सदा॥

दो जलधि ढाईद्वीपमें सब, गनत मूल विराजहीं।
पूजों असी जिनधाम प्रतिमा, होंहि सुख दुख भाजहीं ॥१॥

ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बंधिजिनचैत्यालयस्थजिनप्रतिमासमूह अत्रावतरावतर। संवौषट्। ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमासमूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः। ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बंधि जिनचैत्यालयस्थजिनप्रतिमासमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्।

अथाष्टक। चौपाई आंचलीवद्ध (१५ मात्रा)

सीतल मिष्ट सुवास मिलाय, जलसों पूजों श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥
पांचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमाको करों प्रनाम।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय ॥ १ ॥

ओं ह्रीं सुदर्शनमेरु, विजयमेरु, अचलमेरु, मंदरमेरु, विद्युन्मालीमेरु, पंचमेरु संबंधी अस्सी जिन चैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

जल केसर करपूर मिलाय, गंधसों पूजों श्री जिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय ॥
पांचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमाको करों प्रनाम।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय ॥ २ ॥

ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बंधिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो चंदनं निर्व०

अमल अखण्ड सुगंध सुहाय। अच्छतसों पूजों जिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय ॥

पांचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमाको करों प्रनाम।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय॥ ३॥
ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बंधिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अक्षतान्०
बरन अनेक रहे महकाय, फूलनसों पूजों जिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय॥
पांचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमाको करों प्रनाम।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय॥ ४॥
ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बंधिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो पुष्पं निर्व०
मनवांछित बहु तुरत बनाय, चरुसों पूजों श्री जिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय॥
पांचो मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमाको करों प्रनाम।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय॥ ५॥
ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बंधिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्व०
तमहर उज्जवल जोति जगाय, दीपसों पूजों श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय॥
पांचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमाको करों प्रनाम।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय॥ ६॥
ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बंधिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्व०
खेऊं अगर अमल अधिकाय, धूपसों पूजों श्रीजिनराज।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय॥

पांचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमाको करों प्रनाम ।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय ॥ ७ ॥
ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बंधिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो धूपं नि०
सुरस सुवर्ण सुगंध सुहाय, फलसौं पूजौं श्री जिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय ॥
पांचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमाको करों प्रनाम ।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय ॥८॥
ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बंधिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो फलं नि०
आठ दरबमय अरघ बनाय, 'द्यानत' पूजौं श्रीजिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥
पांचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमाको करों प्रनाम ।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय ॥९॥
ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बंधिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अर्घं नि०

जयमाला । सोरठा ।

प्रथम सुदर्शन स्वामि, विजय अचल मंदर कहा ।
विद्युन्माली नाम, पंचमेरु जगमें प्रगट ॥१०॥

वेसरी छन्द ।

प्रथम सुदर्शन मेरु विराजै, भद्रशाल वन भूपर छाजै ।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मनवचतन वंदना हमारी ॥२॥
ऊपर पांच शतक पर सोहै, नंदनवन देखत मन मोहै ।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मनवचतन वंदना हमारी ॥३॥

साढ़े बासठ सहस उंचाई, वन सौमनस शोभै अधिकाई।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मनवचतन वंदना हमारी ॥४॥
ऊंचो जोजन सहस छत्तीसं, पांडुकवन सोहै गिरि सीसं।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मनवचतन वंदना हमारी ॥५॥
चारों मेरु समान बखाने, भूपर भद्रसाल चहुँ जाने।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मनवचतन वंदना हमारी ॥६॥
ऊंचे पांच शतक पर भाखे, चारों नन्दनवन अभिलाखे।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मन वचतन वंदना हमारी ॥७॥
साढ़े पचपन सहस उतंगा, वन सौमनस चार बहुरंगा।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मनवचतन वंदना हमारी ॥८॥
उच्च अट्ठाइस सहस बताये, पांडुक चारों वन शुभ गाये।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मनवचतन वंदना हमारी ॥९॥
सुर नर चारन वंदन आवें, सो शोभा हम किम मुख गावें।
चैत्यालय अस्सी सुखकारी, मनवचतन वंदना हमारी १०॥

दोहा।

पंचमेरुकी आरती, पढ़ै सुनै जो कोय।
'द्यानत' फल जानें प्रभू, तुरत महासुख होय ११॥

ओं ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अर्घं निर्व०

नंदीश्वर द्वीप (अष्टान्हिका) पूजा

अडिल्ल छन्द।

सरब परबमें बड़ो अठाई परब है,
नन्दीश्वर सुर जांहि लिये वसु दरब है।
हमें सकति सो नांहि इहां करि थापना,
पूजों जिनगृह प्रतिमा है हित आपना ॥१॥

ओं ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमासमूह ! अत्र अवतर अवतर. संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

कंचन मणिमय भृंगार, तीरथ नीर भरा।
तिहुं धार दई निरवार, जामन मरन जरा॥
नंदीश्वर श्रीजिनधाम, बावन पुंज करों।
वसु दिन प्रतिमा अभिराम, आनंदभाव धरों १॥

ओं ह्रीं मासोत्तमे मासे ... मासे शुभे शुक्लपक्षे अष्टाह्निकायां महामहोत्सवे नंदीश्वरद्वीपे पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरे एक अंजनगिरि चार दधिमुख आठ रतिकर प्रतिदिशि तेरह तेरह बावन जिन चैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा १॥

भवतपहर शीतल वास, सो चन्दन नाहीं।
प्रभु यह गुन कीजै सांच आयो तुम ठाहीं॥

नंदीश्वर श्रीजिनधाम, बावन पुंज करों।
वसु दिन प्रतिमा अभिराम, आनंदभाव धरों२॥
ओं ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरे चंदनं निर्व०

उत्तम अक्षत जिनराज, पुंज धरे सोहैं।
सब जीते अक्षसमाज, तुम सम अरु को है॥
नंदीश्वर श्रीजिनधाम, बावन पुंज करों।
वसु दिन प्रतिमा अभिराम, आनंदभाव धरों ३॥
ओं ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरे अक्षतान निर्व०

तुम काम विनाशक देव, ध्याऊं फूलन सों।
लहि शील लक्ष्मी एव, छूटूं सूलन सों॥
नंदीश्वर श्रीजिनधाम, बावन पुंज करों।
वसु दिन प्रतिमा अभिराम, आनंदभाव धरों ४॥
ओं ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरे पुष्पं निर्व०

नेवज इन्द्रियबलकार, सो तुमने चूरा।
चरु तुम ढिंग सोहे सार, अचरज है पूरा॥
नंदीश्वर श्रीजिनधाम, बावन पुंज करों।
वसु दिन प्रतिमा अभिराम, आनंदभाव धरों ५॥

ओं ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरे नवेद्यं निर्व०

दीपककी ज्योति प्रकाश, तुम तन मांहिं लसै।
टूटै करमनकी राश, ज्ञानकणी दरसै॥
नंदीश्वर श्रीजिनधाम, बावन पुंज करों।
वसु दिन प्रतिमा अभिराम, आनंदभाव धरों ६॥

ओं ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरे दीपं निर्व०

कृष्णागरुधूप सुवास, दशदिशि नारि वरे।
अतिहरषभाव परकाश, मानों नृत्य करे॥
नंदीश्वर श्रीजिनधाम, बावन पुंज करों।
वसु दिन प्रतिमा अभिराम, आनंदभाव धरों ७॥

ओं ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरे धूपं निर्व०

बहुविधफल ले तिहुंकाल, आनन्द राचत हैं।
तुम शिवफल देहु दयाल, सो हम जाचत हैं॥
नंदीश्वर श्रीजिनधाम, बावन पुंज करों।
वसु दिन प्रतिमा अभिराम, आनंदभाव धरों ८॥

ओं ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरे फलं निर्व०

यह अर्घ कियो निज हेतु, तुमको अरपत हों।
'द्यानत' कीनो शिवहेत, भूप समरपत हों॥

नंदीश्वर श्रीजिनधाम, बावन पुंज करों।
वसु दिन प्रतिमा अभिराम, आनंदभाव धरों ६॥

ओं ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरे अर्घं निर्व०

जयमाला दोहा।

कातिक फागुन साढ़के, अंत आठ दिनमांहि।
नंदीश्वर सुर जात हैं, हम पूजैं इह ठांहिं ॥१॥

छन्द।

एकसौ त्रेसठ कोड़ि जोजन महा,
लाख चौरासिया एकदिशिमें लहा।
आठमों द्वीप नंदीश्वरं भास्वरं,
भौन बावन्न प्रतिमा नमों सुखकरं ॥२॥
चारदिशि चार अंजनगिरी राजहीं,
सहस चौरासिया एकदिशि छाजहीं।
ढोलसम गोल ऊपर तले सुन्दरं,
भौन बावन्न प्रतिमा नमों सुखकरं ॥३॥
एक इक चार दिशि चार शुभ बावरी,
एक इक लाख जोजन अमल जलभरी।
चहुंदिशा चार वन लाख जोजन वरं,
भौन बावन्न प्रतिमा नमों सुखकरं ॥४॥

सोल वापीन मधि सोल गिरि दधिमुखं,
सहस दश महा जोजन लखत ही सुखं ।
बावरी कौन दोमांहि दो रतिकरं,
भौन बावन्न प्रतिमा नमों सुखकरं ॥५॥
शैल बत्तीस इक सहस जोजन कहे,
चार सोलै मिले सर्व बावन लहे ।
एक इक सीसपर एक जिनमंदिरं,
भौन बावन्न प्रतिमा नमों सुखकरं ॥६॥
बिंब अठ एकसौ रतनमय सोह ही,
देव देवी सरव नयन मन मोहही ।
पांचसै धनुष तन पद्मआसन-परं,
भौन बावन्न प्रतिमा नमों सुखकरं ॥७॥
लाल नख मुख नयन स्याम अरु स्वेत हैं,
स्याम रंग भौंह सिर केश छवि देत हैं ।
वचन बोलत मनों हंसत कालुषहरं,
भौन बावन्न प्रतिमा नमों सुखकरं ॥८॥
कोटिशशि भानुदुति तेज छिप जात है,
महा वैराग्य परिणाम ठहरात है ।
वयन नहिं कहैं लखि होत सम्यकधरं,
भौन बावन्न प्रतिमा नमों सुखकरं ॥९॥

सोरठा।

नन्दीश्वर जिनधाम, प्रतिमा महिमा को कहै।
'द्यानत' लीनौं नाम, यहै भगति सब सुख करै॥

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरे पूर्णाऽर्घ्यं निर्व०

दशलक्षण धर्म पूजा।

अडिल्ल

उत्तम छिमा मारदव आरजव भाव है,
सत्य शौच संजम तप त्याग उपाव है।
आकिंचन ब्रह्मचरज धरम दश सार है,
चहुंगति दुखतैं काढ़ि मुकति करतार है॥१॥

ओं ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म! अत्रावतरावतर। संवौषट्
ओं ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः।
ओं ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म! अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्।

सोरठा।

हेमाचल की धार, मुनिचित सम शीतल सुरभि।
भवआताप निवार, दसलक्षण पूजौं सदा॥१॥

ओं ह्रीं उत्तमक्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तपः त्याग, आकिंचन्य ब्रह्मचर्यादिदशलक्षणधर्माय जलं नि० ॥१॥

चन्दन केशर गार, होय सुवास दशों दिशा ।
भव आताप निवार, दसलच्छण पूजौं सदा ॥२॥
ओं ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय चंदनं नि० ॥ २ ॥

अमल अखंडित सार, तंदुल चंद्र समान शुभ ।
भवआताप निवार, दसलच्छण पूजौं सदा ॥३॥
ओं ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अक्षतान नि० ॥ ३ ॥

फूल अनेक प्रकार, महकें ऊरधलोक लों ।
भवआताप निवार, दसलच्छण पूजौं सदा ॥४॥
ओं ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय पुष्पं नि० ॥ ४ ॥

नेवज विविध निहार, उत्तम षटरस संजुगत ।
भवआताप निवार, दसलच्छण पूजौं सदा ॥५॥
ओं ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय नैवेद्यं नि० ॥ ५ ॥

बाति कपूर सुधार, दीपक जोति सुहावनी ।
भवआताप निवार, दसलच्छण पूजौं सदा ॥६॥
ओं ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय दीपं नि० ॥ ६ ॥

अगर धूप विस्तार, फैले सर्व सुगन्धता ।
भवआताप निवार, दसलच्छण पूजौं सदा ॥७॥
ओं ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय धूपं नि० ॥ ७ ॥

फल की जाति अपार, घ्राण नयन मनमोहने ।
भवआताप निवार, दसलच्छण पूजौं सदा ॥८॥

ओं ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय फलं नि० ॥ ८ ॥

आठों दरव संवार, 'द्यानत' अधिक उछाहसों ।
भवआताप निवार, दसलच्छण पूजौं सदा ॥९॥

ओं ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षधर्माय अर्घं नि० ॥ ९ ॥

अंग पूजा (सोरठा) ।

उत्तम छिमा

पीडैं दुष्ट अनेक, बांध मार बहु विधि करैं ।
धरिये छिमा विवेक, कोप न कीजै प्रीतमा ॥१॥

चौपाई मिश्रित गीता छन्द ।

उत्तम छिमा गहो रे भाई, इहभव जस परभव सुखदाई ।
गाली सुनि मन खेद न आनो, गुनको औगुन कहै अयानो ॥
कहिहै अयानो वस्तु छीनै, बांध मार बहुविधि करै ।
घरतैं निकारैं तन विदारैं, वैर जो न तहां धरै ॥
तैं करम पूरव किये खोटे, सहै क्यों नहिं जीयरा ।
अतिक्रोध अगनि बुझाय प्रानी, साम्यजल ले सीयरा ॥१॥

ओं ह्रीं उत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

उत्तम मार्दव

मानमहाविषरूप करहि नीचगति जगतमें।
कोमल सुधा अनूप, सुख पावै प्रानी सदा ॥ २ ॥

उत्तम मार्दवगुन मन माना, मान करनको कौन ठिकाना।
वस्यो निगोदमांहितैं आया, दमरी रूकन भाग बिकाया॥
रूकन बिकाया भाग वशतैं, देव इकइन्द्री भया।
उत्तम मुआ चांडाल हूआ, भूप कीड़ों में गया।
जीतव्य-जोवन-धन-गुमान, कहा करै जल बुदबुदा॥
करि विनय बहुगुन बड़े जनकी, ज्ञानका पावैं उदा॥

ओं ह्रीं उत्तममार्दवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

उत्तम आर्जव

कपट न कीजै कोय, चोरनके पुर ना बसे।
सरल सुभावी होय, ताके घर बहु संपदा ॥३॥

उत्तम आर्जवरीति बखानी, रञ्चक दगा बहुत दुखदानी।
मनमें होय सो वचन उचरिये, वचन होय सो तनसों करिये॥
करिये सरल तिहुंजोग अपने, देख निरमल आरसी।
मुख करै जैसा लखै तैसा, कपट प्रीति अंगारसी॥
नहिं लहै लछमी अधिक छलकरि, करमबंध विशेषता।
भय त्यागि दूध बिलाव पीवै, आपदा नहिं देखता ॥३॥

ओं ह्रीं उत्तमआर्जवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम सत्य

कठिन वचन मति बोल, पर-निन्दा अरु झूठ तज।
सांच जवाहर खोल, सतवादी जगमें सुखी ॥ ४ ॥

उत्तम सत्यवरत पालीजे, पर-विश्वासघात नहिं कीजे।
सांचे झूठे मानुष देखो, आपन पूत स्वपास न पेखो ॥
पेखो तिहायत पुरुष सांचे को, दरब सब दीजिये।
मुनिराज श्रावक की प्रतिष्ठा, सांचगुन लख लीजिये ॥
ऊँचे सिंहासन बैठि वसुनृप, धरमका भूपति भया।
वच झूठसेती नरक पहुँचा, सुरग में नारद गया ॥४॥

ओं ह्रीं उत्तमसत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

उत्तम शौच

धरि हिरदै संतोष, करहु तपस्या देहसों।
शौच सदा निरदोष धरम बड़ो संसार में ॥ ५ ॥

उत्तम शौच सर्व जग जानो, लोभ पाप को बाप बखानो।
आशा फांस महा दुखदानी, सुख पावै सन्तोषी प्रानी ॥
प्रानी सदा शुचि शील जप तप, ज्ञानध्यानप्रभावतैं।
नित गंगजमुन समुद्र न्हाये अशुचिदोष सुभावतैं ॥
ऊपर अमल मल भरयो भीतर, कौन विध घट शुचि कहै।
बहु देह मैली सुगुनथैली, शौचगुन साधू लहैं ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं उत्तमशौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम संजम

काय छहों प्रतिपाल, पचेंन्द्री मन वश करो
संजमरतन संभाल, विषयचोर बहु फिरत हैं ॥ ६

उत्तम संजम गहु मन मेरे, भवभवके भाजैं अघ तेरे
सुरग नरकपशुगतिमें नाहीं, आलसहरन करन सुख ठाहीं।
ठाहीं पृथ्वी जल अग्नि मारुत, रूख त्रस करुना धरो
सपरसन रसना घ्रान नैना, कान मन सब वस करो।
जिस बिना नहिं जिनराज सीझे, तू रुलो जग-कीच में।
इक घरी मत विसरो करो नित, आयु जममुख बीचमें ॥६॥

ओं ह्रीं उत्तमसंयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम तप

तप चाहैं सुरराय, करमशिखरको वज्र है।
द्वादशविधि सुखदाय, क्यों न करै निज सकतिसम ॥७॥

उत्तम तप सब माहिं बखाना, करमशिखरको वज्र समाना।
बस्यो अनादि निगोद मंझारा, भूविकलत्रय पशुतन धारा॥
धारा मनुष तन महादुर्लभ सुकुल आयु निरोगता।
श्रीजैनवानी तत्त्वज्ञानी, भई विषयपयोगता॥
अति महादुरलभ त्याग विषय, कषाय जो तप आदरैं।
नरभव अनूपम कनक घरपर, मणिमयी कलसा धरैं ॥७॥

ओं ह्रीं उत्तमतपधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम त्याग

दान चार परकार, चार संघ को दीजिये।
धन बिजली उनहार, नरभवलाहो लीजिये ॥८॥
उत्तम त्याग कह्यो जग सारा, औषधि शास्त्र अभय आहारा।
निहचै रागद्वेष निरवारै, ज्ञाता दोनों दान संभारै ॥
दोनों संभारै कूप जलसम, दरब घरमें परिनया।
निज हाथ दीजे साथ लीजे, खाय खोया बह गया ॥
धनि साध शास्त्र अभयदिवैया, त्याग राग विरोधको।
विन दान श्रावक साध दोनों, लहैं नाहीं बोध को ॥

ओं ह्रीं उत्तमत्यागधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम आकिंचन

परिग्रह चौबिस भेद, त्याग करैं मुनिराजजी।
तिसनाभाव उछेद, घटती जान घटाइये ॥९
उत्तम आकिंचन गुण जानो, परिग्रह चिन्ता दुख ही मानो।
फांस तनकसी तनमें सालै, चाह लंगोटी की दुख भालै ॥
भालै न समता सुख कभी नर, बिना मुनि-मुद्रा धरैं।
धनि नगनपर तन नगन ठाडे, सुर असुर पायनि परैं ॥
घरमांहि तिसना जो घटावै, रुचि नहीं संसारसौं।
बहु धन बुरा हू भला कहिये, लीन पर उपगारसौं ॥९॥

ओं ह्रीं उत्तमआकिंचन्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम ब्रह्मचर्य

शीलबाड़ि नौ राख, ब्रह्मभाव अन्तर लखो।
करि दोनों अभिलाख, करहु सफल नर-भव सदा ॥१०॥
उत्तम ब्रह्मचर्य मन आनों, माता बहिन सुता पहिचानों।
सहैं बानवर्षा बहु सूरे, टिकै न नयन बान लखि कूरे॥
कूरे तियाके अशुचितन में, कामरोगी रति करैं।
बहु मृतक सड़हिं मसानमाहीं, काक ज्यों चोंचें भरैं॥
संसारमें विषबेल नारी, तजि गये जोगीश्वरा।
'द्यानत' धरम दशपैंड़ि चढ़िके, शिवमहल में पग धरा ॥१०॥

ओं ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला दोहा।

दशलच्छन बन्दौं सदा, मनवांछित फलदाय।
कहों आरती भारती, हमपर होहु सहाय ॥१॥

वेसरी छंद।

उत्तम छिमा जहां मन होई, अन्तर बाहर शत्रु न कोई।
उत्तम मार्दव विनय प्रकासै, नाना भेद ज्ञान सब भासै ॥२॥
उत्तम आर्जव कपट मिटावै, दुरगति त्यागि सुगति उपजावै।
उत्तम सत्य वचन मुख बोलै, सो प्रानी संसार न डोलै ॥३॥

उत्तमशौच लोभपरिहारी, संतोषी गुण रतन भंडारी।
उत्तम संयम पालै ज्ञाता, नरभव सफल करै ले साता ॥४॥
उत्तम तप निरवांछित पाले, सो नर करमशत्रुको टाले।
उत्तम त्याग करै जो कोई, भोगभूमि सुर शिवसुख होई ॥५॥
उत्तम आकिंचन व्रत धारै, परमसमाधिदशा विसतारै।
उत्तम ब्रह्मचर्य मन लावै, नरसुरसहित मुकतिफल पावै ॥६॥

दोहा।

करे करमकी निरजरा, भवपींजरा विनाशि।
अजर अमरपदको लहै, 'द्यानत' सुखकी राशि ॥

ओं ह्रीं उत्तमक्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य शौच, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्यब्रह्मचर्यदशलक्षणधर्माय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय पूजा।

दोहा

चहुंगतिफणिविषहरनमणि, दुख पावक जलधार।
शिवसुखसुधासरोवरी; सम्यक्‌त्रयी निहार ॥१॥

ओं ह्रीं सम्यग्रत्नत्रय! अत्र अवतर अवतर! संवौषट्। ओं ह्रीं सम्यग्रत्नत्रय! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। ओं ह्रीं सम्यग्रत्नत्रय! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

सोरठा।

क्षीरोदधि उनहार, उज्वल जल अति सोहना।
जनम रोग निरवार, सम्यकरत्नत्रय भजों ॥१॥
ओं ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय जन्मरोगविनाशनाय जलं नि०।
चंदन केशर गार, परिमल महा सुगन्धमय।
जनम रोग निरवार, सम्यकरत्नत्रय भजों ॥२॥
ओं ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय भवातापविनाशनाय चन्दनं नि०।
तंदुल अमल चितार, वासमती सुखदासके।
जनम रोग निरवार, सम्यकरत्नत्रय भजों ॥३॥
ओं ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान नि०।
महकैं फूल अपार, अलि गुंजै ज्यों थुति करैं।
जनम रोग निरवार, सम्यकरत्नत्रय भजों ॥४॥
ओं ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०।
लाडू बहु विस्तार, चीकन मिष्ट सुगंधयुत।
जनम रोग निरवार, सम्यकरत्नत्रय भजों ॥५॥
ओं ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवद्यं नि०।
दीप रतनमय सार, जोति प्रकाशै जगतमें।
जनम रोग निरवार, सम्यकरत्नत्रय भजों ॥६॥
ओं ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि०।

धूप सुवास विथार, चन्दन अगर कपूर की।
जनम रोग निरवार, सम्यकरत्नत्रय भजों ॥७॥

ओं ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय अष्टकर्मविनाशनाय धूपं नि०।

फल शोभा अधिकार, लोंग छुहारे जायफल।
जनम रोग निरवार, सम्यकरत्नत्रय भजों ॥८॥

ओं ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०।

आठ दरब निरधार, उत्तमसों उत्तम लिये।
जनम रोग निरवार, सम्यकरत्नत्रय भजों ॥९॥

ओं ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि०।

सम्यकदर्शनज्ञान, व्रत शिवमग तीनों मयी।
पार उतारण जान, 'द्यानत' पूजों व्रत सहित ॥

ओं ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय पूर्णार्घ्यं नि०।

दर्शन पूजा।

दोहा।

सिद्ध अष्टगुनमय प्रगट, मुक्तजीव सोपान।
जिहं बिन ज्ञानचरित्र अफल, सम्यकदर्शप्रमान १॥

ओं ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शन! अत्र अवतर अवतर! संवौषट्। ओं ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शन! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। ओं ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शन! अत्र मम सन्निहितं भव भव। वषट्।

सोरठा ।

नीर सुगन्ध अपार, त्रिषा हरै मल छय करै ।
सम्यकदर्शनसार, आठ अंग पूजों सदा ॥१॥

ओं ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय जलं. नि० ॥

जल केशर घनसार, ताप हरै शीतल करै ।
सम्यकदर्शनसार, आठ अंग पूजों सदा ॥२॥

ओं ह्रीं सम्यग्दर्शनाय चंदनं. नि० ।

अछत अनूप निहार, दारिद नाशै सुख करै ।
सम्यकदर्शनसार, आठ अंग पूजों सदा ॥३॥

ओं ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अत्ततं नि० ।

पुहुप सुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै ।
सम्यकदर्शनसार, आठ अंग पूजों सदा ॥४॥

ओं ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय पुष्पं नि० ।

नेवज विविध प्रकार, छुधा हरै थिरता करै ।
सम्यकदर्शनसार, आठ अंग पूजों सदा ॥५॥

ओं ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय नैवेद्यं नि० ।

दीप ज्योति तमहार, घटपट परकाशै महा ।
सम्यकदर्शनसार, आठ अंग पूजों सदा ॥६॥

ओं ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय दीपं नि० ।

धूप घ्रानसुखकार, रोग विघन जड़ता हरै।
सम्यकदर्शनसार, आठ अङ्ग पूजों सदा ॥७॥

ओं ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय धूपं नि० ।

श्रीफल आदि विथार, निहचै सुरशिवफल करै ।
सम्यकदर्शनसार, आठ अङ्ग पूजों सदा ॥८॥

ओं ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय फलं नि० ।

जल गन्धाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु ।
सम्यकदर्शन सार, आठ अंग पूजों सदा ॥९॥

ओं ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्व० ॥९॥

जयमाला । दोहा ।

आप आप निहचै लखै, तत्त्वप्रतीति व्योहार ।
रहित दोष पच्चीस है, सहित अष्टगुन सार ॥१॥

चौपाई मिश्रित गीता छन्द ।

सम्यकदरसन रतन गहीजे, जिनवचमें संदेह न कीजे ।
इहभव विभव चाह दुखदानी, परभव भोग चहै मत प्रानी ॥
प्रानी गिलान न करि अशुचि लखि, धरमगुरु प्रभु परखिये ।
परदोष ढकिये धरम डिगतेको, सुथिर कर हरखिये ॥
चउसंघसों वात्सल्य कीजे, धरमकी परभावना ।
गुण आठसों गुन आठ लहिकें, इहां फेर न आवना ॥२॥

ओं ह्रीं अष्टांगसहितपञ्चविंशतिदोषरहिताय सम्यग्दर्शनाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञान पूजा ।

दोहा ।

पंचभेद जाके प्रकट, ज्ञेय प्रकाशन भान ।
मोह तपन-हर-चंद्रमा, सोई सम्यकज्ञान ॥१॥

ओं ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञान अत्र अवतर अवतर संवौषट् । ओं ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञान अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । ओं ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञान अत्र मम सन्निहितं भव भव वषट् ।

सोरठा ।

नीर सुगंध अपार, त्रिषा हरै मल छय करै ।
सम्यकज्ञान विचार, आठभेद पूजों सदा ॥१॥

ओं ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जलकेशर घनसार, ताप हरे शीतल करे ।
सम्यकज्ञान विचार, आठभेद पूजों सदा ॥२॥

ओं ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अछत अनूप निहार, दारिद नाशै सुख भरै ।
सम्यकज्ञान विचार, आठभेद पूजों ॥३॥

ओं ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय अक्षतान निर्वपामीति स्वाहा ।

पुहुप सुवास उदार, खेद हरे मन शुचि करै।
सम्यकज्ञान, विचार आठभेद पूजों सदा ॥४॥
ओं ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज विविध प्रकार, क्षुधा हरै थिरता करै।
सम्यकज्ञान विचार, आठभेद पूजों सदा ॥५॥
ओं ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपज्योति तमहार, घटपट परकाशै महा।
सम्यकज्ञान विचार, आठभेद पूजों सदा ॥६॥
ओं ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप घ्रानसुखकार, रोगविघन जड़ता हरै।
सम्यकज्ञान विचार, आठभेद पूजों सदा ॥७॥
ओं ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफलआदि विथार, निहचै सुरशिवफल करै।
सम्यकज्ञान विचार, आठभेद पूजों सदा ॥८॥
ओं ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गन्धाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु।
सम्यकज्ञान विचार, आठभेद पूजों सदा ॥९॥
ओं ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला । दोहा ।

आप आप जानै नियत, ग्रन्थपठन व्योहार ।
संशय विभ्रम मोह बिन अष्टअङ्ग गुनकार ॥१॥

चौपाई मिश्रित गीता छन्द ।

सम्यकज्ञानरतन मन भाया, आगम तीजा नैन बताया ।
अच्छर अरथ शुद्ध पहिचानौ, अच्छर अरथ उभय संग जानौ ॥
जानौ सुकाल पठन जिनागम, नाम गुरु न छिपाइये ।
तप रीति गहि बहु मान देकैं, विनय गुन चित लाइये ॥
ए आठ भेद करम-उछेदक ज्ञानदर्पण देखना ।
इस ज्ञानहीसों भरत सीझा, और सब पट पेखना ॥१॥

ओं ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

चारित्र पूजा ।

दोहा ।

विषयरोग औषधि महा, दवकषाय जलधार ।
तीर्थंकर जाकों धरैं, सम्यकचारितसार ॥१॥

ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्
ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र अत्र मम सन्निहितं भव भव वषट् ।

सोरठा।

नीर सुगन्ध अपार, त्रिषा हरे मल छय करे।
सम्यकचारित सार, तेरहविध पूजों सदा ॥१॥
ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय जलं निर्व०

जलकेसर घनसार, ताप हरै शीतल करै।
सम्यकचारित सार, तेरहविध पूजों सदा ॥२॥
ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय चंदनं०।

अछत अनूप निहार, दारिद नासै सुख भरै।
सम्यकचारित सार, तेरहविध पूजों सदा ॥३॥
ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय अक्षतान नि०

पुहुप सुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै।
सम्यकचारित सार, तेरहविध पूजों सदा ॥४॥
ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यकचारित्राय पुष्पं नि०

नेवज विविधप्रकार, छुधा हरै थिरता करै।
सम्यकचारित सार, तेरहविध पूजों जदा ॥५॥
ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यकचारित्राय नैवेद्यं नि०।

दीपजोति तमहार, घटपट परकाश महा।
सम्यकचारित सार, तेरहविध पूजों सदा ॥६॥
ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यकचारित्राय दीपं नि०

धूप घ्राण सुखकार, रोग विघन जड़ता हरै।
सम्यकचारित सार, तेरहविध पूजों सदा ॥७॥
ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय धूपं निर्वपामीति
श्रीफलआदि विथार, निश्चय सुरशिवफल करै।
सम्यकचारित सार, तेरहविध पूजों सदा ॥८॥
ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय फलं निर्वपामीति।
जल गन्धाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु।
सम्यकचारित सार, तेरहविध पूजों सदा ॥९॥
ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय अर्घ निर्व०

जयमाला। दोहा।

आप आप थिर नियत नय, तपसंजम व्योहार।
स्वपर दया दोनों लिये, तेरहविध दुखहार ॥१०॥

चौपाई मिश्रित गीता छन्द।

सम्यकचारित रतन संभालो, पांच पाप तजि कें व्रत पालो।
पंचसमिति त्रय गुपति गहीजे, नरभव सफल करहु तन छीजे ॥१॥
छीजै सदा तनको जतन यह, एक संयम पालिये।
बहु रुल्यो नरक निगोद मांहीं, कषाय विषयनि टालिये॥
शुभकरम जोग सुघाट आया, पार हो दिन जात है।
'द्यानत' धरमकी नाव बैठो, शिवपुरी कुशलात है ॥११॥
ओं ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय महार्घं निर्व०

समुच्चय जयमाला। दोहा।

सम्यकदरशन ज्ञानव्रत, इनबिन मुकति न होय।
अंध पंगु अरु आलसी, जुदे जलें दव लोय ॥१॥

चौपाई।

तापै ध्यान सुथिर बन आवै, ताके करमबंध कट जावैं।
तासों शिवतिय प्रीति बढ़ावै, जो सम्यकरतनत्रय ध्यावै ॥२॥
ताकों चहुंगति के दुख नाहीं, सो न परै भवसागर माहीं।
जनम जरामृत दोष मिटावै, जो सम्यकरतनत्रय ध्यावै ॥३॥
सोई दशलच्छनको साधै, सो सोलह कारण आराधै।
सो परमातम पद उपजावै, जो सम्यकरतनत्रय ध्यावै ॥४॥
सोई शक्रचक्रिपद लेई, तीन लोक के सुख विलसेई।
सो रागादिक भाव बहावै, जो सम्यकरतनत्रय ध्यावै ॥५॥
सोई लोकालोक निहारै, परमानन्द दशा विसतारै।
आप तिरै औरन तिरवावै, जो सम्यक रतनत्रय ध्यावै ॥६॥

दोहा।

एकस्वरूप प्रकाश निज, वचन कह्यो नहिं जाय।
तीनभेद व्योहार सब, द्यानतको सुखदाय ॥७॥

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

आदिनाथ पूजा।

अडिल्ल छन्द।

कर्मभूमिकी आदि ऋषभ जिनवर भये,
धर्मपंथ दरशाय सकल जग सुख दये।
तिनके पद उर ध्याइ हरष मनमें धरूं,
अत्र निष्ठ जिनराज चरण हिरदे धरूं॥

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्र अत्रावतरावतर। संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठःठः। स्थापनं। अत्र मम अन्निहितो भव भव। वषट्। सन्निधिकरणं।

सुन्दरी छंद।

परम पावन उज्वल लायके, जल जिनेश्वर चरण चढ़ायके।
जन्म मरण त्रिदोष सबै हरूं, ऋषभदेव चरण पूजा करूं॥

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेंद्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस चंदन गंध सुहावनो, परम शीतल गुण मन भावनो।
जन्मतापतृषादुखको हरूं, ऋषभदेव चरण पूजा करूं॥

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेंद्राय चंदनं निर्व०।

शरदइन्दु समान सुहावनो, अमल अक्षत स्वच्छ प्रभावनो।
सहजरूप सुधीरमनी वरूं, ऋषभदेव चरण पूजा करूं॥

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेंद्राय अक्षतं निर्व०।

कुसुम रत्न सुवर्णमई करौं, कनक भाजनमें बहुते भरौं।
मदनवान महा दुखको हरूं, ऋषभदेव चरन पूजा करूं ॥

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेंद्राय पुष्पं निर्व०

सरस मोदन पावक लीजिये, चरु अनेक प्रकार सु कीजिये।
असद्वेद्य क्षुधा दुखको हरूं ऋषभदेव चरन पूजा करूं ॥

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेंद्राय नैवेद्यं निर्व०

रतन दीप अमोलिक लीजिये, जिन सुयोग्य मनोहर कीजिये।
अतुल मोहमहातमको हरूं, ऋषभदेव चरन पूजा करूं ॥

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेंद्राय दीपं निर्व०

सरस धूप सुगंध सुहावनी, अगरआदिक द्रव्य सुपावनी।
धूप खेय दुखद-विधिको हरूं, ऋषभदेव चरन पूजा करूं ॥

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेंद्राय धूपं निर्व०

सरस मिष्ट फलावलि लीजिये, चरण जिनवर भेट करीजिये।
सहज रूप सुधीरमणी वरूं, ऋषभदेव चरन पूजा करूं ॥

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेंद्राय फलं निर्व०

जल फलादिक द्रव्य मिलायके, कनकथाल सुअर्घ बनायके।
निज स्वभाव अरी विधिको हरूं, ऋषभदेव चरन पूजा करूं ॥

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेंद्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्व०

पंचकल्याणक ।

मोतियादाम छंद ।

असाढ़ वदी द्वितीया दिन जान, तजो सरवारथसिद्ध विमान ।
भयो गरभागम मंगल मोय, नमं जिनको नित हर्षित होय ॥
ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेंद्राय आषाढ़वदीद्वितीयायां गर्भकल्याणप्राप्ताय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।

सुचैतवदी नवमी दिन जान, भयो शुभ तादिन जन्मकल्यान ।
सुरासुर इन्द्र शचीजुत आय, करो गिरिशीस महोत्सव जाय ॥
ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेंद्राय चैतवदीनवम्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय अर्घं निर्व०

वदी नवमी शुभ चैत बताय, प्रभू ढिग देवऋषीश्वर आय ।
करी बहु भक्ति नवाय सुभाल, लयो तप तादिन श्रीजिन हाल ॥
ओं ह्रीं श्री आदिनाथजिनेंद्राय चैतवदीनवम्यां तपकल्याणकप्राप्ताय अर्घं निर्व०

वदी शुभ ग्यारस फाल्गुण जान, सु तादिन घाति हने भगवान ।
करौ वरकेवल ज्ञानप्रकाश, हरे जगको भ्रममोहविलास ॥
ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेंद्राय फाल्गुणवदी एकादशम्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय अर्घं निर्व०

वदी शुभ माघचतुर्दसि जान, लयौ प्रभुने शिवथान महान ।
करौ बहु उत्सव इन्द्रमहिंद्र, भरौ मम आस सदा जिनचद्र ॥
ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेंद्राय माघवदीचतुर्दश्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय अर्घं निर्व०

जयमाला दोहा ।

आदि धर्म करता प्रभू, आदि ब्रह्म जगदीश ।
तीर्थंकर पद जिह लयौ, प्रथम नवाऊं शीस ॥

भुजंगप्रयात छंद ।

नमों देव देवेंद्र तुम चर्ण ध्यावैं,
नमों देव इन्द्रादि सेवक कहावे ।
नमों देव तुमको तुम्हीं सुक्खदाता,
नमों देव मेरी हरो दुख असाता ॥१॥
तुम्हीं ब्रह्मरूपी सुब्रह्मा कहावौ,
तुम्हीं विष्णु स्वामी चराचर लखावौ ।
तुम्हीं देव जगदीश सर्वज्ञ नामी,
तुम्हीं देव तीर्थेश नामी अकामी ॥२॥
सुशंकर तुम्हीं हौ तुम्हीं सुक्खकारी,
सुजन्मादि त्रयपुर तुम्हीं ने विदारी ।
धरै ध्यान जो जीव जगके मझारी,
करै नास विधिको लहै ज्ञान भारी ॥३॥
स्वयंभू तुम्हीं हो महादेव नामी,
महेश्वर तुम्हीं हो तुम्हीं लोकस्वामी ।
तुम्हें ध्यानमें जो लखैं पुन्यवंता,
वही मुक्तिको राज विलसैं अनंता ॥४॥

तुम्हीं हो विधाता तुम्हीं नंददाता,
नमैं जो तुम्हें सो सदानंद पाता ।
हरौ कर्मके फंद दुखकंद मेरे,
निजानंद दीजे नमों चर्ण तेरे ॥५॥
महा मोहको मारि निजराज लीनौ,
महाज्ञानको धारि शिव वास कीनौ ।
सुनों अर्ज मेरी रिषभदेव स्वामी,
मुझे वास निजपास दीजे सुधामी ॥६॥

दोहा ।

नाभिराय मरुदेवि सुत, सदा तुम्हारी आस ।
मनवचकायलगायके, नमैं जिनेश्वरदास ॥१॥

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्व०

अडिल्ल छंद ।

वर्तमान जिनराय भरतके जानिये,
पंचकल्यानक धारि गये शिव थानिये ।
जो नर मनवचकाय प्रभू पूजै सही,
सो नर दिवसुख पाय लहै अष्टम मही ॥

इत्याशीर्वादः । पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

१६ अथ श्रीशान्तिनाथजिन पूजा

(रामचन्द्र कृत) अडिल्ल।

शांति जिनेश्वर नमूं तीर्थ वसु-दुगुण ही।
पंचम चक्री अनंग-दुविधषट् सुगुण ही॥
तृणवत्रिधि सब छांड धार तप शिव वरी।
आह्वानन विधि करूं वारत्रय उच्चरी॥१॥

ओं ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम्।
ओं ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ओं ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्॥

अथ अष्टक। (नाराकछंद)।

शैलहेम ते पतंत आपगासु व्योम ही।
रत्नभृंग धार नीर शीत अंग सोम ही॥
रोग सोग आधि व्याधि पूजतें नसाय है।
अनंत सौख्य सार शान्तिनाथ सेय पाय है॥१॥

ओं ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याणकप्राप्ताय जन्ममृत्युजरारोगविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदनादि कुंकुमादि गंध सार ल्यावहीं।
भृङ्गवृंद गुंजते समीर संग ध्यावहीं॥

रोग सोग आधि व्याधि पूजतें नसाय है।
अनंत सौख्य सार शांतिनाथ सेय पाय है ॥२॥

ओं ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याणकप्राप्ताय संसारताप-रोग-विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

इंदु कुंद हारतें अपार स्वेत शालि हीं।
दुत्तिखंड-कार पुंज धारिये विशाल हीं॥
रोग सोग आधि व्याधि पूजतें नसाय है।
अनंत सौख्यसार शांतिनाथ सेय पाय है ॥३॥

ओं ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याणकप्राप्ताय अक्षय-पदप्राप्तये अक्षतान निर्वपामीति स्वाहा।

पंच वर्ण पुष्प सार लाइये मनोज्ञ हीं।
स्वर्ण थाल धारिये मनोज नाश योग्य हीं॥
रोग सोग आधि व्याधि पूजतें नसाय है।
अनंत सौख्य सार शांतिनाथ सेय पाय है ॥४॥

ओं ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याणकप्राप्ताय काम-बाण-विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

खंड घृत कार चारु सद्य मोदकादि हीं।
सुष्टु मिष्ट हेम थाल धार भव्य स्वाद हीं॥

रोग सोग आधि व्याधि पूजतें नमाय है।
अनंत सौख्य सार शांतिनाथ सेय पाय है ॥५॥

ओं ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याणकप्राप्ताय क्षुधा-रोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप ज्योति को उद्योत धूम होत ना कदा।
रत्न थाल धार भव्य मोह ध्वांत ह्वै विदा॥
रोग सोग आधि व्याधि पूजतें नमाय है।
अनंत सौख्य सार शांतिनाथ सेय पाय है ॥६॥

ओं ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याणकप्राप्ताय मोहांधकार-रोग-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्रचंदनादि द्रव्यसार सर्व धार ही।
स्वर्ण धूप-दानमें हुताश संग जार ही॥
रोग सोग आधि व्याधि पूजतें नमाय है।
अनंत सौख्य सार शांतिनाथ सेय पाय है ॥७॥

ओं ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याणकप्राप्ताय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

चोटकेन श्री-फलेन हेम थाल को भरे।
जिनेश के गुणोघ गाय सर्वएन को हरे॥
रोग सोग आधि व्याधि पूजतें नमाय है।
अनंत सौख्यसार शांतिनाथ सेय पाय है ॥८॥

ओं ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याणकप्राप्ताय मोक्ष-फल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

(छप्पय) शरद इंदुसम अंबु तीर्थउद्भव तृटहारी।
चंदन दाह निकंद शालि शशितें द्युति भारी॥
सुर-तरुके वर कुसुम सद्य चरु पावन धारैं।
दीप रत्नमय ज्योति धूपतें मधु झंकारैं॥
लह फल उत्तम अर्घ कर शुभ रामचंद कणथाल भर।
श्रीशांतिनाथ के चरणयुग वसुविधि अरचें भाव धर॥

ओं ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याणकप्राप्ताय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंचकल्याणक। दोहा।

सर्वारथसिधितें चये, भाद्रव सप्तमि स्याम।
ऐरादे उर अवतरे, जजूं गर्भ अभिराम॥१॥

ओं ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय भाद्रपद-कृष्णसप्तम्यां गर्भ-कल्याण-काय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जेठ चतुर्दशि कृष्ण ही, जनमे, श्रीभगवान।
सनपन कर सुरपति यजे, मैं जजहूँ धर ध्यान॥२॥

ओं ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय ज्येष्ठ-कृष्ण-चतुर्दश्यां जन्म-कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जेठ असित चउदसि धर्यो, तप तज राज महान।
सुर नर खगपति पद जजें, मैं जजहूँ भगवान॥३॥

ओं ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां तप-कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष शुकल दशमी हने, घाति कर्म दुखदाय।
केवल लहि वृष भाषियो, जजूं शांति पद ध्याय॥४॥

ओं ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय पौषशुक्लदशम्यां ज्ञानकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्ण चतुर्दशि जेठ की, हन अघाति शिवथान।
गए समेदाचल थकी, जजूं मोक्षकल्याण॥५॥

ओं ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय ज्येष्ठ-कृष्ण-चतुर्दश्यां मोक्ष-कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला। सोरठा।

शांति जिनेश्वर पाय, वंदूं मनवचकाय तें।
देहु सुमति जिनराय, यूं विनती रुचिसों करूं॥

(ढाल संसार सामरियो दोहिलो)

शांति कर्म वसु हानिकै,
सिद्ध भये शिव जाय।
शांत करो सब लोक में,
अरज यही सुख-दाय॥
शांति करो जग शांत जी॥२॥

धन नगरी हथना-पुरी,
धन्य पिता विश्व-सेन ।
धन्य उदर ऐरा सती, शांति भये सुख देन ॥
शांति करो जग शांत जी ॥३॥
भाद्रव सप्तमि कृष्ण ही, गर्भकल्याणक ठान ।
रत्न धनद वरषाइये, षट् नव मास महान ॥
शांति करो जग शान्त जी ॥४॥
जेठ असित चउदस विषे,
जन्म कल्याणक इंद ।
मेरु करचो अभिषेक जी, पूज नचे सुरवृंद ॥
शांति करो जग शांत जी ॥५॥
हेम वरण तन सोहनो, तुंग धनुष चालीस ।
आयु वरष लख नरपति, सेवत सहस बत्तीस ॥
शांति करो जग शान्त जी ॥६॥
षट् खंड नवनिधि तिय सबै, चउदह रत्नभंडार।
कछु कारण लखके तजे, खण चव असिय अगार ।
शांति करो जग शांत जी ॥७॥

देव-ऋषि सब आय के,
पूज चले जिन बोध ।
लेय सुरां शिवका धरी,
विरछ नंदी-सुर सोध ॥
शांति करो जग शांत जी ॥८॥
कृष्ण चतुर्दशि ज्येष्ठ की,
मन-परजै लह ज्ञान ।
इंद्र कल्याणक तप कर्यो,
ध्यान धर्यो भगवान् ॥
शांति करो जग शांत जी ॥९॥
षष्ठम कर हित असन के,
पुर सोमनस मझार ।
गये दियो पय मित्त जी,
वरषे रत्न अपार ॥
शांति करो जग शांत जी ॥१०॥
मौन सहित वसु दुगण ही,
वरष करे तप ध्यान ।

पौष शुकल दशमी हने,
घाति लियो प्रभु ज्ञान ॥
शांति करो जग शांत जी ॥११॥
समव-शरण धनपति रच्यो,
कमलासन परि देव ।
इंद्र नरा षट् द्रव्य की,
सुन थित थुति कर एव ॥
शांति करो जग शांत जी ॥१२॥
धन्य युगल पद मोतणो,
आयो तुम दरबार ।
धन्न उभै चख ये भये,
वदन जिनेंद्र निहार ॥
शांति करो जग शांत जी ॥१३॥
आज सफल कर ये भये,
पूजत श्रीजिन पांय ।
सीस सफल अब ही भयो,

धोकिये तुम प्रभु आय ॥
शान्ति करो जग शान्त जी ॥१४॥
आज सफल रसना भई,
तुम गुणगान करंत ।
धन्य भयो हिय मोतणो,
प्रभु पद ध्यान धरंत ॥
शान्ति करो जग शान्त जी ॥१५॥
आज सफल युग मोतणो,
श्रवण सुनत तुम बैन ।
धन्य भये वसु अंग ये,
नमत लियो अति चैन ॥
शान्ति करो जग शान्त जी ॥१६॥
राम कहै तुम गुण तणो,
इंद्र लहै नहिं पार ।
मैं मति अलप अजान हूं,
होय नहीं विस्तार ॥
शान्ति करो जग शान्त जी ॥१७॥

वरष सहस पच्चीस ही,
षोडश कम उपदेश ।
देय समेद पधारिये,
मास रहे इक शेष ॥
शान्ति करो जग शान्त जी ॥१८॥
जेठ असित चौदस गये,
हन अघाति शिव थान ।
सुर-पति उत्सव अति करचो,
मंगल मोक्ष कल्याण ॥
शान्ति करो जग शान्त जी ॥१९॥
सेवक अरज करे सुनो,
हो करुणानिधि देव ।
भवदधि दुख भयतें मुझे,
तार करूं तुम सेव ॥
शान्ति करो जग शान्त जी ॥२०॥

घत्ताछन्द—इति जिन गुणमाला, अमर रसाला,
जो भविजन कंठ धरई ।

हो दिवि अमरेश्वर, पृहमि नरेश्वर,
शिव सुन्दर ततछिन वरई ॥

ओं ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेद्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याणकप्राप्ताय अनर्घपदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इति श्रीशांतिनाथजिन पूजा संपूर्ण ॥१६॥

---

२० अथ श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिन पूजा प्रारभ्यते ।

(रामचन्द्रकृत) अडिल्ल ।

सकल परीषह जीत ध्यान अगिनैं हनै,
घाति चतुक लहि ज्ञान भव्य बोधै घनै ।
मुनिसुव्रत जिन पांय नमूं सिर नाय के,
आह्वानन विधि करूं चरण लवलाय के ॥

ओं ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ओं ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ओं ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ॥

अथ अष्टक (ढाल जोगीरासा की)

इंदुशरदऋतु को अरनै सित मुनिचित्तसी अविकारी,
शीत सुगंध तृट परसत नासै नीरोदक भर झारी ।

मुनिसुव्रत जिनके पद पूजें दोष दुगुणनव नाशैं,
लोक सकल कर रेख ज्यों देखे ऐसो ज्ञान प्रकाशैं ॥
ओं ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय गर्भ, जन्म, तप ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याणक-प्राप्ताय जन्म-मृत्यु-जरारोग-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

घस मलयागर कुंकुम के संग कृष्णागर घनसारं,
दाह निकंदन परिमलतैं अलि धावत वृंद अपारं।
मुनिसुव्रत जिनके पद पूजे दोष दुगुणनव नाशैं,
लोक सकल कररेख ज्यों देखे ऐसो ज्ञान प्रकाशैं ॥
ओं ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याणक-प्राप्ताय संसारातापरोगविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदकिरण सम उज्ज्वल दीरघ मन-रंजन अनियारे,
तंदुल ओघ अखंडित लेकर पुंज करो दृगहारे।
मुनिसुव्रत जिनके पद पूजे दोष दुगुणनव नाशैं,
लोक सकल कर रेख ज्यों देखे ऐसो ज्ञान प्रकाशैं ॥
ओं ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याणक-प्राप्ताय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान निर्वपामीति स्वाहा।

कुसुम मनोहर पंच वरन ही सुरतरु के शुभ लावैं,
गंधसुगंधे घ्राण-रंजन गुंजत षट्-पद आवैं।

मुनिसुब्रत जिनके पद पूजे दोष दुगुण नव नाशैं,
लोक सकल कर रेख ज्यों देखे ऐसो ज्ञान प्रकाशैं ॥

ओं ह्रीं श्रीमुनिसुब्रतनाथजिनेन्द्राय गर्भ जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याणकप्राप्ताय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मोदक गूझा घेवर फेणी सुरही घृत्त बनावैं,
रसनारंजन रसतें पूरे कंचन थाल भरावैं।
मुनिसुब्रत जिनके पद पूजे दोष दुगुणनव नाशैं,
लोक सकल कर रेखज्यों देखे ऐसो ज्ञान प्रकाशैं ॥

ओं ह्रीं श्रीमुनिसुब्रतनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याणकप्राप्ताय क्षुधा-रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप रत्नमय ज्योति मनोहर सुवरण पात्तर धारैं,
ध्वांत नसै जिम मेघ पवनतैं रवि आतम विस्तारैं।
मुनिसुब्रत जिनके पद पूजे दोष दुगुणनव नाशैं,
लोक सकल कर रेख ज्यों देखे ऐसो ज्ञान प्रकाशैं ॥

ओं ह्रीं श्रीमुनिसुब्रतनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याणकप्राप्ताय मोहांधकाररोगविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णागर मलयागर चंदन धूप दशांग मंगावैं,
स्वर्ण धूपायण संग हुताशन जारे मधुकर आवैं।

मुनिसुव्रत जिनके पद पूजे दोष दुगुणनव नाशै,
लोक सकल कर रेख ज्यों देखे ऐसो ज्ञान प्रकाशै ॥
ओं ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय गर्भ. जन्म. तप. ज्ञान. निर्वाण पंचकल्याणकप्राप्ताय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

फल उत्तम मनहर बहु नीके श्रीफल दाख मंगावैं,
एला खारिक आदि घनेरे घ्राण चक्षु सुहावैं ।
मुनिसुव्रत जिनके पद पूजे दोष दुगुणनव नाशै,
लोक सकल कर रेख ज्यों देखे ऐसो ज्ञान प्रकाशै ॥
ओं ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय गर्भ. जन्म, तप. ज्ञान. निर्वाण पंचकल्याणकप्राप्ताय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल चंदन तंदुल चरुदीपक धूप कुसुम फल लावैं,
अर्घ करें चंद वसुविधि ऐसे सो शिव के सुख पावैं ।
मुनिसुव्रत जिनके पद पूजे दोष दुगुणनव नाशै,
लोक सकल कर रेख ज्यों देखे ऐसो ज्ञान प्रकाशै ॥
ओं ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय गर्भ. जन्म, तप. ज्ञान. निर्वाण पंचकल्याणकप्राप्ताय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ पंचकल्याणक । (दोहा)

प्राणत स्वर्ग थकी चये स्यामा उर अवतार ।
श्रावण द्वितिया कृष्ण ही, लयो जजं पद सार ॥
ओं ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय श्रावणकृष्णद्वितीयायां गर्भ-कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दशमी वदि वैशाख हो, जन्मे युतत्रय ज्ञान ।
सकल सुरासुर गिर जजे, मैं जजहूँ धर ध्यान ॥
ओं ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय वैशाखकृष्णादशम्यां जन्म-कल्याणकाय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

कृष्णदसैं वैशाख तप, धरयो परिग्रह त्याग ।
नगन दिगंबर वन बसे, जजं चरण-युग राग ॥
ओं ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय वैशाख-कृष्णादशम्यां तप-कल्याणकाय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।

नौमी कृष्ण वैशाख अरि, हने घाति दुखदाय ।
कह्यो धर्म केवल भयो, जजं चरण गुण गाय ॥
ओं ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय वैशाख-कृष्ण-नवम्यां ज्ञान-कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुण द्वादशि कृष्ण हो, हनि अघाति निर्वाण ।
गये सुरासुर पद जजे, जजं मोक्ष कल्याण ॥
ओं ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय फाल्गुणकृष्णाद्वादश्यां मोक्ष-कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ जयमाला । दोहा ।

श्रीमुनिसुव्रत जिनतनै, नमं युगल पद सार ।
भवदधि तारन-तरन हो, पतित उधारन-हार ॥

(ढाल सीमंधरजिनवंदिस्या की)

मुनिसुव्रत जिन वंदिस्या जग सार हो, नगर कुसागर भूप ।
पिता नमं सुमित्र जो जग सार हो, श्रीहरिवंश अनूप ॥

अनूप श्रावण दूज कारी सुरग प्राणतते चये,
तब मात स्यामा गर्भ आये लोकत्रय में सुख भये।
सुरअसुर के नय मुकुट कंपे पीठ सब हरि आय हीं,
गर्भा कल्याण महंत महिमा ठानि मंगल गाय हीं ॥१॥
पट्टनव मास त्रिकालहीं, जग सार हो।
बरषे रतन अपार बदी दसै वैशाखकी, जग सार हो।
जिन जन्मे तिहवार।
तिहवार घंटा आदि बाजे सबै सुर मिल आयहीं,
जिन लेय पांडुक बन नह्वाये क्षीरजल शुभ लायहीं।
सिंगार कर पित मात सौंपे नृत्य तांडव हरि करयो,
लख हृदय हर्षित भये दंपति नाम मुनिसुव्रत धरयो ॥२॥
श्याम वरण तन तुंग है जग सार हो।
वीस धनुष परमाण, तीस सहस वर्ष आय है, जग सार हो।
कछु लांछन शुभ जान।
शुभ राज्य पंदरा सहस कीनो त्याग तृणवत बन गये,
नमः सिद्धेभ्यः कह लौंच कीनो ध्यान में प्रभु थिर भये।
तब ही भयो मन ज्ञान सुर नर पूज पद गुण गाइये,
वैशाख दसैं कृष्ण चंपक वृक्षतल व्रत भाइये ॥३॥
कर षष्ठम मिथिला गये जग सार हो।
भोजन हित जिन राय।

विश्वसेन नृप जी दयो जग सार हो ।
पय लख सुर हरषाय,
हरषाय सुर आश्चर्य कीनो पंच फिर वन जाय ही,
तप करे त्याग वरम द्वादश भांति निर्मै थाय ही ।
वैशाख नवमी कृष्ण हरिये घाति चव धर ध्यान ही,
लह ज्ञान लोक अलोक पेख्यो भयो बोध कल्याण ही ॥
समवशरण धनपति रच्यो जग सार हो,
मानसथंभ विशाल चव, चव गोपुर मोहने जग सार हो ।
खाई सजल सगाल,
सगाल वन वन कल्प-तरु पुनि चैत चंपक अंब ही,
धुज शैल सरित सुरूप सुर तिय नचैं हलत नितंब ही ।
मध सभा द्वादश सभा मंडप कमल-आसन जिन ठये,
चतु-वक्त्र अंगुल-चार अंतर भई धुनि सुन हरषये ॥५॥
तरु अशोक त्रय छत्र हैं जग सार हो, चवसठ चमर ढुलंत,
योजन वाणी मागधी जग सार हो ।
दुंदुभि मधुर धुरंत, धुरंत दुंदुभि सुमन वरषे तुंग आसनत्रय लसें,
तमपटल भा-मंडल विध्वंसे कोटि रविकी छवि नसें ।
वसु प्रातिहारिज सहित आरिज देश के भवि बोध ही,
संमेद गिर समभाव प्रणमे भृत योग निरोध ही ॥६॥
फाल्गुण द्वादश कृष्ण ही जग सार ही ।
ध्यान शुक्ल असिधार, हन अघाति शिवपुर लियो जग सार ही ।

सुख-अनंत भंडार,
भंडार सुख अविकार अवयव हीन वृद्धि नहीं कदा,
त्रिलोक की तिरकाल परिणति ज्ञान गर्भित है सदा ।
तित जन्म मरण जरा न व्यापै नाहिं सेवक भूप हो,
चिद्रूप वसु गुण-मई राजै सदा एक सरूप हो ॥७॥
तुम गुण सुर-गुरु वरनैं जग सार हो ।
जिह्वा सहस बणाय, तोऊ पार लहै नहीं जग सार हो ।
तो हमपै किम थाय ।
किम थाय हमपै तुहे वरनन देव गुरु से थक रहे,
हो कृपानाथ अनाथ के पति इहि भव में मैं दुख सहे ।
तुम तरनतारन दुख निवारन तार भव तैं नाथ जी,
चंदराम शरण निहार आयो जोर कैं युग हाथ जी ॥

दोहा ।

श्री मुनिसुव्रित देव की, विनती परम रसाल ।
जो पढ़सी सुणसी सदा पासी मोक्ष विशाल ॥

ओं ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याणप्राप्ताय अनर्घपदप्राप्तये महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

इति श्रीमुनिसुव्रतनाथजिन पूजा संपूर्णा ।

२३ अथ श्रीपार्श्वनाथजिन पूजा।

रामचन्द्रकृत। (अडिल्ल)

पारस मेरु-समान ध्यान में थिर भये।
कमठ किये उपसर्ग सर्व छिन में जये॥
ज्ञान-भानु उपजाय हानि विधि शिव वरी।
आह्वानन विधि करूं प्रणामि त्रिविधा करी॥

ओं ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम।
ओं ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम।
ओं ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम।

अथ अष्टक। (गीताछंद)।

जरद इंदसमान उज्वल स्वच्छ मुनि चित सारसो।
शुभ मलय मिश्रित भृंग भरि हूँ शीत अतिहि तुषार सो॥
सो नीर मनहर तृषा नाशन हिमन-उद्भव ल्यावही।
श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र पूजें हृदय हरष उपायही॥

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याणप्राप्ताय जन्ममृत्युजरारोगविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

घनसार अगर मिलाय कुंकुम मलय संग घसाय ही ।
अति शीत होय सनेह उपजाजु वृंद एक रलाय ही ॥
सोगंध भव-तप नाश कारन कनक भाजन लाय हीं ।
श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र पूजं हृदय हरप उपाय हीं ॥

ओं ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याणप्राप्ताय संसारतापरोगविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

सरित गंगा अंबुसींची शालि उज्वल अति घनी ।
द्युति धरे मुक्ताकी मनोहर सरल दीरघ युत अनी ॥
सो अखित-ओघ अखंड कारन अखै पद को लाय हीं ।
श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र पूजं हृदय हरप उपायहीं ॥

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याणप्राप्ताय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान निर्वपामीति स्वाहा ।

कनक निरमय रत्न जड़िये पंच वर्ण सुहावने ।
प्रसून सुन्दर अमर तरु के गंधयुत अति पावने ॥
सो लेय समर निवार कारन घ्राण चक्षु सुहाय हीं ।
श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र पूजं हृदय हरप उपाय हीं ॥४॥

ओं ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याणप्राप्ताय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

लक्ष्मी-निवास सरोज उद्भव तथा सोम थकी झरै।
आमोद पावन मिष्ट अति चित अमी भुंजन को हरै॥
सो चारु रस नैवेद्य कारन क्षुधा नाशन लाय ही।
श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र पूजूं हृदय हरष उपाय ही॥

ओं ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय गर्भ. जन्म. तप. ज्ञान. निर्वाण पंचकल्याणप्राप्ताय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कनक दीप मनोज्ञ मणिमय भानु भासुर मोहने।
तम नसै ज्यों घन पवन नासै भ्रम-वर्जित सोहने॥
मम मोह निविड विध्वंस कारण लेय जिन ग्रह आयही।
श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र पूजूं हृदय हरष उपाय ही॥

ओं ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय गर्भ. जन्म. तप. ज्ञान निर्वाण पंचकल्याण प्राप्ताय मोहांधकाररोगविनाशाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीखंड अगर दशांग धूपसु कनक धूपायण भरै।
आमोदतैं अलिवृन्द आवें गुंजतैं मन को हरैं॥
वसु कर्म दुष्ट विध्वंस कारण संग अग्नि जराय ही।
श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र पूजूं हृदय हरष उपायही॥

ओं ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय गर्भ. जन्म. तप. ज्ञान. निर्वाण पंचकल्याणप्राप्ताय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अति मिष्ट पक्व मनोज्ञ पावन चक्षु घ्राण को हरै।
अलि गुंज करत सुगंध सेती सुधा की मरवर करै॥
सो फल मनोहर अमर-तरु के स्वर्ण थाल भराय हीं।
श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र पूजूं हृदय हरष उपाय हीं॥

ओं ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याणप्राप्ताय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सलिल स्वच्छ दशांग धूपसु अखित उज्वल लाय हीं।
वर कुसुम चरुतैं क्षुधा नाशै दीप ध्वांत नसाय हीं॥
कर अर्घ धूप मनोज्ञ फल ले राम शिव सुख दाय हीं।
श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र पूजूं हृदय हरष उपाय हीं॥

ओं ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याणप्राप्ताय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंचकल्याणक। दोहा।

प्राणत स्वर्ग थकी चये, वामा उर अवतार।
उभय असित वैशाख हो, लयो जजूं पद सार॥

ओं ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय वैशाख कृष्ण द्वितीया गर्भ-कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष कृष्ण एकादशी, तीन ज्ञान-युत देव।
जन्मे हरि सुर गिर जजे, मैं जज हूँ कर सेव॥

ओं ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पौष कृष्ण एकादशी जन्म कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दुर्द्धर तप सुकुमार वय, काशी देश विहाय ।
पौष कृष्ण एकादशी, धरयो जजं गुण गाय ॥

ओं ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पौष कृष्ण एकादशी तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

कृष्ण चौथ शुभ चैत की, हने घाति लह ज्ञान ।
कह्यो धर्म द्विविधा मुदा, जजं बोध भगवान ॥

ओं ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय चैत्र कृष्ण चतुर्थी ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सप्तमि श्रावण शुक्ल ही, शेष कर्म हन वीर ।
अविचल शिव थानक लह्यो, जजं चरण धर धीर ॥

ओं ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय श्रावण शुक्ल सप्तमी मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ जयमाला । (दोहा)

पार्श्वनाथ जिनके नमूं, चरण कमल युग सार ।
प्रचुर भवार्णव तुम हरो, मुझ तारो अनतार ॥
श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र वंदूं शुद्ध मन वच काय ।
धन पिता अश्व सेन जी धन धन्य वामा माय ॥
धन जन्म काशी देश में वाराणसी शुभ ग्राम ।
प्रभु पास दो मुझ दास को सुन अर्ज अविचल ठाम ॥
अति मनोहर सजल जलद समान सुन्दर काय ।
मुख देख के ललचाय लोचन नेक तृपति न थाय ॥

पद कमल नख द्युति कनक चपला कोटि रवि छवि धाम ।
प्रभु पास दो मुझदास की सुन अरज अविचल ठाम ॥
ह्वै अधो-मुख पंचाग्नि तपतो कमठ को चर क्रूर ।
तित अग्नि जरते नाग बोधे देय वच वृष पूर ॥
वे भये हैं धरणीन्द्र पदमा भवनत्रिक-रिधि-धाम ।
प्रभु पास दो मुझ दास की सुन अर्ज अविचल ठाम ॥
इम उरग मिरत निहार कै सब अथिर शरण न कोय ।
संसार यो भ्रम जाल है जिम चपल चपला होय ॥
हूँ एक चेतन सासतो शिव लहूँ तज के धाम ।
प्रभु पास दो मुझ दास की सुन अर्ज अविचल ठाम ॥
इम चिंतवतां लौकांतिकेश्वर आय पूजे पांय ।
परणाम कर संबोध चाले चितवते गुण धाय ॥
धन धन्य वय सुकुमार में तप धरयो अति बल धाम ।
प्रभु पास दो मुझ दास की सुन अर्ज अविचल ठाम ॥
बंदूं समय जिन धरी दीक्षा विहर अह-छित जाय ।
तित ठये बन में दुष्ट वो सुर कमठ को चर आय ॥
अति रूप भीषण धार के फुंकार पन्नग स्याम ।
प्रभु पास दो मुझ दास की सुन अर्ज अविचल ठाम ॥
ह्वै तुंग वारण सिंह गरज्यो उपल रज वरषाय ।
कर अग्नि वरषा मेघ मूसल तड़ित परलय वाय ॥

प्रभु धीर वीर अत्यंत निरभै असुर को बल खाम ।
प्रभु पास दो मुझ दास को सुन अरज अविचल ठाम ॥
वाही समय धरणीन्द्र को नय मुकुट कंप्यो पीठ ।
हरि आय सिंहासन रच्यो फणमंड कीनो ईठ ॥
तब असुर करनी भई निषफल अचल जिन जिम धाम ।
प्रभु पास दो मुझ दास को सुन अर्ज अविचल ठाम ॥८॥
धर ध्यान योग निरोध के चव-घाति कर्म उपार ।
लहि ज्ञान केवलतें चराचर लोक सकल निहार ॥
समवादि-भूति कुबेर कीनी कहै किम बुधि खाम ।
प्रभु पास दो मुझ दास को सुन अर्ज अविचल ठाम ॥९॥
हरि करी नुति कर जोर विनती धन्य दिन इह वार ।
धन घड़ाया प्रभु पास जी हम लहे भव के पार ॥
धन धन्य वाणी सुनी मैं अघनाशनी पुनि धाम ।
प्रभु पास दो मुझ दास को सुन अर्ज अविचल ठाम ॥१०॥
वसु कर्म नाश विनाश वपु शिव-नयर पाई वीर ।
वसु द्रव्यतैं वह थान पूजें टरैं भव की पीर ॥
सो अचल है सम्मेद पै मम भाव है वसु जाम ।
प्रभु पास दो मुझ दास को सुन अरज अविचल ठाम ॥११॥
कर जोर कै चंदराम भाखै अहो धन तुम देव ।
भवि बोध कै भव सिंधु तारे तरन-तारन टेव ॥

मैं नमत हूँ मो तार अब ही ढील क्यों तुम काम ।
प्रभु पास दो मुझ दास को सुन अर्ज अविचल ठाम ॥१२॥
नित पढ़ें जे नर नारि ही भव हरैं तिन की पीर ।
सुर लोक लह नर होय चक्री काम हलधर वीर ॥
पुन सर्व कर्म जु घात के लह मोक्ष सब सुख धाम ।
प्रभु पास दो मुझ दास को सुन अर्ज अविचल ठाम ॥१३॥
श्री पार्श्व जिनेश्वर नमित सुरेश्वर पूजे तिन भवपास-हरम् ।
स्वर्गादिक जावें नृपपद पावें रामचंद पुन मुक्तिभरम् ॥
ओं ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय गर्भ. जन्म. तप. ज्ञान. निर्वाण पंचकल्याणप्राप्ताय अनर्घपदप्राप्तयेमहाअर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।

इति श्री पार्श्वनाथ जिन पूजा संपूर्णा ॥२३॥

२४ अथ श्रीवर्द्धमानजिन पूजा ।

रामचन्द्र कृत (अडिल्ल)

बोध शुद्ध परकाशक प्रभुजिन भान ही ।
लोक अलोक मझार और नहिं आन ही ॥
प्रणमूं श्रीवर्द्धमान वीरके पाय ही ।
आह्वाननविधि करूं विमल गुण ध्याय ही ॥१॥

ओं ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वानम.
ओं ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम.
ओं ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट सन्निधी करणम।

अथ अष्टक (गीता छंद)

कर्पूर-वासित शरद शशिसम धवल हार तुषारतें।
मुनि चित्त सो अति विमलसौरभ रवें मधुकर प्यारतें॥
सो हिमन-उद्भव कुंभ मणिमय नीर भर तृट् छेयहीं।
श्रीवीरनाथ जिनेन्द्र के युग चरण चर्चूं श्रेय हीं॥१॥

ओं ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याणप्राप्ताय जन्म मृत्युजरारोगविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयनीर कपूर शीतल वर्ण पूरण इंदु हीं।
आमोद बहुल समीरतें दिग रवे मधुकरवृंद हीं॥
सो द्रव्य भवतप नाश कारण कनक भाजन लेय हीं।
श्री वीरनाथ जिनेन्द्र के युग चरण चर्चूं श्रेय हीं॥२॥

ओं ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याणप्राप्ताय संसारतापरोगविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

हिमन उद्भव सरितसोंचो शालिसित शशिद्युति धरें।
दीरघ अखंडित सरल पिंडन मुक्तसो मन को हरें॥

कर पुंजकारण अखेपदके उभै करमें लेय ही।
श्री वीरनाथ जिनेन्द्र के युग चरण चरचूं श्रेय ही ॥३॥

ओं ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याणप्राप्ताय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान निर्वपामीति स्वाहा।

मंदार मेरु सुपारि तरुके सुमन गंधा-सक्त ही।
मधुप आवें भविनके चख लखें होय पवित्त ही॥
सो समर बाण विध्वंस कारण कुसुम उत्कर लेय ही।
श्री वीरनाथ जिनेन्द्र के युग चरण चरचूं श्रेय ही ॥४॥

ओं ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याणप्राप्ताय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्मा-निवास सरोज-आश्रित क्षुधा की आमोदसों।
चित्त सुधा भुंजन को तृपति ह्वै रवै मधुकरमोदसों॥
सो ही पीयूष क्षुधा-विनाशन चारुचरु करलेय ही।
श्रीवीरनाथ जिनेन्द्र के युग चरण चरचूं श्रेय ही ॥५॥

ओं ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याणप्राप्ताय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रैलोक्य मध्य जिनेन्द्र महिमा तेजतें दरसाय ही।
पाप-तम दिग दशों निविड सुमूलतें नसजाय ही॥

सो दीप मणिमय तेज भास्कर कनक भाजन लेय ही।
श्री वीरनाथ जिनेन्द्र के युग चरण चरचूं श्रेय ही॥

ओं ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याणप्राप्ताय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप संग हुताश धारे धूम्र-व्रज दिग में हवै।
दिगपाल चिंतें मनो क्षितिधर नील से आवें इहै॥
सो मलय परिमल घ्राण रंजन सुरों को अति प्रेय ही।
श्री वीरनाथ जिनेन्द्र के युग चरण चरचूं श्रेय ही॥

ओं ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पंचकल्याणप्राप्ताय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ फलोत्कर पक्व मधुरे स्वरण से मन को हरे।
आमोद पावन पुंज करहूँ मनोवांछित फल भरे॥
भर थाल कनकमय अमर तरुके लखें चखको प्रेय ही।
श्री वीरनाथ जिनेन्द्र के युग चरण चरचूं श्रेय ही॥

ओं ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याणप्राप्ताय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंध इत्यादि द्रव ले कमल पद सन्मतितने।
जे जजें ध्यावें वंदि सतवें ठानि उत्सव अतिघने॥
सुर होय चक्री काम हलधर तीर्थ पद की श्रेय ही।
सुख रामचन्द लहंत शिवके अघ कर प्रभु धेय ही॥

ओं ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याणप्राप्ताय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पञ्चकल्याणक। दोहा।

षष्ठी शुक्ल असाढ़ ही पुष्पोत्तरतैं देव।
चय त्रिशला-उर अवतरे जजं भक्ति धरयेव॥१॥

ओं ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय आषाढ़शुक्लषष्ठ्यां गर्भ कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्र शुकल त्रोदसि सुरां कीनो जन्म कल्यान।
क्षीर-उदधितैं मेरुपै मैं जजहूँ धर ध्यान॥२॥

ओं ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय चैत्र शुक्ल त्रयोदश्यां जन्मकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन दशमी कृष्ण हो तप धारो वन जाय।
सुर नर-पति पूजा करी मैं जजहूं गुण गाय॥३॥

ओं ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय मार्गशिरकृष्ण दशम्यां तप कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दशमी सित वैशाख की घातिकर्म चकचूर।
केवल ज्ञान उपाइयो जजं चरण गुण भूर॥४॥

ओं ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय वैशाखशुक्लदशम्यां ज्ञान कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कातिक वदि मावस गये शेष कर्म हन मोष।
पावापुरतैं वीरजी जजं चरण गुण घोष॥५॥

ओं ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय कार्तिककृष्णअमावस्यां मोक्ष कल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ जयमाला । दोहा ।

सन्मति सन्मति दो मुझे हो सन्मतिदातार ।
इहै भक्तिपावन जगत होय अमल विस्तार ॥१॥

(पद्धड़ी छंद)

जय महावीर द्युति अमल भान ।
सिद्धारथ चित अंबुज फुलान ॥
जय-त्रिसला कुख कुमुदनि अनूप ।
प्रफुलावन को मुख चंद रूप ॥१॥
जय कुण्डलपुर जन्मा सुथान ।
हरिवंश व्योम मधि सुष्ट भान ॥
जय कनक वर्ण कर सप्त काय ।
हरि चिह्न बहत्तर वर्ष आय ॥२॥
जय इंद्र कह्यो महावीर सूर ।
सुन देव चलो ह्वै सर्पक्रूर ॥
फुंकार हाल विकराल देख ।
क्रीडत कुमार भाजे विशेख ॥३॥

प्रभु धीर महापन्नग अज्ञान ।
कर कीड हर्यो मद को वितान ॥
ह्वै प्रगट देवनय पूज पाय ।
परशंस कह्यो महावीर राय ॥४॥
लख पूरव भव अनुप्रेक्ष्य चिंत्य ।
भयभीत भये भवतें अत्यंत ॥
लौकांति आय थुति पूज्य पाय ।
निजथान गये सुर असुर आय ॥५॥
रच शिविका कर उत्सव अपार ।
वन जाय धरे प्रभु तज सिंगार ॥
नुति सिद्ध लौंच कच नगन काय ।
धर षष्ठम लव चिद्रूप लाय ॥६॥
तप द्वादश द्वादश वर्ष ठान ।
चउघाति हने गह खड्ग ध्यान ॥
जय अनंत चतुष्टय-लब्ध देव ।
वसु प्रातिहार्य अतिशय सुसेव ॥७॥

जय भव्यन कर भव-सिंधु पार ।
मैं प्रणमूं युग कर सीस धार ॥
जय समर-विटपिजारन हुताश ।
जय मोह तिमिरनाशन प्रकाश ॥८॥
जय दोष अठारा रहित देव ।
मुझ देहु सदा तुम चरण सेव ॥
हूं करूं वीनती जोड़ हाथ ।
भव तारन-तरन निहार नाथ ॥९॥

घत्ता छंद

श्री वीर जिनेश्वर नमत सुरेश्वर वसु विधिकर युगपद-चरचम् ।
बहुतूर बजावें गुण गण गावें, रामचन्द्र मन अति हरपम् ॥१०॥

ओं ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान निर्वाण पंचकल्याणप्राप्ताय अनर्घपदप्राप्तये महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

इति श्री महावीर जिन पूजा सम्पूर्णा ।

अथ पूजा फल ।

पूर्णार्घ (अडिल्ल)

कीरति ह्वै सफुराय सुराधिप बहुसिर नावैं ।
वृद्धि सिद्धि समऋद्धि बुद्धिता श्रिय अति पावैं ॥

धर्म अर्थ लहि कामदेव नरपतिपद थावै ।
वृषभ आदि जिन जजे अर्घ कर जे नर ध्यावै ॥
वृषभआदि चउवीस जिनेश्वर ध्याव ही ।
अर्घ करै गुणगाय तूर वजावही ॥
ते पावै शिव शर्म भक्ति सुरपति करै ।
रामचन्द्र सक नांहि कीर्ति जग विसतरै ॥

ओं ह्रीं श्री ऋषभ, अजित, सम्भव, अभिनन्दन, सुमति, पद्म, सुपार्श्व, चन्द्रप्रभ, पुष्पदन्त, शीतल, श्रेयांस, वासुपूज्य, विमल, अनन्त, धर्म, शान्ति, कुन्थु, अर, मल्लि, मुनिसुव्रत, नमि, नेमि, पार्श्व, वर्द्धमान इति चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(इत्याशीर्वादः)

इति श्री चतुर्विंशति जिन पूजा (चौधरी रामचन्द्र कृता) संपूर्णा ।

अथ महार्घ ।

गीता छन्द ।

मैं देव श्री अर्हंत पूजूं सिद्ध पूजूं चाव सों ।
आचार्य श्रीउवझाय पूजूं साधु पूजूं भाव सों ॥
अर्हंत-भाषित वैन पूजूं द्वादशांग रची गनी ।
पूजूं दिगम्बर गुरुचरन शिवहेत सब आशा धनी ॥

सर्वज्ञ-भाषित धर्म दश-विधि दयामय पूजूं सदा।
जजि भावना षोडशरतनत्रय जा बिना शिव नहिं कदा॥
त्रैलोक्यके कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय जजूं।
पंचमेरु नंदीश्वर जिनालय, खचर सुर-पूजित भजूं॥
कैलाश श्री सम्मेदगिर गिरनार मैं पूजूं सदा।
चंपापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा॥
चौबीस श्री जिनराज पूजूं बीस क्षेत्र विदेह के।
नामावली इक सहस वसु जय होय पति शिव गेहके॥

दोहा।

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।
सर्व पूज पद पूजहूं, बहु विध भक्ति बढ़ाय॥

ओं ह्रीं अर्हन्तजी सिद्धजी आचार्यजी उपाध्यायजी सर्वसाधुजी द्वादशांग जिनवाणी, दशलाक्षणिक धर्म सोलहकारण भावना सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्ररत्नत्रय, तीनलोक संबंधि कृत्रिम अकृत्रिम चैत्यालय, नंदीश्वर द्वीप सम्बन्धि बावन जिन चैत्यालय, श्री सम्मेदशिखर कैलाशगिर गिरनार चंपापुर पावापुर आदि सिद्ध क्षेत्र अतिशय क्षेत्र, विद्यमान बीस तीर्थंकर, भगवानके एक हजार आठ नाम श्री वृषभादि महावीर पर्यन्त चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जलाद्यर्घं महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

———

स्वयंभू स्तोत्र भाषा।

चौपाई।

राजविषैं जुगलनि सुख कियो, राज त्याग भवि शिवपद लियो।
स्वयंबोध स्वंभू भगवान, बंदौं आदिनाथ गुणखान ॥१॥
इन्द्र छीरसागर जल लाय, मेरु न्हवाये गाय बजाय।
मदन विनाशक सुख करतार, बंदौं अजित अजितपदकार ॥२॥
शुकल ध्यानकरि करमविनाशि, घाति अघातिमकल दुखराशि।
लह्यो मुकतिपद सुख अधिकार, बंदौं संभव भवदुख टार ॥३॥
माता पच्छिम रयनमंझार, सुपने सोलह देखे सार।
भूप पूछि फल सुनि हरषाय, बंदौं अभिनंदन मनलाय ॥४॥
सब कुवादवादी सरदार, जीते स्यादवादधुनि धार।
जैनधरमपरकाशक स्वाम, सुमतिदेवपद करहुं प्रनाम ॥५॥
गर्भ अगाऊ धनपति आय, करी नगर शोभा अधिकाय।
बरसे रतन पंचदश मास, नमौं पदमप्रभु सुखकी रास ॥६॥
इंद फनिंद नरिंद त्रिकाल, बानी सुनि सुनि होहिं खुस्याल।
द्वादशसभा ज्ञानदातार, नमौं सुपारसनाथ निहार ॥७॥
सुगुन छियालिस हैं तुम माहिं, दोष अठारह कोऊ नाहिं।
मोहमहातमनाशक दीप, नमौं चंद्रप्रभ राख समीप ॥८॥
द्वादश विध तप करम विनाश, तेरहभेद चरित परकाश।
निज अनिच्छ भवि इच्छकदान, बंदौं पहुपदंत मनआन ॥९॥

भविसुखदाय सुरगतैं आय, दशविध धरम कह्यो जिनराय।
आप समान सबनि सुख देह, वंदौं शीतल धर्मसनेह ॥१०॥
समता सुधा कोपविष नाश, द्वादशांग वानी परकाश।
चारसंघ-आनंद-दातार, नमौं श्रेयांस जिनेश्वर सार ॥११॥
रतनत्रयचिरमुकुटविशाल, सोभै कंठ सुगुन मनिमाल।
मुक्तिनार भरता भगवान, वासुपूज्य बंदौं धर ध्यान ॥१२॥
परम समाधि-स्वरूप जिनेश, ज्ञानी ध्यानी हित उपदेश।
कर्मनाशि शिवसुख विलसंत, वंदौं विमलनाथ भगवंत ॥१३॥
अंतर बाहिर परिग्रह डारि, परम दिगंबरव्रतको धारि।
सर्वजीवहित-राह दिखाय, नमों अनंत वचनमनलाय ॥१४॥
सात तत्त्व पंचासतिकाय, अरथ नवों छ दरब बहुभाय।
लोक अलोक सकल परकाश। वंदों धर्मनाथ अविनाश ॥१५॥
पंचम चक्रवरति निधिभोग, कामदेव द्वादशम मनोग।
शांतिकरन सोलह जिनराय, शांतिनाथ बंदौं हरपाय ॥१६॥
बहुथुति करे हरप नहि होय, निंदे दोप गहैं नहिं कोय।
शीलवान परब्रह्मस्वरूप, वंदौं कुंथुनाथ शिवभूप ॥१७॥
द्वादशगण पूजैं सुखदाय, थुति वंदना करैं अधिकाय।
जाकी निजथुति कबहुं न होय, वंदौं अरजिनवर-पद दोय ॥१८॥
परभव रतनत्रय-अनुराग, इह भव व्याह समय वैराग।
बालब्रह्मपूरनव्रतधार, बंदौं मल्लिनाथ जिनसार ॥१९॥

बिन उपदेश स्वयं वैराग, थुति लौकांत करै पगलाग
नमः सिद्ध कहि सब व्रत लेहिं, बंदौं मुनिसुव्रत व्रत देहिं ॥२०॥
श्रावक विद्यावंत निहार, भगतिभावसों दियो अहार।
बरसी रतनराशि ततकाल, बंदौं नमिप्रभु दीनदयाल ॥२१॥
सब जीवन की बंदी छोर, रागद्वेष द्वै बंधन तोर।
रजमति तजि शिवतियसों मिले, नेमिनाथ बंदौं सुख निले २२॥
दैत्य कियो उपसर्ग अपार, ध्यान देखि आयो फनधार।
गयो कमठ शठ मुख कर श्याम, नमो मेरुसम पारसस्वाम २३॥
भवसागरतैं जीव अपार, धरमपोतमें धरे निहार।
डूबत काढे दया विचार, वर्द्धमान बंदौं बहुबार ॥२४॥

दोहा।

चौबीसौं पदकमलजुग, बंदौं मनवचकाय।
'द्यानत' पढ़ै सुनै सदा, सो प्रभु क्यों न सहाय।

शांतिपाठ संस्कृत।

(शांतिपाठ बोलते समय दोनों हाथों से पुष्पवृष्टि करते रहें)

दोधकवृत्तं

शांतिजिनं शशिनिर्मलवक्त्रं, शीलगुणव्रतसंयमपात्रं।
अष्टशतार्चितलक्षणगात्रं, नौमि जिनोत्तममम्बुजनेत्रं ॥१॥

पंचममीप्सितचक्रधराणां, पूजितमिन्द्रनरेन्द्रगणैश्च ।
शांतिकरं गणशांतिमभीप्सुः षोडशतीर्थकरं प्रणमामि ॥२॥
दिव्यतरुः सुरपुष्पसुवृष्टिर्दुन्दुभिरासनयोजनघोषौ ।
आतपवारणचामरयुग्मे यस्य विभाति च मंडलतेजः ॥३॥
तं जगदर्चितशांतिजिनेन्द्रं शांतिकरं शिरसा प्रणमामि ।
सर्वगणाय तु यच्छतु शांतिं मह्यमरं पठते परमां च ॥४॥

वसंततिलका छंद।

येऽभ्यर्चिता मुकुटकुंडलहाररत्नैः, शक्रादिभिः
सुरगणैः स्तुतपादपद्माः। ते मे जिनाः प्रवरवंशजगत्प्रदीपा-
स्तीर्थंकराः सततशांतिकरा भवन्तु ॥ ५ ॥

इन्द्रवज्रा।

संपूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्रसामान्यतपोधनानां ।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिं भगवान् जिनेन्द्रः ६॥

स्रग्धरावृत्तं।

क्षेमं सर्वप्रजानां प्रभवतु बलवान धार्मिको भूमिपालः,
काले काले च सम्यग्वर्षतु मघवा व्याधयो यांतु नाशं।
दुर्भिक्षं चौरमारी क्षणमपि जगतां मास्मभूज्जीवलोके,
जैनेन्द्रं धर्मचक्रं प्रभवतु सततं सर्वसौख्यप्रदायि ॥७॥

अनुष्टुप्।

प्रध्वस्तघातिकर्माणः केवलज्ञानभास्कराः।
कुर्वंतु जगतः शांतिं वृषभाद्या जिनेश्वराः ॥८॥

प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं नमः।

अथेष्ट प्रार्थना ।

शास्त्राभ्यासो जिनपतिनुतिः संगतिः सर्वदार्यैः,
सद्वृत्तानां गुणगणकथादोषवादे च मौनं ।
सर्वस्यापि प्रियहितवचो भावना चात्मतत्त्वे,
संपद्यंतां मम भवभवे यावदेतेऽपवर्गः ॥९॥

आर्यावृत्तं ।

तव पादौ मम हृदये मम हृदयं तव पदद्वये लीनं ।
तिष्ठतु जिनेन्द्र! तावद्यावन्निर्वाणसंप्राप्ति ॥१०॥
अक्खरपयत्थहीणं मत्ताहीणं च जं मए भणियं ।
तं खमउ णाणदेव य मज्झवि दुक्खक्खयं दिंतु ॥११॥
दुःक्खक्खओ कम्मक्खओ, समाहिमरणं च बोहिलाहो य ।
मम होउ जगतबान्धव तव, जिणवर चरणसरणेण ॥

संस्कृत प्रार्थना ।

त्रिभुवनगुरो! जिनेश्वर! परमानन्दैककारणं कुरुष्व ।
मयि किंकरेत्र करुणा यथा तथा जायते मुक्तिः ॥१३॥
निर्विण्णोहं नितरामर्हन् बहुदुक्खया भवस्थित्या ।
अपुनर्भवाय भवहर कुरु करुणामत्र मयि दीने ॥१४॥
उद्धर मां पतितमतो विषमाद् भवकूपतः कृपां कृत्वा ।
अर्हन्नलमुद्धरणे त्वमसीति पुनः पुनर्वच्मि ॥१५॥

त्वं कारुणिकः स्वामी त्वमेव शरणं जिनेश! तेनाहं।
मोहरिपुदलितमानं फूत्करणं तव पुरः कुर्वे ॥१६॥
ग्रामपतेरपि करुणा परेण केनाप्युपद्रुते पुंसि।
जगतां प्रभो! न किं तव, जिन! मयि खलु कर्मभिः प्रहते १७॥
अपहर मम जन्म दयां, कृत्वेत्येकवचसि वक्तव्ये।
तेनातिदग्ध इति मे बभूव देव! प्रलापित्वं ॥१८॥
तव जिनवर चरणाब्जयुगं करुणामृतशीतलं यावत्।
संसारतापतप्तः करोमि हृदि तावदेव सुखी ॥१९॥
जगदेकशरण भगवन्! नौमि श्रीपद्मनंदितगुणौघ!
किं बहुना कुरु करुणामत्र जने शरणमापन्ने ॥२०॥

परिपुष्पांजलि क्षिपेत्।

भाषा प्रार्थना।

पं० पन्नालाल विशारद महरौनी कृत।

हे त्रिभुवन गुरु जिनवर, परमानन्दैकहेतु हितकारी।
करहु दया किंकर पर प्रार्भी ज्यों होय मोक्ष सुखकारी ॥१॥
हे अर्हन् भवहारी, भवथितिमें मैं भयो दुखी भारी।
दया दीन पर कीजे, फिर नहिं अब बार होय दुखकारी ॥२॥
जग-उद्धार प्रभो! मम करि उद्धार विषमभव जलसे।
बारबार यह विनती करता हूं मैं पतित दुखी दिलसे ॥३॥

तुम प्रभु करुणासागर, तुम ही अशरण शरण जगत स्वामी।
दुखित मोहरिपुसे मैं, यातैं करता पुकार जिन नामी ॥४॥
एक गांवपति भी जब, करुणा करता प्रबल दुखित जनपर।
तब हे त्रिभुवनपति तुम करुणा क्या नहीं करोगे फिर मुझपर५॥
विनती यही हमारी, मेटो संसार भ्रमण भयकारी।
दुःखी भयो मैं भारी, तातैं करता पुकार बहुभारी ॥६॥
करुणामृतकर शीतल, भवतप-हारी चरण कमल तेरे।
रहें हृदयमें मेरे जब तक हैं कर्म मुझे जग घेरे ॥७॥
पद्मनंदि गुण-वंदित, भगवन! संसार शरण-उपकारी।
अंतिम विनय हमारी, करुणाकर करहु भव जलधि पारी ॥८॥

शास्त्र-पूजा विधान

शास्त्रजीको उच्चासन पर विराजमान करके पर्युषण पर्व में निम्न प्रकार पूजा करनी चाहिये।

सरस्वती पूजा

जनम जरा मृतु छय करै, हरै कुनय जड़रीति।
भवसागरसों ले तिरै, पूजै जिनवचप्रीति ॥१॥

ओं ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतिवाग्वादिनि! अत्र अवतर अवतर! संवौषट्। ओं ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतिवाग्वादिनि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। ओं ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतिवाग्वादिनि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

क्षीरोदधिगंगा, विमल तरंगा, सलिल अभंगा सुखसंगा।
भरि कंचन झारी, धार निकारी, तृषा निवारी हितचंगा ॥
तीर्थंकरकी धुनि, गणधरने सुनि, अंग रचे चुनि, ज्ञानमई।
सो जिनवरवानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवनमानी पूज्य भई १॥
ओं ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै जलं निर्वपामीति स्वाहा।

करपूर मंगाया चंदन आया केशर लाया, रंगभरी।
शारदपद वंदों मन अभिनंदों, पापनिकंदों दाह हरी ॥
तीर्थंकरकी धुनि, गणधरने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञानमई।
सो जिनवरवानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवन मानी पूज्य भई॥
ओं ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

सुखदासकमोदं, धारक मोदं, अति अनुमोदं चंदसमं।
बहुभक्ति बढ़ाई, कीरति गाई होहु सहाई, मात ममं॥
तीर्थंकरकी धुनि, गणधरने सुनि, अंग रचे चुनि, ज्ञानमई।
सो जिनवरवानी, शिवसुखदानी त्रिभुवन मानी पूज्य भई ॥
ओं ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै अक्षतान निर्वपामीति०

बहुफूलसुवासं, विमल प्रकाशं, आनंदरासं लाय धरे।
मम काम मिटायो, शील बढ़ायो, सुख उपजायो, दोष हरे॥
तीर्थंकरकी धुनि, गणधरने सुनि, अंग रचे चुनि, ज्ञानमई।
सो जिनवरवानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवन मानी पूज्य भई॥
ओं ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै:पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पकवान बनाया, बहुघृत लाया, सब विधि भाया, मिष्ट महा।
पूजूं थुति गाऊं, प्रीति बढ़ाऊं, क्षुधा नशाऊं हर्ष लहा॥
तीर्थंकरकी धुनि, गणधरने सुनि, अंग रचे चुनि, ज्ञानमई।
सो जिनवरवानी, शिवसुखदानी त्रिभुवन मानी पूज्य भई॥
ओं ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै नैवेद्यं निर्वपामीति०

करि दीपक जोतं, तमक्षय होतं, ज्योति उदोतं तुमहि चढ़ै।
तुम हो परकाशक, भरमविनाशक हम घट भासक ज्ञान बढ़ै॥
तीर्थंकरकी धुनि, गणधरने सुनि अंग रचे चुनि ज्ञानमई।
सो जिनवरवानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवन मानी पूज्य भई॥
ओं ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै दीपं निर्व०

शुभगंध दशोंकर, पावकमें धर, धूप मनोहर खेवत हैं।
सब पाप जलावें, पुण्य कमावें, दास कहावें सेवत हैं॥
तीर्थंकरकी धुनि, गणधरने सुनि, अंग रचे चुनि, ज्ञानमई।
सो जिनवरवानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवन मानी पूज्य भई॥
ओं ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बादाम छुहारी लौंग सुपारी, श्रीफल भारी, ल्यावत हैं।
मनवांछित दाता, मेट असाता, तुम गुन माता ध्यावत हैं॥
तीर्थंकरकी धुनि, गणधरने सुनि, अंग रचे चुनि, ज्ञानमई।
सो जिनवरवानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवन मानी पूज्य भई॥
ओं ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै फलं निर्व०

नयननसुखकारी, मृदुगुनधारी, उज्वल भारी, मोलधरैं ।
शुभगंध सम्हारा, वसन निहारा, तुम तनधारा ज्ञान करैं ॥
तीर्थंकरकी धुनि गणधरने सुनि, अंग रचे चुनि, ज्ञानमई ।
सो जिनवरवानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवन मानी पूज्य भई ॥
ओं ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै वस्त्रं निर्व०

जलचंदन अच्छत, फूल चरू चित, दीप धूप अति फल लावैं ।
पूजाको ठानत, जो तुम जानत, सो नर द्यानत सुख पावैं ॥
तीर्थंकरकी धुनि, गणधरने सुनि, अंग रचे चुनि, ज्ञानमई ।
सो जिनवरवानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवन मानी पूज्य भई ॥
ओं ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै अर्घ्यं निर्व०

जयमाला सोरठा ।

ओंकार धुनिसार, द्वादशांगवाणी विमल ।
नमों भक्ति उर धार, ज्ञान करैं जड़ता हरैं ॥

पहलो आचारांग वखानो ।
पद अष्टादश सहस प्रमानो ॥
दूजो सूत्रकृतं अभिलाषं ।
पद छत्तीस सहस गुरु भाषं ॥१॥
तीजो ठाना अंग सुजानं ।
सहस बियालिस पदसरधानं ॥

चौथो समवायांग निहारं ।
चौंसठ सहस लाख इक धारं ॥२॥
पंचम व्याख्याप्रज्ञपति दरसं ।
दोय लाख अट्ठाइस सहसं ॥
छट्ठो ज्ञातृकथा विसतारं ।
पांचलाख छप्पन्न हजारं ॥३॥
सप्तम उपासकअध्ययनंगं ।
सत्तर सहस ग्यारलख भंगं ॥
अष्टम अंतकृतं दस ईसं ।
सहस अट्ठाइस लाख तेईसं ॥४॥
नवम अनुत्तरदश सुविशालं ।
लाख बानवै सहस चवालं ॥
दशम प्रश्नव्याकरण विचारं ।
लाख तिरानव सोल हजारं ॥५॥
ग्यारम सूत्रविपाक सु भाखं ।
एक कोड चौरासी लाखं ॥

चार कोडि अरु पन्द्रह लाखं ।
दो हजार सब पद गुरुशाखं ॥६॥
द्वादश दृष्टिवाद पनभेदं ।
इकसौ आठ कोडिपनवेदं ॥
अड़सठ लाख सहस छप्पन हैं ।
सहित पंचपद मिथ्याहन हैं ॥७॥
इक सौ बारह कोडि बखानो ।
लाख तिरासी ऊपर जानो ॥
ठावन सहस पंच अधिकाने ।
द्वादश अंग सर्व पद माने ॥८॥
कोडि इकावन आठ हि लाखं ।
सहस चुरासी छहसौ भाखं ॥
साढ़े इक्कीस शिलोक बताये ।
एक एक पदके ये गाये ॥६॥

दोहा ।

जा वानीके ज्ञानमें, सूझै लोक अलोक ।
'द्यानत' जग जयवंत हो, सदा देत हों धोक ॥
ओं ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै महार्घं निर्व०

तत्त्वार्थ सूत्र पूजा ।

त्रैकाल्यं द्रव्यषट्कं नवपदसहितं जीवषट्कायलेश्याः ।
पंचान्ये चास्तिकाया व्रतसमितिगतिज्ञानचारित्रभेदाः ॥
इत्येतन्मोक्षमूलं त्रिभुवनमहितैः प्रोक्तमर्हद्भिरीशैः ।
प्रत्येति श्रद्दधाति स्पृशति च मतिमान् यः स वै शुद्धदृष्टिः ॥१
सिद्धे जयप्पसिद्धे, च उव्विहाराहणाफलं पत्ते ।
वंदित्ता अरहंते, वोच्छं आराहणा कमसो ॥२॥
उज्जोवणमुज्जवणं णिव्वहणं साहणं च णिच्छरणं ।
दंसणणाणचरित्तं तवाणमाराहणा भणिया ॥३॥
मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृतां ।
ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वंदे तद्गुणलब्धये ॥

पुष्पांजलि क्षिपेत् ।

सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः ॥१॥ तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनं ॥२॥ तन्निसर्गादधिगमाद्वा ॥३॥ जीवाजीवास्रवबंधसंवरनिर्जरामोक्षास्तत्त्वं ॥४॥ नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः ॥५॥ प्रमाणनयैरधिगमः ॥६॥ निर्देशस्वामित्वसाधनाधिकरणस्थितिविधानतः ॥७॥ सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालांतरभावाल्पबहुत्वैश्च ॥ ॥८॥ मतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवलानि ज्ञानं ६॥

तत्प्रमाणे ॥१०॥ आद्ये परोक्षं ॥११॥ प्रत्यक्ष-मन्यत् ॥१२॥ मतिः स्मृतिः संज्ञा चिंताभिनिबोध इत्यनर्थांतरं ॥१३॥ तदिंद्रियानिंद्रियनिमित्तं ॥१४॥ अवग्रहेहावायधारणाः ॥१५॥ बहुबहुविध-क्षिप्रानिःसृतानुक्तध्रुवाणां सेतराणां ॥१६॥ अर्थस्य ॥१७॥ व्यंजनस्यावग्रहः ॥१८॥ न चक्षुरनिंद्रियाभ्यां ॥१९॥ श्रुतं मतिपूर्वं द्व्यनेक द्वादशभेदं ॥२०॥ भवप्रत्ययोवधिर्देवनारकाणां ॥२१॥ क्षयोपशमनिमित्तः षड्विकल्पःशेषाणां ॥२२॥ ऋजुविपुलमती मनः पर्ययः ॥२३॥ विशुद्ध्यप्रतिपाताभ्यां तद्विशेषः ॥२४॥ विशुद्धिक्षेत्रस्वामिविषयेभ्योऽवधिमनः पर्यययोः ॥२५॥ मतिश्रुतयोर्निबंधो द्रव्येष्वसर्वपर्यायेषु ॥२६॥ रूपिष्ववधेः ॥२७॥ तदनंतभागे मनः पर्ययस्य ॥२८॥ सर्वद्रव्यपर्यायेषु केवलस्य ।२९। एकादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्यः ॥३०॥ मतिश्रुतावधयो विपर्ययश्च ॥३१॥ सद-

सतोरविशेषाद्यदृच्छोपलब्धेरुन्मत्तवत् ॥ ३२ ॥ नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरूढैवंभूता नयाः ॥३३॥

ज्ञान दर्शनयोस्तत्त्वं नयानां चैव लक्षणम ।
ज्ञानस्य च प्रमाणत्त्व मध्यायेऽस्मिन्निरूपितम ॥१॥

उदक चंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीप सुधूप फलार्घकैः। धवल मंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिन सूत्रमहंयजे ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्री मदुमास्वामि विरचित तत्त्वार्थसूत्रे प्रथम सूत्राय अर्घं ।

इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे प्रथमोऽध्यायः ॥१॥

— २ —

औपशमिकक्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्वतत्त्वमौदयिकपारिणामिकौ च ।१। द्विनवाष्टादशैकविंशतित्रिभेदा यथाक्रमं ।२। सम्यक्त्वचारित्रे ।३। ज्ञानदर्शनदानलाभभोगोपभोगवीर्याणि च ।४। ज्ञानाज्ञानदर्शनलब्धयश्चतुस्त्रित्रिपंचभेदाः सम्यक्त्वचारित्रसंयमासंयमाश्च ।५। गतिकषायलिंगमिथ्यादर्शनाज्ञानासंयतासिद्धलेश्याश्चतुश्चतुस्त्र्येकैकैकैकषड्भेदाः ।६। जीवभव्याभव्यत्वानि च ।७। उपयोगो

लक्षणं ।८। स द्विविधोऽष्टचतुर्भेदः ।९। संसारिणो मुक्ताश्च ।१०। समनस्कामनस्काः ॥११॥ संसारिणस्त्रसस्थावराः ।१२। पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतयः स्थावराः ।१३। द्वींद्रियादयस्त्रसाः ।१४। पंचेंद्रियाणि ।१५। द्विविधानि ।१६। निर्वृत्युपकरणे द्रव्येंद्रियं ।१७। लब्ध्युपयोगौ भावेंद्रियं ।१८। स्पर्शनरसनघ्राणचक्षुःश्रोत्राणि ।१९। स्पर्शरसगंधवर्णशब्दास्तदर्थाः ।२०। श्रुतमनिंद्रियस्य ।२१। वनस्पत्यंतानामेकं ।२२। कृमिपिपीलिकाभ्रमरमनुष्यादीनामेकैकवृद्धानि ।२३। संज्ञिनःसमनस्काः ।२४। विग्रहगतौ कर्मयोगः ।२५। अनुश्रेणि गतिः ।२६। अविग्रहा जीवस्य ।२७। विग्रहवती च संसारिणः प्राक्चतुर्भ्यः ।२८। एकसमयाऽविग्रहा ।२९। एकं द्वौ त्रीन्वानाहारकः ।३०। संमूर्छनगर्भोपपादा जन्म ।३१। सचित्तशीतसंवृताःसेतरा मिश्राश्चैकशस्तद्यो-

नयः ।३२। जरायुजांडजपोतानां गर्भः ।३३। देवनारकाणामुपपादः ।३४। शेषाणां सम्मूर्च्छनं ।३५। औदारिकवैक्रियिकाहारकतैजसकार्मणानि शरीराणि ।३६। परं परं सूक्ष्मं ।३७। प्रदेशतोऽसंख्येयगुणं प्राक्तैजसात् ।३८। अनंतगुणे परे ।३९। अप्रतीघाते ।४०। अनादिसंबंधे च ।४१। सर्वस्य ।४२। तदादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्यः ।४३। निरुपभोगमंत्यं ।४४। गर्भसंमूर्च्छनजमाद्यं ।४५। औपपादिकं वैक्रियिकं ।४६। लब्धिप्रत्ययं च ।४७। तैजसमपि ।४८। शुभं विशुद्धमव्याघाति चाहारकं प्रमत्तसंयतस्यैव ।४९। नारकसंमूर्च्छिनो नपुंसकानि ।५०। न देवाः ।५१। शेषास्त्रिवेदाः ।५२। औपपादिकचरमोत्तमदेहाऽसंख्येयवर्षायुषोऽनपवर्त्यायुषः ।५३।

उदक चंदनतंदुलपुष्पकैश्चरु सुदीप सुधूप फलार्घकैः धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनसूत्र महं यजे ॥२॥

ओं ह्रीं श्रीमदुमास्वामि विरचित तत्त्वार्थसूत्रे द्वितीय सूत्राय अर्घ।

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे द्वितीयोऽध्यायः ॥२॥

— ३ —

रत्नशर्करावालुकापंकधूमतमोमहातमः प्रभाभूमयो घनांबुवाताकाशप्रतिष्ठाः सप्ताऽधोऽधः ।१। तासु त्रिंशत्पंचविंशतिपंचदशदशत्रिपंचोनैक नरकशतशहस्राणि पंच चैव यथाक्रमं ।२। नारका नित्याऽशुभतरलेश्यापरिणामदेहवेदनाविक्रिया : ।३। परस्परोदीरितदुःखाः ।४। संक्लिष्टाऽसुरोदीरितदुःखाश्च प्राक् चतुर्थ्याः ।५। तेष्वेकत्रिसप्तदशसप्तदशद्वाविंशतित्रयस्त्रिंशत्सागरोपमा सत्वा नांपरा स्थितिः ।६। जंबूद्वीपलवणोदादयः शुभनामानो द्वीपसमुद्राः ।७। द्विर्द्विर्विष्कंभाः पूर्वपूर्वपरिक्षेपिणो वलयाकृतयः ।८। तन्मध्येमेरुनाभिर्वृत्तो योजनशतसहस्रविष्कंभो जंबूद्वीपः ।९। भरतहैमवतहरिविदेहरम्यकहैरण्यवतैरावतवर्षाः क्षेत्राणि ।१०। तद्विभाजिनः पूर्वापरायता

हिमवन्महाहिमवन्निषधनीलरुक्मिशिखरिणो वर्षधरपर्वताः ।११। हेमार्जुनतपनीयवैडूर्यरजतहेममयाः ।१२। मणिविचित्रपार्श्वा उपरिमूले च तुल्यविस्ताराः ।१३। पद्ममहापद्मतिगिंछकेशरि महापुंडरीकपुंडरीकाह्लदास्तेषामुपरि ।१४। प्रथमो योजनसहस्रायामस्तदर्द्धविष्कंभो ह्लदः ।१५। दशयोजनावगाहः ।१६। तन्मध्ये योजनं पुष्करं ।१७। तद्द्विगुणद्विगुणा ह्लदाः पुष्कराणि च ।१८। तन्निवासिन्यो देव्यः श्री ह्रीधृतिकीर्तिबुद्धिलक्ष्म्यः पल्योपमस्थितयः ससामानिकपरिषत्काः ।१९। गंगासिंधुरोहिद्रोहितास्याहरिद्धरिकांतासीतासीतोदानारीनरकांतासुवर्णरूप्यकूलारक्तारक्तोदाः सरितस्तन्मध्यगाः ।२०। द्वयोर्द्वयोः पूर्वाः पूर्वगाः । २१ । शेषास्त्वपरगाः ।२२। चतुर्दशनदीसहस्रपरिवृता गंगासिंध्वादयो नद्यः । २३ ॥ भरतः षड्विंशतिपंचयोजनशतविस्तारः षट्चैकोनविंशतिभागा योजनस्य

। २४ । तद्द्विगुणद्विगुणविस्तारा वर्षधरवर्षा विदेहांताः । २५ । उत्तरा दक्षिणतुल्याः ।२६। भरतैरावतयोर्वृद्धिह्रासौ षट्समयाभ्यामुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभ्यां । २७ । ताभ्यामपरा भूमयोऽवस्थिताः । २८ । एकद्वित्रिपल्योपमस्थितयो हैमवतकहारिवर्षकदैवकुरवकाः । २९ । तथोत्तराः । ३० । विदेहेषु संख्येयकालाः । ३१ । भरतस्य विष्कंभो जंबूद्वीपस्य नवतिशतभागः । ३२ । द्विर्धातकीखंडे । ३३ । पुष्करार्द्धे च । ३४ । प्राङ्मानुषोत्तरान्मनुष्याः । ३५ । आर्याम्लेच्छाश्च । ३६ । भरतैरावतविदेहाः कर्मभूमयोऽन्यत्र देवकुरूत्तरकुरुभ्यः ।३७। नृस्थिती परावरे त्रिपल्योपमांतर्मुहूर्ते । ३८ । तिर्यग्योनिजानां च । ३९ ।

उदक चंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीप सुधूप फलार्घकैः। धवल मंगलगानवाकुले जिनगृहे जिन सूत्र महंयजे ॥ १ ॥
ओं ह्रीं श्री मदुमास्वामि विरचित तत्त्वार्थसूत्र तृतीय सूत्राय अर्घं।
इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

— ४ —

देवाश्चतुर्णिकायाः ॥१॥ आदितस्त्रिषु पीतांत-लेश्याः ॥२॥ दशाष्टपंचद्वादशविकल्पाः कल्पोपपन्नपर्यंताः ॥३॥ इन्द्रसामानिकत्रायस्त्रिंशत्पारिषदात्मरक्षलोकपालानीकप्रकीर्णकाभियोग्यकिल्विषिकाश्चैकशः ॥ ४ ॥ त्रायस्त्रिंशल्लोकपालवर्ज्या व्यंतरज्योतिष्काः ॥५॥ पूर्वयोर्द्वीन्द्राः ॥ ॥६॥ कायप्रवीचारा आ ऐशानात् ॥७॥ शेषाः स्पर्शरूपशब्दमनः प्रवीचाराः ॥८॥ परेऽप्रवीचाराः ॥९॥ भवनवासिनोसुरनागविद्युत्सुपर्णाग्निवातस्तनितोदधिद्वीपदिक्कुमाराः ॥१०॥ व्यंतराः किन्नरकिंपुरुषमहोरगगंधर्वयक्षराक्षसभूतपिशाचाः ॥११॥ ज्योतिष्काः सूर्याचंद्रमसौ ग्रहनक्षत्रप्रकीर्णकतारकाश्च ॥१२॥ मेरुप्रदक्षिणा नित्यगतयो नृलोके ॥१३॥ तत्कृतः कालविभागः ॥१४॥ वहिरवस्थिताः ॥१५॥ वैमानिकाः ॥१६॥ कल्पोपपन्नाः कल्पातीताश्च ॥ ॥१७॥ उपर्युपरि ॥१८॥ सौधर्मैशानसानत्कुमा-

रमाहेन्द्रब्रह्मब्रह्मोत्तरलांतवकापिष्टशुक्रमहाशुक्र शतारसहस्रारेष्वानतप्राणतयोरारणाच्युतयोर्नवसु ग्रैवेयकेषु विजयवैजयंतजयंतापराजितेषु सर्वार्थसिद्धौ च ॥१९॥ स्थितिप्रभावसुखद्युतिलेश्या विशुद्धींद्रियावधिविषयतोधिकाः ॥२०॥ गतिशरीरपरिग्रहाभिमानतो हीनाः ॥२१॥ पीतपद्मशुक्ललेश्या द्वित्रिशेषेषु ॥२२॥ प्राग्ग्रैवेयकेभ्यः कल्पाः ॥२३॥ ब्रह्मलोकालया लौकांतिकाः ॥२४॥ सारस्वतादित्यवह्न्यरुणगर्दतोयतुषिताव्याबाधारिष्टाश्च ॥२५॥ विजयादिषु द्विचरमाः ॥२६॥ औपपादिकमनुष्येभ्यः शेषास्तिर्यग्योनयः ॥२७॥ स्थितिरसुरनागसुपर्णद्वीपशेषाणां सागरोपम त्रिपल्योपमार्द्धहीनमिताः ॥ २८॥ सौधर्मैशानयोः सागरोपमेऽधिके ॥२९॥ सानत्कुमारमाहेन्द्रयोः सप्त ॥३०॥ त्रिसप्तनवैकादशत्रयोदशपंचदशभिरधिकानि तु ॥३१॥ आरणाच्युतादूर्ध्वमेकैकेन नवसु ग्रैवेयकेषु वि-

जयादिषु सर्वार्थसिद्धौ च ॥३२॥ अपरा पल्यो-पमधिकं ॥३३॥ परतः परतः पूर्वापूर्वानंतरा:॥३४॥ नारकाणां च द्वितीयादिषु ॥३५॥ दशव-र्षसहस्राणि प्रथमायां ॥३६॥ भवनेषु च ॥३७॥ व्यंतराणां च ॥३८॥ परापल्योपममधिकं ॥३९॥ ज्योतिष्काणां च ॥४०॥ तदष्टभागोऽपरा ॥ ४१ ॥ लौकांतिकानामष्टौ सागरोपमाणि स-र्वेषां ॥४२॥

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूप फलार्घकैः ।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे ॥४॥
ओं ह्रीं श्रीमदुमास्वामि विरचित तत्त्वार्थसूत्र चतुर्थसूत्राय अर्घं ।
इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे चतुर्थोऽध्यायः ॥४।

अजीवकाया धर्माधर्माकाशपुद्गलाः ॥१॥ द्रव्या-णि ।२। जीवाश्च ।३। नित्यावस्थितान्यरूपा-णि । ४ । रूपिणः पुद्गलाः । ५ । आ आका-शादेकद्रव्याणि । ६ । निष्क्रियाणि च । ७ । असंख्येयाः प्रदेशाधर्माधर्मैकजीवानां । ८ । आकाशस्यानंताः । ९ । संख्येयासंख्येयाश्च

पुद्गलानां। १०। नाणोः। ११। लोकाकाशेऽव-
गाहः। १२। धर्माधर्मयोः कृत्स्ने। १३। एक-
प्रदेशादिषुभाज्यः पुद्गलानां। १४। असंख्येय-
भागादिषु जीवानां। १५। प्रदेश संहारविस-
र्पाभ्यां प्रदीपवत्। १६। गतिस्थित्युपग्रहो ध-
र्माधर्मयोरुपकारः। १७। आकाशस्यावगाहः।
१८। शरीरवाङ्मनः प्राणापानाः पुद्गलानां।
१९। सुखदुःखजीवितमरणोपग्रहाश्च। २०।
परस्परोपग्रहो जीवानां। २१। वर्तनापरिणा-
मक्रियापरत्वापरत्वे च कालस्य। २२। स्पर्श-
रसगंधवर्णावंतः पुद्गलाः।२३। शब्दबंधसौक्ष्म्य-
स्थौल्यसंस्थानभेदतमश्छायातपोद्योतवंतश्च।
२४। अणवःस्कंधाश्च। २५। भेदसंघातेभ्य
उत्पद्यंते। २६। भेदादणुः। २७। भेदसंघा-
ताभ्यां चाक्षुषः। २८। सद्द्रव्यलक्षणं।२९।
उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तं सत्।३०। तद्भावाव्ययं
नित्यं। ३१। अर्पितानर्पितसिद्धेः। ३२। स्नि-

न्धरूक्षत्वाद्बंधः । ३३ । न जघन्यगुणानां । ।३४। गुणसाम्ये सदृशानां । ३५ । द्व्यधिकादिगुणानां तु ॥३६॥ बंधेऽधिकौपारिणामिकौ च ॥ ३७ ॥ गुणपर्ययवद्द्रव्यं ॥३८॥ कालश्च ॥३९॥ सोऽनंतसमयः ॥४०॥ द्रव्याश्रया निर्गुणा गुणाः ॥४१॥ तद्भावः परिणामः ॥ ४२ ॥

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः ।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे ॥५॥
ओं ह्रीं श्रीमदुमास्वामि विरचिते तत्त्वार्थसूत्रे पंचमसूत्राय अर्घं ।
इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे पंचमोऽध्यायः ॥५॥

कायवाङ्मनः कर्मयोगः ॥१॥ स आस्रवः ॥२॥ शुभः पुण्यस्याशुभः पापस्य ॥ ३ ॥ सकषायाकषाययोः सांपरायिकेर्यापथयोः ॥४॥ इन्द्रियकषायाव्रतक्रियाः पंच चतुः पंच पंचविंशतिसंख्याः पूर्वस्यभेदाः ॥५॥ तीव्रमंदज्ञाताज्ञातभावाधिकरणवीर्यविशेषेभ्यस्तद्विशेषः ॥६॥ अधिकरणं जीवाजीवाः ॥७॥ आद्यं संरंभस-

मारंभारंभयोगकृतकारितानुमतकषायविशेषै -स्त्रिस्त्रिस्त्रिश्चतुश्चैकशः ॥८॥ निर्वर्तनानिक्षेप-संयोगनिसर्गा द्विचतुर्द्वित्रिभेदाः परं ॥९॥ त-त्प्रदोषनिह्नवमात्सर्यान्तरायासादनोपघाता ज्ञा-नदर्शनावरणयोः । १० । दुःखशोकतापाक्रन्दन-वधपरिदेवनान्यात्मपरोभयस्थानान्यसद्वेद्यस्य । ॥११॥ भूतव्रत्यनुकंपादानसरागसंयमादियोगः क्षांतिः शौचमिति सद्वेद्यस्य ॥१२॥ केवलिश्रु -तसंघधर्मदेवावर्णवादो दर्शनमोहस्य ॥१३॥ कषायोदयात्तीव्रपरिणामश्चारित्रमोहस्य ॥१४॥ वह्वारंभपरिग्रहत्वं नारकस्यायुषः ॥ १५ ॥ माया तैर्यग्योनस्य ॥१६॥ अल्पारंभपरिग्रहत्वं मानु-षस्य ॥ १७॥ स्वभावमार्दवं च ॥१८॥ निः-शीलव्रतित्वं च सर्वेषां ॥१९॥ सरागसंयमसं-यमासंयमाकामनिर्जराबालतपांसि देवस्य ॥२०॥ सम्यक्त्वं च ॥२१॥ योगवक्रताविसंवादनं चा-शुभस्य नाम्नः ॥ २२ ॥ तद्विपरीतं शुभस्य ।

॥२३॥ दर्शनविशुद्धिर्विनयसंपन्नता शीलव्रतेष्वनतीचारोऽभीक्ष्णज्ञानोपयोगसंवेगौ शक्तितस्त्यागतपसी साधुसमाधिर्वैयावृत्यकरणमर्हदाचार्यबहुश्रुतप्रवचनभक्तिरावश्यकापरिहाणिर्मार्गप्रभावना प्रवचनवत्सलत्वमिति तीर्थकरत्वस्य ॥ २४ ॥ परात्मनिंदाप्रशंसे सदसद्गुणाच्छादनोद्भावने च नीचैर्गोत्रस्य ॥२५॥ तद्विपर्ययो नीचैर्वृत्यनुत्सेकौ चोत्तरस्य । ६ । विघ्नकरणमंतरायस्य ॥२७॥

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः ।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे ॥६॥
ओं ह्रीं श्रीमदुमास्वामि विरचिते तत्त्वार्थसूत्रे षष्ठमसूत्राय अर्घं
इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे षष्ठोऽध्यायः ॥६॥

हिंसानृतस्तेयाब्रह्मपरिग्रहेभ्यो विरतिर्व्रतं ॥१॥ देशसर्वतोऽणुमहती ॥२॥ तत्स्थैर्यार्थं भावनाः पंच पंच ॥३॥ वाङ्मनोगुप्तीर्यादाननिक्षेपणसमित्यालोकितपानभोजनानि पंच ॥४॥ क्रोधलोभभीरुत्वहास्यप्रत्याख्यानान्यनुवीचिभाषणं च

पंच ॥ ५ ॥ शून्यागारविमोचितावासपरोपरो-
धाकरणभैक्ष्यशुद्धिसद्धर्माविसंवादाः पंच ॥६॥
स्त्रीरागकथाश्रवणतन्मनोहरांगनिरीक्षणपूर्वरता-
नुस्मरणवृष्येष्टरसस्वशरीरसंस्कारत्यागाः पंच
॥७॥ मनोज्ञामनोज्ञेंद्रियविषयरागद्वेषवर्जनानि
पंच ॥ ८ ॥ हिंसादिष्विहामुत्रापायावद्यदर्शनं ॥
९॥ दुःखमेव वा ॥१०॥ मैत्रीप्रमोदकारुण्यमा-
ध्यस्थानि च सत्वगुणाधिकक्लिश्यमानाविन-
येषु ॥११॥ जगत्कायस्वभावौ वा संवेगवैराग्या-
र्थं ॥१२॥ प्रमत्तयोगात्प्राणव्यपरोपणं हिंसा ॥
१३॥ असदभिधानमनृतं ॥१४॥ अदत्तादानं
स्तेयं ॥१५॥ मैथुनमब्रह्म ॥१६॥ मूर्छा परिग्रहः
॥१७॥ निःशल्यो व्रती ॥१८॥ अगार्यनगारश्च
॥१९॥ अणुव्रतोऽगारी ॥२०॥ दिग्देशानर्थदंड-
विरतिसामायिकप्रोषधोपवासोपभोगपरिभोग -
परिमाणातिथिसंविभागव्रतसंपन्नश्च ॥२१॥ मा-
रणांतिकीं सल्लेखनां जोषिता ॥२२॥ शंका-

कांक्षाविचिकित्सान्यदृष्टिप्रशंसासंस्तवाः सम्य-
ग्दृष्टेरतीचाराः ॥२३॥ व्रतशीलेषु पंच पंच य-
थाक्रमं ॥२४॥ बंधवधच्छेदातिभारारोपणान्नपा-
ननिरोधाः ॥२५॥ मिथ्योपदेशरहोभ्याख्यानकू-
टलेखक्रियान्यासापहारसाकारमंत्रभेदाः ॥२६॥
स्तेन प्रयोगतदाहृतादानविरुद्धराज्यातिक्रमहीं-
नाधिकमानोन्मानप्रतिरूपकव्यवहाराः ॥२७॥
परविवाहकरणेत्वरिकापरिगृहीतापरिगृहीतागम -
नानंगक्रीडाकामतीव्राभिनिवेशाः ॥२८॥ क्षेत्र
वास्तुहिरण्यसुवर्णधनधान्यदासीदासकुप्यप्रमा -
णातिक्रमाः ॥२९॥ ऊर्ध्वाधस्तिर्यग्व्यतिक्रमक्षे-
त्रवृद्धिस्मृत्यंतराधानानि ॥३०॥ आनयनप्रेष्य-
प्रयोगशब्दरूपानुपातपुद्गलक्षेपाः ॥३१॥ कंदर्प
कौत्कुच्यमौखर्यासमीक्ष्याधिकरणोपभोगपरिभो -
गानर्थक्यानि ॥ ३२ ॥ योगदुःप्रणिधानानाद-
रस्मृत्यनुपस्थानानि ॥ ३३ ॥ अप्रत्यवेक्षिता
प्रमार्जितोत्सर्गादानसंस्तरोपक्रमणानादरस्मृत्य-

नुपस्थानानि ॥३४॥ सचित्तसंबंधसंमिश्राभिषवदुःपक्वाहाराः ॥३५॥ सचित्तनिक्षेपापिधानपरव्यपदेशमात्सर्य्यकालातिक्रमाः ॥३६॥ जीवितमरणाशंसामित्रानुरागसुखानुबंधनिदानानि ॥३७॥ अनुग्रहार्थं स्वस्यातिसर्गो दानं ॥३८॥ विधिद्रव्यदातृपात्रविशेषात्तद्विशेषः ॥३९॥

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः ।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे ॥७॥
ओं ह्रीं श्रीमदुमास्वामि विरचित तत्त्वार्थसूत्रे सप्तमसूत्राय अर्घं ।
इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे सप्तमोऽध्यायः ॥७॥

मिथ्यादर्शनाविरतिप्रमादकषाययोगा बंधहेतवः ॥१॥ सकषायत्वाज्जीवः कर्मणो योग्यान्पुद्गलानादत्ते स बंधः ॥२॥ प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशास्तद्विधयः ॥३॥ आद्यो ज्ञानदर्शनावरणवेदनीयमोहनीयायुर्नामगोत्रांतरायाः ॥४॥ पंचनवद्व्यष्टाविंशतिचतुर्द्विचत्वारिंशद्द्विपंचभेदा यथाक्रमं ॥५॥ मतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवलानां ॥६॥ चक्षुरचक्षुरवधिकेवलानां निद्रानिद्रानिद्राप्र-

चलाप्रचलाप्रचलास्त्यानगृद्धयश्च ॥७॥ सदसद्वेद्ये ॥८॥ दर्शनचारित्रमोहनीयाकषायकषायवेदनीयाख्यास्त्रिद्विनवषोड़शभेदाः सम्यक्त्वमिथ्यात्वतदुभयान्यकषायकषायौ हास्यरत्यरतिशोकभयजुगुप्सास्त्रीपुन्नपुंसकवेदा अनंतानुवंध्यप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानसंज्वलनविकल्पाश्चैकशः क्रोधमानमायालोभाः ॥९॥ नारकतैर्यग्योनमानुषदैवानि ॥१०॥ गतिजातिशरीरांगोपांगनिर्माणवंधनसंघातसंस्थानसंहननस्पर्शरसगंधवर्णानुपूर्व्यगुरुलघूपघातपरघातातपोद्योतोच्छ्वासविहायोगतयः प्रत्येकशरीरत्रससुभगसुस्वरशुभसूक्ष्मपर्याप्तिस्थिरादेययशः कीर्तिसेतराणि तीर्थकरत्वं च ॥११॥ उच्चैर्नीचैश्च ॥१२॥ दानलाभभोगोपभोगवीर्याणां ॥१३॥ आदितस्तिसृणामंतरायस्य च त्रिंशत्सागरोपमकोटीकोट्यः परा स्थितिः ॥१४॥ सप्ततिर्मोहनीयस्य ॥१५॥ विंशतिर्नामगोत्रयोः ॥१६॥ त्रयस्त्रिंशत्सागरो-

पमाण्यायुषः ॥१७॥ अपरा द्वादशमूहूर्ता वेद-
नीयस्य ॥१८॥ नामगोत्रयोरष्टौ ॥१९॥ शेषा-
णामंतर्मुहूर्ता ॥२०॥ विपाकोऽनुभवः ॥२१॥ स
यथानाम ॥२२॥ ततश्च निर्जरा ॥२३॥ नामप्र-
त्ययाः सर्वतो योगविशेषात्सूक्ष्मैकक्षेत्रावगाह-
स्थिताः सर्वात्मप्रदेशेष्वनंतानंतप्रदेशाः ॥२४॥
सद्वेद्यशुभायुर्नामगोत्राणि पुण्यं ॥२५॥ अतो-
ऽन्यत्पापं ॥२६॥

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः ।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे ॥८॥
ओं ह्रीं श्रीमदुमास्वामि विरचित तत्त्वार्थसूत्र अष्टमसूत्राय अर्घं
इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे अष्टमोऽध्यायः ॥८॥

आश्रवनिरोधः संवरः ॥१॥ सगुप्तिसमितिध-
र्मानुप्रेक्षापरीषहजयचारित्रैः ॥२॥ तपसा नि-
र्जरा च ॥३॥ सम्यग्योगनिग्रहो गुप्तिः ॥४॥ ई-
र्याभाषैषणादाननिक्षेपोत्सर्गाः समितयः ॥५॥
उत्तमक्षमामार्दवार्जवसत्यशौचसंयमतपस्त्या -
गाकिंचन्यब्रह्मचर्याणि धर्मः ॥६॥ अनित्या-

शरणसंसारैकत्वान्यत्वाशुच्यास्त्रवसंवरनिर्जरा - लोकबोधिदुर्ल्लभधर्मस्वाख्याततत्त्वानुचिंतन - मनुप्रेक्षाः ॥७॥ मार्गाच्यवननिर्जरार्थं परिषो- ढव्याः परीषहाः ॥८॥ क्षुत्पिपासाशीतोष्णदंश- मशकनाग्न्यारतिस्त्रीचर्यानिषद्याशय्याक्रोशव - धयाचनालाभरोगतृणस्पर्शमलसत्कारपुरस्कार - प्रज्ञाज्ञानादर्शनानि ॥९॥ सूक्ष्मसांपरायछद्म- स्थवीतरागयोश्चतुर्दश ॥१०॥ एकादश जिने ॥११॥ वादरसांपराये सर्वे ॥१२॥ ज्ञानावरणे प्रज्ञाज्ञाने ॥१३॥ दर्शनमोहांतराययोरदर्शना- लाभौ ॥१४॥ चारित्रमोहे नाग्न्यारतिस्त्रीनिष- द्याक्रोशयाचनासत्कार पुरस्काराः ॥१५॥ वेद- नीये शेषाः ॥१६॥ एकादयो भाज्या युगपदे- कस्मिन्नेकोनविंशतिः ॥१७॥ सामायिकच्छे- दोपस्थापनापरिहारविशुद्धिसूक्ष्मसांपराययथा - ख्यातमिति चारित्रं ॥१८॥ अनशनावमौदर्य- वृत्तिपरिसंख्यानरसपरित्यागविविक्तशय्यासन -

कायक्लेशा बाह्यं तपः ॥१९॥ प्रायश्चित्तविन-
यवैयावृत्यस्वाध्यायव्युत्सर्गध्यानान्युत्तरं ॥२०॥
नवचतुर्दशपंचद्विभेदायथाक्रमं प्राग्ध्यानात् ॥
२१॥ आलोचनाप्रतिक्रमणतदुभयविवेकव्युत्स-
र्गतपश्छेदपरिहारोपस्थापनाः ॥२२॥ ज्ञानदर्श-
नचारित्रोपचाराः ॥२३॥ आचार्योपाध्यायतप-
स्विशैक्षग्लानगणकुलसंघसाधुमनोज्ञानां ॥२४॥
वाचनापृच्छनानुप्रेक्षाम्नायधर्मोपदेशाः ॥२५॥
बाह्याभ्यंतरोपध्योः ॥२६॥ उत्तमसंहननस्यैका-
ग्रचिंतानिरोधो ध्यानमांतर्मुहूर्तात् ॥२७॥ आ-
र्त्त रौद्रधर्म्यशुक्लानि ॥२८॥ परे मोक्षहेतू ॥२९॥
आर्त्तममनोज्ञस्य संप्रयोगे तद्विप्रयोगाय स्मृ-
तिसमन्वाहारः ॥३०॥ विपरीतं मनोज्ञस्य ॥
॥३१॥ वेदनायाश्च ॥३२॥ निदानं च ॥३३॥ त-
दविरतदेशविरतप्रमत्तसंयतानां ॥३४॥ हिंसा-
नृतस्तेयविषयसंरक्षणेभ्यो रौद्रमविरतदेशवि-
रतयोः ॥३५॥ आज्ञापायविपाकसंस्थानविच-

चाय धर्म्यं ॥३६॥ शुक्ले चाद्ये पूर्वविदः ॥३७॥ परे केवलिनः ॥३८॥ पृथक्त्वैकत्ववितर्कसूक्ष्मक्रियाप्रतिपातिव्युपरतक्रियानिवर्तीनि ॥३९॥ त्र्येकयोगकाययोगायोगानां ॥४०॥ एकाश्रये सवितर्कवीचारे पूर्वे ॥४१॥ अवीचारं द्वितीयं ॥४२॥ वितर्कः श्रुतं ॥४३॥ वीचारोर्थव्यंजनयोगसंक्रांतिः ॥४४॥ सम्यग्दृष्टिश्रावकविरतानंतवियोजकदर्शनमोहक्षपकोपशमकोपशांतमोहक्षपकक्षीणमोहजिनाः क्रमशोऽसंख्येयगुणनिर्जराः ॥४५॥ पुलाकवकुशकुशीलनिर्ग्रंथस्नानका निर्ग्रंथाः ॥४६॥ संयमश्रुतप्रतिसेवनातीर्थलिंगलेश्योपपादस्थानविकल्पतः साध्याः ॥४७॥

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः ।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे ॥९॥
ओं ह्रीं श्रीमदुमास्वामि विरचित तत्त्वार्थसूत्र नवमसूत्राय अर्घं ।
इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे नवमोऽध्यायः ॥९॥

मोहक्षयाज्ज्ञानदर्शनावरणांतरायक्षयाच्च केवलं ॥ १ ॥ बंधहेत्वभावनिर्जराभ्यां कृत्स्नकर्मविप्रमोक्षो मोक्षः ॥२॥ औपशमिकादिभव्यत्वानां च ॥३॥ अन्यत्र केवलसम्यक्त्वज्ञानदर्शनसिद्धत्वेभ्यः ॥४॥ तदनंतरमूर्ध्वं गच्छत्यालोकांतात् ॥५॥ पूर्वप्रयोगादसंगत्वाद्बंधच्छेदात्तथागतिपरिणामाच्च ॥६॥ आविद्धकुलालचक्रवद्व्यपगतलेपालाबुवदेरंडबीजवदग्निशिखावच्च ॥ ७ ॥ धर्मास्तिकायाभावात् ॥८॥ क्षेत्रकालगतिलिंगतीर्थचारित्रप्रत्येकबुद्धबोधितज्ञानावगाहनांतर संख्याल्पबहुत्वतः साध्याः ॥९॥

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः ।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे ॥१॥
ओं ह्रीं श्रीमदुमास्वामि विरचित तत्त्वार्थसूत्रे दशमसूत्राय अर्घं ।
इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे दशमोऽध्यायः ॥१०॥

अक्षरमात्रपदस्वरहीनं व्यंजनसंधिविवर्जितरेफम् । साधुभिरत्र मम क्षमितव्यं को न विमुह्यति शास्त्रसमुद्रे ॥१॥ दशाध्याये परि-

च्छिन्ने तत्वार्थे पठिते सति । फलं स्यादुपवासस्य भाषितं मुनिपुंगवैः ॥२॥ तत्वार्थसूत्रकर्त्तारं गृध्रपिच्छोपलच्छितम् । वन्दे गणीन्द्रसंजातमुमास्वामिमुनीश्वरम् ॥३॥ पढमं चउक्के पढमं पंचमे जाणि पुग्गलं तच्च । छह सत्तमे हि आस्सव अट्ठमे बंधणायव्वा ॥४॥ णवमे संवर णिज्जर दहमे मोक्खं वियाणे हि । इह सत्त तच्च भणियं दह सुत्तेण मुणि देहिं ॥५॥ जं सक्कइ तं कीरइ, जं चण सक्कइ तं च सद्दहणं । सद्दहमाणो जीवो पावइ अयरामरं ठाणं ॥६॥ तव यरणं वयधरणं, संयमसरणं च जीवदयाकरणम् । अंते समाहिमरणं, चउगइ दुक्खं णिवारेई ॥७॥ अरहंत भासियत्थं गणहरदेवेहिं गुंथियं सव्वं । पणमामि भत्तिजुत्तो, सदणाणमहोव्वयं सिरसा ॥८॥ गुरवो पांतु वो नित्यं ज्ञानदर्शननायकाः । चारित्रार्णव गंभीराः मोक्षमार्गोपदेशकाः ॥९॥

कोटिशतं द्वादश चैव कोट्यो लक्षाण्यशीति-स्त्र्यधिकानि चैव । पंचाशदष्टौ च सहस्रसं-ख्यमेतच्छ्रुतं पंचपदं नमामि ॥१०॥

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः ।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे ॥११॥
ॐ ह्रीं श्रीमदुमास्वामि विरचिताय तत्त्वार्थसूत्राय महार्घम् ।
इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रं समाप्तम् ।

जिनवाणी स्तुति

वीर हिमाचलतें निकसी गुरु गौतमके मुखकुण्ड ढरी है,
मोह महाचल भेद चली जगकी जड़ता तप दूर करी है ।
ज्ञान पयोनिधि माँहि रली बहु भंग तरंगनि सों उछरी है,
ता शुचि शारद गंग नदी प्रति मैं अँजुरी निज शीश धरी है ॥१॥
या जग मंदिरमें अनिवार अज्ञान अंधेर छयो अति भारी,
श्रीजिनकी धुनि दीपशिखा सम जो नहिं होति प्रकाशन हारी ।
तो किस भाँति पदारथ पाँति कहाँ लहते रहते अविचारी,
या विधि संत कहैं धनि हैं धनि हैं जिन बैन बड़े उपगारी ॥२॥

क्षमावणी पूजा भाषा।

आसोज वदी प्रतिपदाके दिन भगवानको मेरु पर विराजमान करके पंचमंगल और अभिषेक पाठ बोलकर नित्य नियम पूजा करनेके बाद निम्नलिखित क्षमावणी पूजा करना चाहिये। पश्चात सोलह कारणका अभिषेक करके भगवानको वेदीमें यथास्थान विराजमान करना चाहिये।

छप्पय।

अंग क्षमा जिन धर्म तनों दृढ़ मूल बखानो।
सम्यक रतन संभाल हृदय में निश्चय जानो॥
तज मिथ्या विष मूल और चित निरमल ठानो।
जिन धर्मी सों प्रीत करो सब पातिग भानो॥
रत्नत्रय गह भविक जन जिन आज्ञा सम चालिये।
निश्चय कर आराधना करम रासको जालिये॥

ओं ह्रीं सम्यक रत्नत्रयाय नमः अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं॥ अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं पुष्पांजलि क्षिपेत्॥

अथाष्टक।

नीर सुगंध सुहावनो पदम द्रह को लाय।
जन्म रोग निरवारिये सम्यक् रतन लहाय॥
क्षमा गहो उर जीवड़ा जिनवर वचन गहाय।

ओं ह्रीं निःशंकितांगाय, निःकांक्षितांगाय, निर्विचिकित्सितांगाय, निर्मूढतांगाय, उपगूहनांगाय सुस्थितिकरणांगाय, वात्सल्यतांगाय, प्रभावनांगाय, जन्म मृत्यु विनाशनाय सम्यग्दर्शनायजलं ॥ ओं ह्रीं व्यंजन व्यंजिताय, अर्थ समग्राय, तदुभय समग्राय, कालाध्ययनाय, उपध्यानोपहिताय, विनय लब्धिप्रभावनाय, गुरुवाद्यपन्हव, बहुमानोन्मान, अष्टांग सम्यग्ज्ञानायजलं, ओं ह्रीं अहिंसा व्रताय, सत्य व्रताय, अचौर्यव्रताय, ब्रह्मचर्य व्रताय, अपरिग्रह महाव्रताय, मनो गुप्तये, वचन गुप्तये काय गुप्तये, इर्या समिति, भाषा समिति, एषणा समिति, आदान निक्षेपण, प्रतिष्ठापना समिति, त्रयोदश विध सम्यक चारित्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनायजलं ॥ १ ॥

केसर चंदन लीजिये, संग कपूर घसाय।
अलि पंकति आवत घनी, वास सुगंध सुहाय॥
क्षमा गहो उर जीवड़ा, जिनवर वचन गहाय।
चंदनं ॥२॥
शालि अखंडित लीजिये, कंचन थाल भराय।
जिनपद पूजों भावसों, अक्षय पदको पाय॥
क्षमा गहो उर जीवड़ा, जिनवर वचन गहाय।
अक्षतं ॥३॥
पारिजात अरु केतकी, पहुप सुगंध गुलाब।
श्रीजिन चरण सरोजकूं, पूज हरष चितचाव॥

क्षमा गहो उर जीवड़ा, जिनवर वचन गहाय ।
पुष्पं ॥४॥
शक्कर घृत सुरभी तनो, व्यंजन षट्रस स्वाद ।
जिनके निकट चढ़ायकर हिरदे धरि अहलाद ॥
क्षमा गहो उर जीवड़ा, जिनवर वचन गहाय ।
नैवेद्यं ॥५॥
हाटक मय दीपक रचो, बाति कपूर सुधार ।
शोधित घृत कर पूजिये, मोह तिमिर निरवार ॥
क्षमा गहो उर जीवड़ा, जिनवर वचन गहाय ।
दीपं ॥६॥
कृष्णागर करपूर हो, अथवा दस विधि जान ।
जिन चरणन ढिग खेइये, अष्ट करम की हान ॥
क्षमा गहो उर जीवड़ा, जिनवर वचन गहाय ।
धूपं ॥७॥
केला अम्ब अनार ही, नारिकेल ले दाख ।
अग्र धरो जिनपद तने, मोक्ष होय जिन भाख ॥
क्षमा गहो उर जीवड़ा, जिनवर वचन गहाय ।
फलं ॥८॥

जलफल आदि मिलाय के, अरघ करो हरषाय ॥
दुःख जलांजलि दीजिये, श्रीजिन होय सहाय ॥
क्षमा गहो उर जीवड़ा, जिनवर वचन गहाय ।
अर्घं ॥९॥

जयमाला दोहा।

उनतिस अङ्ग की आरती, सुनो भविक चितलाय
मन वच तन सरधा करो, उत्तम नर भव पाय ।१।

चौपाई।

जैनधर्म में शंक न आनै, सो निःशंकित गुण चित ठानै ।
जप तप कर फल वांछै नाहीं, निःकांक्षित गुण हो जिस माहीं २
पर को देख गिलानि न आनै, सो तीजा सम्यक गुण ठानै ।
आन देवको रंच न मानो, सो निमूढ़त गुण पहिचानो ॥३॥
पर को औगुण देख जु ढाकै, सो उपगूहन श्री जिन भाखै ।
जैन धर्म तैं डिगता देखै, थापै बहुरि स्थिति कर लेखै ॥४॥
जिन धरमी सों प्रीत निबहिये, गऊ बच्छावत बच्छल कहिये।
ज्यों त्यों जैन उद्योत बढ़ावै, सो प्रभावना अङ्ग कहावै ॥५॥
अष्ट अङ्ग यह पालै जोई, सम्यकदृष्टी कहिये सोई ।
अब गुण आठ ज्ञान के कहिये, भाखे श्री जिन मनमें गहिये ६॥
व्यंजन अक्षर सहित पढ़ीजे, व्यंजन व्यंजित अङ्ग कहीजे ।
अर्थ सहित शुध शब्द उचारै, दूजा अर्थ समग्रह धारै ॥७॥

तद्भय तीजा अङ्ग लखीजै, अक्षर अर्थ सहित जु पढ़ीजै ।
चौथा कालाध्ययन विचारै, काल समय लखि सुमरण धारै ८॥
पंचम अङ्ग उपधान बतावै, पाठ सहित तब बहु फल पावै ।
षष्टम विनय सुलब्धि सुनीजै, वाणी बहुत विनय सु पढ़ीजै ९॥
जापै पढ़ै न लोपै जाई, अङ्ग सप्तमगुरु बाद कहाई ।
गुरुकी बहुत विनय जु करीजै, सो अष्टम अङ्गधर सुख लीजै १०
यह आठों अङ्ग ज्ञान बढ़ावै, ज्ञाता मन वच तन कर ध्यावै ।
अब आगे चारित्र सुनीजै, तेरह विधि धर शिव सुख लीजै ११॥
छहों कायकी रक्षा करहैं, सोई अहिंसा व्रत चित धर हैं ।
हित मित सत्य वचन मुख कहिये, सो सतवादी केवल लहिये १२
मन वच काय न चोरी करिये, सोई अचौर्य व्रत चित धरिये ।
मन मथ भय मन रंच न आनै, सो मुनि ब्रह्मचर्य व्रत ठानै १३॥
परिग्रह देख न मूर्छित होई, पंच महाव्रत धारक सोई ।
महाव्रत ये पांचों खरे हैं, सब तीर्थंकर इनको करे हैं ।।१४॥
मन में विकलप रंच न होई, मनोगुप्ति मुनि कहिये सोई ।
वचन अलीक रंच नहिं भाखैं, वचन गुप्ति सो मुनिवर राखैं १५॥
कायोत्सर्ग परीषह सहि हैं, ता मुनि काय गुप्त जिन कहि हैं ।
पंच समिति अब सुनिये भाई, अर्थ सहित भाखों जिन राई १६
हाथ चार जब भूमि निहारैं, तब मुनि इर्य्या पथ पद धारैं ।
मिष्ट वचन मुख बोलैं सोई, भाषा समिति तास मुनि होई ॥१७॥

भोजन छयालिस दूषण टारैं, सो मुनि एषण शुद्ध विचारैं ।
देखके पोथी ले अरु धर हैं, सो आदान निक्षेपण वर हैं ॥१८॥
मल मूत्र एकान्त जु डारैं, परतिष्ठापन समिति संभारैं ।
यह सब अङ्ग उनतीस कहे हैं, जिन भाखे गणधर ने गहे हैं १९॥
आठ आठ तेरह विधि जानों, दर्शन ज्ञान चरित्र सु ठानों ।
तातैं शिवपुर पहुंचो जाई, रतनत्रय की यह विधि भाई ॥२०॥
रतनत्रय पूरण जब होई, क्षिमा क्षिमा करियो सब कोई ।
चैत माघ भादों त्रय बारा, क्षिमा क्षिमा हम उर में धारा ॥२१॥

दोहा ।

यह क्षमावणी आरती, पढ़ै सुनै जो कोय ।
कहै "मल्ल" सरधा करो, मुक्ति श्री फल होय २२ ।

ओं ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शनाय, अष्टविध सम्यग्ज्ञानाय, त्रयोदश विध सम्यक्चारित्राय रत्नत्रयाय अनर्घ पदप्राप्तये महार्घं ।

सोरठा ।

दोष न गहिये कोय, गुणगह पढ़िये भाव सों ।
भूल चूक जो होय, अर्थ विचारि जु शोधिये ॥

इत्याशीर्वादः ।

———

पञ्चपरमेष्ठी आदि की आरती

इहविधि मंगल आरति कीजे, पंच परमपद भज सुख लीजे ।।टेक।।
पहली आरती श्री जिनराजा, भव-दधिपार उतार जिहाजा ।
इहविधि मंगल आरति कीजे पंच परमपद भज सुख लीजे ।।१।।
दूसरि आरति सिद्धनकेरी, सुमरन करत मिटै भवफेरी ।
इहविधि मंगल आरति कीजे, पंच परमपद भज सुख लीजे ।।२।।
तीजी आरति सूर मुनिंदा, जनम मरन दुख दूर करिंदा ।
इहविधि मंगल आरति कीजे, पंच परमपद भज सुख लीजे ।।३।।
चौथी आरति श्रीउवझाया, दर्शन देखत पाप पलाया ।
इहविधि मंगल आरति कीजे, पंच परमपद भज सुख लीजे ।।४।।
पांचमि आरति साधु तिहारी, कुमति-विनाशन शिव-अधिकारी ।
इहविधि मंगल आरति कीजे, पंच परमपद भज सुख लीजे ।।५।।
छट्ठी ग्यारहप्रतिमा धारी, श्रावक वंदों आनँदकारी ।
इहविधि मंगल आरति कीजे, पंच परमपद भज सुख लीजे ।।६।।
सातमि आरति श्रीजिनवाणी 'द्यानत' सुरगमुकति सुखदानी ।
इहविधि मंगल आरति कीजे, पंच परमपद भज सुख लीजे ।।७।।

———

दीपमालिका विधान ।

निर्वाणोत्सव ।

श्री शुभ मिती कार्तिक वदी अमावस्या के प्रातःकाल करीब ४ बजे शौचादि से निवृत्त होकर स्नानादि प्रातःकालीन क्रियायें करके श्रीमहावीर स्वामीका निर्वाण कल्याणक उत्सव मनानेके लिये श्रीमंदिरजी में जाना चाहिये । वहां पर खूब ठाठबाटसे नृत्य महोत्सव, गायनवादित्रादिके साथ नित्य नियम पूजा करके श्री महावीरस्वामी की पूजा करनी चाहिये । महावीर स्वामीकी पूजामें गर्भ, जन्म, तप और ज्ञान कल्याणकका अर्घ चढ़ानेके बाद प्रिय मधुर ध्वनिसे निर्वाण काण्ड बोले, फिर मोक्ष कल्याणक का पद्य बोलकर उपस्थित सभी स्त्री-पुरुषों को अर्घ सहित निर्वाणजीका लाडू चढ़ाना चाहिये । इस वक्त वादित्रादिकी ध्वनिसे मंदिरको गुञ्जायमान करदेना चाहिये ।

निर्वाणकांड भाषा ।

दोहा ।

वीतराग वंदौं सदा, भावसहित सिरनाय ।
कहूं कांड निर्वाणकी भाषा सुगम बनाय ॥१॥

चौपाई ।

अष्टापद आदीश्वर स्वामी, वासुपूज्य चंपापुरिनामि ।
नेमिनाथ स्वामी गिरनार, वंदौं भावभगति उर धार ॥२॥
चरम तीर्थंकरचरम शरीर, पावापुरि स्वामी महावीर ।
शिखरसमेद जिनेसुर बीस, भावसहित वंदौं निश दीस ॥३॥

वरदतराय रु इन्द मुनिंद, सायर दत्त आदिगुणवृंद।
नगरतारवर मुनि उठ कोडि, वंदों भाव सहित कर जोडि॥४॥
श्री गिरनार शिखर विख्यात, कोडि वहत्तर अरु सौ सात।
संबु प्रदुम्न कुमर द्वै भाय, अनिरुध आदि नमं तसु पाय॥५॥
रामचंद्रके सुत द्वै वीर, लाडनरिंद आदि गुणधीर।
पांचकोडि मुनि मुक्तिमझार, पावागिरि वंदों निरधार॥६॥
पांडव तीन द्रविड़राजान, आठकोडि मुनि मुकति पयान।
श्रीशत्रुंजयगिरि के सीस, भावसहित वंदों निशदीस॥७॥
जे बलभद्र मुकतिमें गये, आठकोडि मुनि औरहु भये।
श्रीगजपंथ शिखर सुविशाल, तिनके चरण नमं तिहुंकाल॥८॥
राम हनू सुग्रीव सुडील, गवयगवाख्य नील महानील।
कोडि निन्याणवं मुक्ति पयान, तुंगीगिरि वंदों धरि ध्यान॥९॥
नंग अनंग कुमार सुजान, पांचकोडि अरु अर्घ प्रमान।
मुक्ति गये सोनागिरि शीस, ते वंदों त्रिभुवनपति ईस॥१०॥
रावणके सुत आदिकुमार, मुक्ति गये रेवातट सार।
कोटि पंच अरु लाख पचास, ते वंदों धरि परम हुलास॥११॥
रेवा नदी सिद्धवर कूट, पश्चिम दिशा देह जहँ छूट।
द्वै चक्री दश कामकुमार, ऊठकोडि वंदों भव पार॥१२॥
बडवानी बडनयर सुचंग, दक्षिण दिशि गिरिचूर उतंग।
इंद्रजीत अरु कुम्भ जु कर्ण, ते वंदों भवसागर तर्ण॥१३॥

सुवरण भद्र आदि मुनि चार, पावागिरिवर शिखर मँझार।
चेलना नदीतीर के पास, मुक्ति गये वंदों नित तास ॥१४॥
फलहोड़ी बडगाम अनूप, पश्चिम दिशा द्रोणगिरि रूप।
गुरुदत्तादि मुनीसुर जहां, मुक्ति गये वंदों नित तहां ॥१५॥
बाल महबाल मुनि दोय, नागकुमार मिले त्रय होय।
श्रीअष्टापद मुक्तिमँझार, ते वंदों नित सुरत सँभार ॥१६॥
अचलापुर की दिश ईसान, तहां मेढ़गिरि नाम प्रधान।
साढ़े तीन कोडि मुनिराय, तिनके चरण नमूं चितलाय ॥१७॥
वंसस्थल वनके ढिग होय, पश्चिमदिशा कुंथुगिरि सोय।
कुलभूषण दिशभूषण नाम, तिनके चरणनि करूं प्रणाम १८॥
जसरथ राजाके सुत कहे देश कलिंग पांचसौ लहे।
कोटिशिला मुनि कोटि प्रमान, वंदन करूं जोर जुगपान १९॥
समवसरण श्रीपाशर्वजिनंद, रेसिंदीगिरि नयनानंद।
वरदत्तादि पंच ऋषिराज, ते वंदों नित धरम जिहाज ॥२०॥
मथुरापुर पवित्र उद्यान, जंबूस्वामीजी निर्वान।
चरम केवली पंचम काल, ते वंदों नित दीन दयाल ॥२१॥
तीनलोकके तीरथ जहां, नित प्रति वंदन कीजे तहां।
मनवचकायसहित सिर नाय, वंदन करहिं भविक गुणगाय २२
संवत सतरहसौ इकताल, आश्विन सुदि दशमी सुविशाल।
'भैया' वंदन करहिं त्रिकाल, जय निर्वाणकांड ॥२३॥ इति

महावीराष्टकस्तोत्र

छंद शिखरिणी ।

यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावाश्चिदचितः
समंभांति ध्रौव्यव्ययजनिलसंतोंतरहिताः ।
जगत्साक्षी मार्गप्रकटनपरो भानुरिवयो महा-
वीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे (नः) ॥१॥

अताम्रं यच्चक्षुः कमलयुगलं स्पंदरहितं
जनान्कोपापायं प्रकटयति वाभ्यंतरमपि ।
स्फुटंमूर्तिर्यस्य प्रशमितमयी वातिविमला,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे (नः) ॥२॥

नमन्नाकेंद्राली मुकुटमणिभाजालजटिलं,
लसत्पादांभोजद्वयमिह यदीयं तनुभृतां ।
भवज्ज्वालाशांत्यै प्रभवति जलं वा स्मृतमपि,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे (नः) ॥३॥

यदर्चाभावेन प्रमुदितमना दर्दुर इह,
क्षणादासीत्स्वर्गी गुणगणसमृद्धः सुखनिधिः ।
लभंते सद्भक्ताः शिवसुखसमाजं किमुतदा,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे (नः) ॥४॥

कनत्स्वर्णाभासोऽप्यपगततनुर्ज्ञाननिवहो,
विचित्रात्माप्येको नृपतिवरसिद्धार्थतनयः ।
अजन्मापि श्रीमान् विगतभवरागोद्भुतगतिर्,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे (नः) ।५॥

यदीया वाग्गंगा विविधनयकल्लोलविमला,
बृहज्ज्ञानांभोभिर्जगति जनतां या स्नपयति ।
इदानीमप्येषा बुधजनमरालैः परिचिता,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे (नः) ॥६॥

अनिर्वारोद्रेकस्त्रिभुवनजयी काम सुभटः,
कुमारावस्थायामपि निजबलाद्येन विजितः ।
स्फुरन्नित्यानंदप्रशमपदराज्याय स जिनः,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे (नः) ॥७॥

महामोहातंकप्रशमनपराकस्मिकभिषङ् निरापेक्षो,
बंधुर्विदितमहिमा मंगलकरः ।
शरण्यः साधूनां भवभयभृतामुत्तमगुणो,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे (नः) ॥८॥

महावीराष्टकं स्तोत्रं भक्त्या भागेंदुना कृतं,
यः पठेच्छृणुयाच्चापि स याति परमां गतिं ॥९॥

दिवाली-पूजा।

जिस दिन दिवाली हो उस दिन सायंकालमें शुभ वेला शुभ नक्षत्रमें निम्न प्रकार पूजा करके नई वहीका मुहूर्त करें। तथा दीपमालिका की रोशनी करें।

एक ऊंची चौकी पर थाल या रकेबी रखकर उसमें केशर से ॐ लिखना चाहिये. उसी चौकी के आगे दूसरी चौकी पर शास्त्रजी या जिनवाणी की पुस्तक विराजमान करना चाहिये। इन दोनों चौकियों के आगे एक छोटी चौकी पर पूजा की सामग्री तैयार रखना चाहिये और इसी के पास एक दूसरी छोटी चौकी पर थाल रखकर उसमें पूजा की सामग्री चढ़ाना चाहिये। पूजा करने वाले को पूर्व या उत्तर मुख करके पूजा करना चाहिये। जो कुटुम्बमें बड़ा हो या दूकान का मालिक हो वह चित्त में एकाग्रता करके पूजा करें और उपस्थित सब लोग पूजा बोलें तथा शांतिसे सुनें। यहां पर व्यापारकी वहीमें केशर से स्वस्तिक लिखकर तथा दवात कलमके मोली बांधकर सामने रख लेना चाहिये। पूजा प्रारम्भ करनेके पहले उपस्थित सब सज्जनों को नीचे लिखे श्लोक बोलकर केशरका तिलक कर लेना चाहिये।

तिलक मंत्र।

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमोगणी।
मंगलं कुंद कुंदाद्यो, जैनधर्मोऽस्तु मंगलं ॥१॥

तिलक करनेके बाद साधारण नित्य नियम पूजा करके १५४ वें पृष्ठमें छपी हुई महावीरस्वामी की और १५० वें पृष्ठमें

छपी हुई सरस्वती पूजा करना चाहिये। सरस्वती पूजा में फल चढ़ाने के बाद आगेका पद्य बोलकर शास्त्रजीके लिये एक शुद्ध वस्त्र या बेष्टन चढ़ाना चाहिये। पूजा कर चुकनेके पश्चात रकेबीमें कपूर प्रज्वलित करके सबको खड़े होकर खूब ललित ध्वनिसे नीचे लिखी आरती बोलना चाहिये।

जिनवाणी माता की आरती।

जय अम्बे वाणी, माता जय अम्बे वाणी।
तुमको निश दिन ध्यावत सुरनर मुनी ज्ञानी॥ टेर॥
श्रीजिन गिरतें निकसी, गुरु गौतम वाणी।
जीवन भ्रम तम नाशन दीपक दरशाणी॥
जय अम्बे वाणी, माता जय अम्बे वाणी॥१॥

कुमत कुलाचल चूरण, वज्र सु सरधानी।
नव नियोग निक्षेपण, देखन दरपाणी॥
जय अम्बे वाणी, माता जय अम्बे वाणी॥२॥

पातक पंक पखालन, पुण्य परम पाणी।
मोहमहार्णव डूबत, तारण नौकाणी॥
जय अम्बे वाणी, माता जय अम्बे वाणी॥३॥

लोकालोक निहारण, दिव्य नेत्र स्थानी।
निज पर भेद दिखावन, सूरज किरणानी॥
जय अम्बे वाणी, माता जय अम्बे वाणी॥४॥

श्रावक मुनिगण जननी, तुमही गुणखानी ।
सेवक लख सुखदायक, पावन परमाणी ॥
जय अम्बे वाणी, माता जय अम्बे वाणी ॥५॥

पश्चात नीचे लिखे अनुसार बहियोंमें स्वतिकादि लिखकर वीर संवत, विक्रम संवत, इस्वीसन, मिती, वार, तारीख आदि लिखना चाहिये ।

श्री महावीर स्वामिने नमः ।



श्री

श्री लाभ श्री श्री श्री शुभ

श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री

श्री ऋषभायनमः श्री महावीर स्वामिने नमः

श्री गौतमगणधराय नमः श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै नमः

श्री केवलज्ञान लक्ष्मी देव्यै नमः ।

—: * :—

विशेष पूजा-संग्रह

श्री सम्मेदशिखर पूजा।

दोहा।

सिद्धक्षेत्र तीरथ परम, है उत्कृष्ट सुथान।
शिखर समेद सदा नमूं, होय पापकी हानि ॥१॥
अगनित मुनि जहंतैं गये लोक शिखरके तीर।
तिनके पद पंकज नमूं, नाशों भवकी पीर ॥२॥

अडिल्ल छंद।

है उज्ज्वल यह क्षेत्र सु अति निरमल सही।
परम पुनीत सुठौर महागुणकी मही ॥
सकल सिद्धि दातार, महा रमणीक है।
वंदूं निज सुख हेत, अचल पद देत है ॥३॥

सोरठा।

शिखर समेद महान, जगमें तीर्थ प्रधान है।
महिमा अद्भुत जान, अल्पमती मैं किम कहूं ॥४॥

चाल सुन्दरी छन्द ।

सरस उन्नत क्षेत्र प्रधान है,
अति सु उज्ज्वल तीर्थ महान है ।
करहिं भक्तिसु जे गुण गायकै,
लहहिं सुर शिवके सुख जायकै ॥५॥

अडिल्ल छन्द ।

सुर नर हरि इन आदि और वंदन करैं ।
भव सागरसे तिरैं नहीं भवमें परैं ॥
जन्म जन्मके पाप सकल छिनमें टरैं ।
सुफल होय तिन जन्म शिखर दरशन करैं ॥६॥

स्थापना. अडिल्ल छन्द ।

गिरि सम्मेद तैं बीस जिनेश्वर शिव गये ।
और असंख्या मुनी तहां ते सिध भये ॥
वंदूं मन वच काय नमूं शिर नायकै ।
तिष्ठो श्रीमहाराज सबै इत आयकै ॥१॥

दोहा ।

श्रीसम्मेद शिखर सदा पूजूं मन वच काय ।
हरत चतुरगति दुःखको मन वांछित फलदाय ॥२॥

ओं ह्रीं श्रीसम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती श्री बीस तीर्थंकर और असंख्यात मुनि मुक्ति पधारे, तिनके चरणारविन्दकी पूजा अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनं। परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अथाष्टक. गीता छंद।

मोहन झारी रतन जड़िये मांहि गंगा जल भरो।
जिनराज चरण चढ़ाय भविजन जन्म मृत्यु जरा हरो॥
संसार उदधि उबारनेको लीजिये सुध भावसों।
सम्मेद गिरपर बीस जिन मुनि पूज हरष उछाव सों॥१॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती बीस तीर्थंकरादि असंख्यात मुनिमुक्ति पधारे, तिनके चरणकमलकी पूजा जन्ममृत्युरोगविनाशनाय जलं० ॥१॥

जाकी सुगंध थकी अहो अलि गुंजते आवे घने।
सो मलय संग घसाय केसर पूज पद जिनवर तने॥
भव आताप निवारनेको लीजिये सुध भावसों।
सम्मेद गिरपर बीस जिन मुनि पूज हरष उछाव सों॥२॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवतसेती बीस तीर्थंकरादि असंख्यात मुनि मुक्ति पधारे, तिनके चरण कमलकी पूजा भव आताप विनाशनाय चंदनं० ॥२॥

अक्षत अखंडित अतिहि सुन्दर जोति शशि सम लीजिये।
शुभ शाल उज्ज्वल तोय धोय सु पूज प्रभु पद कीजिये॥

पद अक्षयकारण लेय भविजन शुद्ध निरमल भावसों ।
सम्मेद गिरपर बीस जिन मुनि पूज हरष उछाव सों ॥३॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्र परवत सेती बीस तीर्थंकरादि असंख्यात मुनि मुक्ति पधारे. तिनके चरण कमल की पूजा अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं० ॥३॥

है मदन दुष्ट अत्यंत दुर्जय हते सबके प्रान हो ।
ताके निवारण हेत कुसुम मंगाय रंज न घ्रान हो ॥
जाकी सुवास निहार षटपद दौरि आवे चावसों ।
सम्मेदगिर पर बीस जिनमुनि पूज हरष उछाव सों ॥४॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती बीस तीर्थंकरादि असंख्यात मुनि मुक्ति पधारे. तिनके चरणकमलकी पूजा काम बाण विध्वंसनाय पुष्पं० ॥४॥

रस पूर रसना घ्रान रंजन चक्षु प्रिय अति मिष्ट हो ।
जिनराज चरण चढ़ाय उत्तम क्षुधा होवे नष्ट हो ॥
भरि थाल कंचन विविध व्यंजन लीजिये सुध भावसों ।
सम्मेद गिरपर बीस जिन मुनि पूज हरष उछाव सों ॥५॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती बीस तीर्थंकरादि असंख्यात मुनि मुक्ति पधारे. तिनके चरणकमलकी पूजा क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं० ॥५॥

त्रैलोक्यगर्भित ज्ञान जाको मोह निजवस करलियो ।
अज्ञान तममें पड़्यो चेतन चतुरगति भरमन कियो ॥

छिन मांहि मोह विध्वंस होवै आरती कर चाव सों।
सम्मेद गिर पर बीस जिन मुनि पूज हरष उछाव सों ॥६॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती बीस तीर्थंकरादि असंख्यात मुनि मुक्ति पधारे, तिनके चरण कमलकी पूजा मोहांधकार विनाशनाय दीपं० ॥६॥

शुभ अगर अम्बर बास सुन्दर धूप प्रभु ढिग खेवही।
ए दुष्टकर्म प्रचण्ड तिनको होय तत छिन छेवही॥
सो धूप वसु विधि जरन कारण लीजिये सुध भावसों।
सम्मेद गिर पर बीस जिनमुनि पूज हरष उछाव सों ॥७॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती बीस तीर्थंकरादि असंख्यात मुनि मुक्ति पधारे, तिनके चरण कमलकी पूजा अष्टकर्म विध्वंशनाय धूपं० ॥७॥

बादाम श्रीफल लौंग पिस्ता लेय शुद्ध सम्हालही।
सेकार दाख अनार केला तुरत टूटे डाल ही॥
भवि लेय उत्तम हेत सिवके छूट विधिके दावसों।
सम्मेद गिर पर बीस जिनमुनि पूज हरष उछाव सों ॥८

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती बीस तीर्थंकरादि असंख्यात मुनि मुक्ति पधारे, तिनके चरण कमलकी पूजा मोक्षफल प्राप्तये फलं० ॥८॥

छप्पय चाल।

जन्म मृत्यु जल हरैं, गंध आताप निवारै।
तंदुल पदके अक्षय मदन कूं सुमन विदारै॥

क्षुधा हरन नैवेद्य दीप ते ध्वान्त नसावै।
धूप दहै वसु कर्म मोक्ष सुख फल दरसावै॥
ए वसु द्रव्य मिलायकै अर्घ रामचन्द्र कीजिये।
कर पूजा गिरशिखर की नरभवका फल कीजिये॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती बीस तीर्थंकरादि असंख्यात मुनि मुक्ति पधारे, तिनके चरण कमलकी पूजा अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं० ॥९॥

आगे प्रत्येक अर्घ

सोरठा।

सकल कर्म हनि मोक्ष, परिवा सित वैसाख ही।
जजौं चरण गुण धोख, गये समेदाचल थकी॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती ज्ञानधर कूटके दरशन फल एक कोड़ उपवास और श्रीकुंथुनाथ तीर्थंकरादि छानवे कोड़ा कोड़ी छानवे कोड़ बत्तीस लाख छानवे हजार सात सै बैयालिस मुनि मुक्ति पधारे, तिनके चरणकमलकी पूजा अर्घं०

दोहा।

जेठ सुकल चउदस दिवस मोक्ष गये गुणनाह।
जजौं मोक्ष जिनके चरण कर करि बहु उत्साह॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती सुदत्तवर कूटके दरशन फल एक कोड़ उपवास श्री धरमनाथ तीर्थङ्करादि गुण

तीस कोड़ा कोड़ी उन्नीस कोड़ नौ लाख नौ हजार सात सै पंचानवे मुनि मुक्ति पधारे, तिनके चरण कमलकी पूजा अर्घं०

दोहा।

चैत सुकल एकादशी शिवपुरमें प्रभु जाय।
लहि अनंत सुख थिर भये आतमसूं लव ल्याय॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती अविचल कूटके दरशन फल एक कोड़ि उपवास और श्री सुमतनाथ तीर्थंकरादि एक कोड़ाकोड़ी चौरासी कोड़ बहत्तर लाख इक्यासी हजार सात सै मुनि मुक्ति पधारे, तिनके चरणकमल की पूजा अर्घं०

दोहा।

जेठ सुकल चउदस दिना सकल कर्म क्षय कीन।
सिद्ध भये सुखमय रहैं हुए अष्टगुण लीन॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर क्षेत्र परवत सेती प्रभास कूटके दरशन फल एक कोड़ उपवास और श्रीशान्तिनाथ तीर्थङ्करादि नौ कोड़ा कोड़ी नौ लाख नौ हजार नौ सौ निन्यानवे मुनि मुक्ति पधारे, तिनके चरणकमल की पूजा अर्घं०

दोहा।

वदि अषाढ़ अष्टमि दिवस मोक्ष गये मुनि ईश।
जजूं भक्तितें विमल प्रभु अर्घ लेय नमि शीश॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती सुवीर कुल कूट के दरशन फल एक कोड़ उपवास और विमलनाथ तीर्थङ्करादि सत्तर

कोड़ा कोड़ी साठ लाख छः हजार सात सै बयालिस मुनिमुक्ति पधारे, तिनके चरणकमल की पूजा अर्घं०

दोहा ।

फागुन सुदि सप्तमि दिना हनि अघातिया राय ।
जगत फांस कूं काटकै मोक्ष गये जिनराय ॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती प्रभास कूटके दरशन फल एक कोड़ उपवास और श्रीसुपार्श्वनाथ तीर्थङ्करादि उनचास कोड़ा कोड़ चौरासी कोड़ बहत्तर लाख सात हजार सात सै बयालिस मुनि मुक्ति पधारे, तिनके चरणकमल की पूजा अर्घं०

दोहा ।

चैत सुकल पंचम दिना हनि अघातिया राय ।
मोक्ष भये सुरपति जजैं मैं जजहूं गुण गाय ॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती सिद्धवर कूटके दर्शन फल बत्तीस कोड़ उपवास और श्रीअजितनाथ तीर्थङ्करादि एक अरब अस्सी कोड़ चौपन लाख मुनि मुक्ति पधारे, तिनके चरण कमलकी पूजा अर्घं०

दोहा

जुगल नाग तारे प्रभु पार्श्वनाथ जिनराय ।
सावन सुदि सातें दिवस लहे मुक्ति शिव जाय ॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती सुवरनभद्र कूटके दरशन फल सोलह कोड़ उपवास और श्रीपार्श्वनाथ तीर्थङ्करादि

बयासी करोड चौरासी लाख पैंतालीस हजार सात सै बयालिस मुनि मुक्ति पधारे. तिनके चरण कमल की पूजा अर्घं०

सोरठा।

हनि अघाति शिव थान, चतुर्दशी वैसाख वदि।
जजूं मोक्ष कल्यान, गये समेदाचल थकी॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती मित्रधर कूटके दरशन फल एक कोड़ उपवास और श्री नमिनाथ तीर्थङ्करादि नौ सै कोड़ा कोड़ी एक अरब पैंतालिस लाख सात हजार नौ सै बयालिस मुनि मुक्ति पधारे, तिनके चरणकमलकी पूजा अर्घं०

सोरठा।

सरव करम हनि मोक्ष, चैत अमावस शिव गये।
मैं जजहूं वसु धोक, चतुर निकाय सुरा जजैं॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती नाटक नामा कूटके दरशन फल छानवे कोड़ उपवास और श्रीअरहनाथ तीर्थंकरादि निन्यानवे कोड़ निन्यानवे लाख निन्यानवे हजार नौ सै निन्यानवे मुनि मुक्ति पधारे, तिनके चरण कमलकी पूजा अर्घं०

दोहा।

फागुन पंचमि सुकल ही शेष कर्म हनि मोक्ष।
गए समेदाचल थकी, शिवपद हित गुण धोक॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती संबल कूटके दरशन फल एक कोड़ उपवास और श्रीमल्लिनाथ तीर्थङ्करादि छानवे कोड़ मुनि मुक्ति पधारे तिनके चरणकमलकी पूजा अर्घं०

सोरठा।

हनि अघाति शिवथान सावन सुदि पूनमगए।
जजूं मोक्षकल्यान सुरनर खगपति मिलि जजैं॥

ओं ह्रीं श्रीसम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती संकुल नामा कूट के दरशन फल एक कोड़ि उपवास और श्रेयांसनाथ तीर्थंकरादि छानवे कोड़ा कोड़ छानवे कोड़ छानवे लाख नौ हजार पांच सौ बयालिस मुनिमुक्ति पधारे तिनके चरणकमलकी पूजा अर्घं०

सोरठा।

गये पुष्प निरवान भादव सुदि अष्टम दिना।
पूजूं मोक्ष कल्यान सब सुर मिल पूजा करी॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती सुप्रभु कूटके दरशन फल एक कोड़ उपवास और श्रीपुष्पदंत तीर्थंकरादि एक कोड़ा कोड़ी निन्यानवे लाख सात हजार चार सौ अस्सी मुनि मुक्ति पधारे तिनके चरण कमलकी पूजा अर्घं०

सोरठा

हनि अघाति जिनराय, चौथ कृष्ण फागुन विषै।
जजूं चरण गुणगाय, मोक्ष समेदाचल थकी॥

ओं ह्रीं श्रीसम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती मोहन कूटके दरशन फल एक कोड़ उपवास और श्रीपद्मप्रभु तीर्थंकरादि निन्यानवे कोड़ि सत्यासी लाख तितालिस हजार सात सै सत्ताइस मुनि मुक्ति पधारे. तिनके चरण कमलकी पूजा अर्घं०

सोरठा।

हनि अघाति निरवान फागुन द्वादशि कृष्ण ही।
जजूं मोक्षकल्यान, गए सुरासुर पद जजों॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती निर्जर नामा कूटके दरशन फल एक कोड़ उपवास और श्रीमुनिसुव्रतनाथ तीर्थङ्करादि निन्यानवे कोड़ा कोड़ सत्यानवे कोड़ि नौ लाख नौ सौ निन्यानवे मुनि मुक्ति पधारे तिनके चरण कमल की पूजा अर्घं।

सोरठा।

शेषकर्म हनि मोक्ष फागुन सुकल जु सप्तमी।
जजूं गुणनिके थोक, गये समेदाचल थकी॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती ललित कूटके दरशन फल सोलह लाख उपवास और श्रीचन्द्रप्रभु तीर्थङ्करादि नौसौ चौरासी अरब बहत्तर कोडि असी लाख चौरासी हजार पांच सौ पंचानवे मुनि मुक्ति पधारे तिनके चरणकमलकी पूजा अर्घं०

सोरठा।

गये मोक्ष भगवान अष्टम सित आसौजकी।
देहु देहु शिवथान, वसुविधि पदपंकज जजूं॥

ओं ह्रीं श्रीसम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती विद्युतवर कूट के दर्शन फल एक कोड़ उपवास और श्री शीतलनाथ तीर्थङ्करादि अठारह कोड़ा कोड़ि बयालीस कोड़ बत्तीस लाख बैयालिस

हजार नौ सौ पांच मुनि मुक्ति पधारे तिनके चरन कमल की पूजा अर्घम्०

दोहा।

चैतकृष्ण पूनम दिवस निज आतमको चीन।
मुक्ति स्थानक जायकें हुए अष्ट गुण लीन॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती स्वयंभू कूटके दर्शन फल एक कोड़ उपवास और श्री अनन्तनाथ तीर्थङ्करादि छानवे कोड़ा कोड़ सत्तर कोड़ सत्तर लाख सत्तर हजार सात सै मुनि मुक्ति पधारे तिनके चरन कमल की पूजा अर्घम्०

सोरठा।

शेष कर्म निरवान चैत शुकल षष्टम विषैं।
जजों गुणोघ उचार मोक्ष वरांगन पति भये॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती धवल कूटके दर्शन फल बयालीस लाख उपवास और श्री सम्भवनाथ तीर्थङ्करादि नौ कोड़ा कोड बहत्तर लाख बयालीस हजार पांच सौ मुनि मुक्ति पधारे तिनके चरन कमलकी पूजा अर्घम्०

दोहा।

अष्टम सित वैशाख की गए मोक्ष हनि कर्म।
जजूं चरन उर भक्ति कर देहु देहु निज धर्म॥

ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र परवत सेती आनन्द कूटके दर्शन फल एक लाख उपवास और श्री अभिनन्दन तीर्थङ्करादि बहत्तर कोड़ा कोड़ि सत्तर कोड़ सत्तर लाख बयालीस हजार सात सै मुनि मुक्ति पधारे तिनके चरन कमलकी पूजा अर्घम्०

चौपाई छन्द ।

माघ असित चउदश विधि सैन,
हनि अघाति पाई शिव दैन ।
सुर नर खग कैलाश सुथान,
पूजैं मैं पूजूं धर ध्यान ॥

दोहा ।

रिषभ देव जिन सिध भये गिर कैलाशसे जोय ।
मन वच तन कर पूज हूं शिखर नमूं पद सोय ॥

ओं ह्रीं श्री कैलाश सिद्धक्षेत्र परवत सेती माघ सुदी १४ को श्री आदिनाथ तीर्थङ्करादि असंख्य मुनि मुक्ति पधारे तिनके चरण कमलको पूजा अर्घम०

दोहा ।

वासु पूज्य जिनकी छवी अरुन वरन अविकार ।
देहु सुमति विनती करूं ध्याऊं भवदधितार ॥
वासु पूज्य जिन सिध भये चम्पापुरसे जेह ।
मन वच तन कर पूज हूं शिखर सम्मेद यजेह ॥

ओं ह्रीं श्री चम्पापुर सिद्धक्षेत्र परवत सेती भादवा सुदी १४ श्री वासुपूज्य तीर्थङ्करादि असंख्य मुनि मुक्ति पधारे तिनके चरण कमलकी पूजा अर्घम०

सुकल षाढ़ सप्तमि दिवस शेष कर्म हनि मोक्ष ।
शिव कल्याण सुरपति कियो जजूं चरण गुण धोख ॥
नेमनाथ निज सिद्ध भये सिद्ध क्षेत्र गिरनार ।
मन वच तन कर पूज हूं भवदधि पार उतार ॥

ओं ह्रीं श्री गिरनार सिद्धक्षेत्र परवत सेती असाढ़ सुदि सातैं को श्री नेमिनाथ तीर्थङ्करादि बहत्तर कोड़ सात से मुनि मुक्ति पधारे तिनके चरण कमलकी पूजा अर्घम्०

दोहा ।

कार्तिक वदि मावस गये शेष कर्म हनि मोक्ष ।
पावापुरतें वीर जी जजूं चरण गुण धोक ॥
महावीर जिन सिद्ध भये पावापुर से जोय ।
मन वच तन कर पूजहूं शिखर नमूं पद दोय ।

ओं ह्रीं पावापुर सिद्धक्षेत्र परवत सेती कार्तिक बदी आमावसको श्री वर्द्धमान तीर्थङ्करादि असंख्य मुनि मुक्ति पधारे तिनके चरण कमलकी पूजा अर्घम्०

दोहा ।

सुधर्मादि गणेश गुरु अंतम गौतम नाम ।
तिन सबकूं लै अर्घ तैं पूजूं सब गुण धाम ॥

ओं ह्रीं श्री सुधर्मादि गौतम गणधर देव गुणावा ग्रामके उद्यान आदि भिन्न भिन्न स्थानोंसे निरवान पधारे तिनके चरणारविंदकी पूजा अर्घम् ।

दोहा।

या विधि तीर्थ जिनेश के वंदूं शिखर महान।
और असंख्य मुनीश जे पहुंचे शिवपद थान।
सिद्ध क्षेत्र जे और हैं भरतक्षेत्रके मांहि।
और जे अतिशय क्षेत्र हैं कहे जिनागम मांहि॥
तिनके नाम सु लेत ही पाप दूर हो जाय।
ते सब पूजूं अर्घ ले भव भवको सुखदाय॥

ओं ह्रीं श्री भरत क्षेत्र सम्बन्धी सिद्धक्षेत्र और अतिशय क्षेत्रेभ्यो अर्घम्०

सोरठा।

दीप अढ़ाई मांहि सिद्धक्षेत्र जे और हैं।
पूजूं अर्घ चढ़ाय भव भवके अघ नाश हैं॥

अडिल्ल छंद।

पूजूं तीस चौवीस महासुख दाय जू।
भूत भविष्यत वर्तमान गुण गाय जू॥
कहे विदेह के वीस नमूं सिरनाय जू।
और अर्घ बनाय सु विघन पलाय जू॥

ओं ह्रीं श्री तीस चौबीसी और भूत भविष्यत वर्त्तमान और विदेह क्षेत्रके बीस जिनेश्वर तिनके चरण कमलकी पूजा अर्घम्०

दोहा।

कृत्याकृत्यम जे कहे तीन लोकके मांहि।
ते सब पूजूं अर्घ ले हाथ जोर सिरनाय॥

ओं ह्रीं श्री ऊर्ध्वलोक मध्यलोक पाताल लोक सम्बन्धी जिन मंदिर जिन चैत्यालयेभ्यो नमः अर्घम०

दोहा।

तीरथ परम सुहावनूं शिखर सम्मेद विसाल।
कहत अल्प बुधि युक्ति सें सुखदाई जयमाल।

अथ जयमाला।

छंद पद्धड़ी।

जय प्रथम नमूं जिन कुंथदेव, जय धर्म तनी नित करत सेव।
जय सुमति सुमति सुध बुद्ध देन, जय शांति नमूं नित शांति हेत
जय विमल नमूं आनन्द कन्द, जय सुपार्स नमूं हनि पास फंद।
जय अजित गये शिव हानि कर्म, जय पार्स करी जुग उग्र सर्म २॥
पश्चिम दिस जानूं टोंक एव, बंदे चहुंगतिको होय छेव।
नर सुर पदकी तो कौन बात, पूजे अनुक्रमतैं मुक्ति जात॥३॥
जय नेमि तनूं नित धरूं ध्यान, जय अरि हर लीनों मुक्ति थान।
जय मल्लि मदन जय शील धार, जय हंस गये भव पार पार॥४॥
जय सुमति सुमति दाता महेश, जय पद्म नमूं तम हर दिनेश।
जय मुनि सुव्रत गुण गण गरिष्ट, जय चन्द्र करें आताप नष्ट ५

जय शीतल जय भवकी आताप, जय अनंत नमं नस जात पाप।
जय संभव भव की हरो पीर, जय अभय करो अभिनंद वीर ६।।
पूरव दिस द्वादस कूट जान, पूजन होवत है असुभ हान।
फिर मूल मंदिर कूं करूं प्रनाम, पावै शिव रमनी वेग धाम ७।।

घत्ता छन्द।

श्री सिद्ध सु क्षेत्रं अति सुख देतं तुरतं भव दधि पार करं।
अरि कर्म विनासन शिव सुख कारन जय गिरवर जगता तारं ८।।

चाल छप्पय।

प्रथम कुंथ जिन धर्म सुमति अरुशांति जिनंदा,
विमल सुपारस अजित पार्श्व मेटं भवफंदा।
श्री नमि अरह जु मल्लि श्रेयांस सुविधि निधि कंदा।
पद्म प्रभु महाराज और मुनि सुव्रत चन्दा।
शीतलनाथ अनंत जिन सम्भव जिन अभिनंदनजी।
बीस टोंक पर बीस जिनेश्वर भाव सहित नित वंदनजी ।।१।।
ओं ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्र परवत सेती बीस तीर्थंकरादि असंख्यात मुनि मुक्ति पधारे तिनके चरण कमल की पूजा अर्घम्०

चाल कवित्त।

शिखर सम्मेद जी के बीस टोंक सब जान,
तासों मोक्ष गये ताकी संख्या सब जानिये।
चउदास कोड़ा कोड़ि पैंसठ ता ऊपर जोड़ि,
छियालीस अरब ताको ध्यान हिये आनिये।।

बारा से तिहत्तर कोड़ि लाख ग्यारा में बेयालीस,
और सातसे चौंतीस सहस बखानिये ।
सैंकड़ा है सात में सत्तर एते हुए सिद्ध तिनकूं,
सु नित्य पूज पाप कर्म हानिये ॥ १ ॥

दोहा ।

बीस टोंकके दरश फल, प्रोषध संख्या जान ।
एकसौ तेहत्तर मुनी, गुण सठ लाख महान ॥

घत्ता छंद ।

ए बीस जिनेश्वर नमत सुरेसुर मघवा पूजन कूं आवें ।
नरनारी ध्यावें सब सुख पावें रामचंद्र नित सिर नावें ॥

इति परिपुष्पांजलि ।

सम्मेद शिखरजी का भजन

सांवलिया पारसनाथ शिखर पर भले विराजें जी,
हुकम हुआ सांवलियाजीका बांह पकड़ मंगवाया ।
शिखर पर भले विराजें जी, हुकम हुआ सांवलियाजीका
बांह पकड़ मंगवाया ॥ टेर ॥

देश देशका जातरी आया पूजा भाव रचाया,
आठ दरब ले पूजन कीनी मन वांछित फल पाया ।
शिखर पर भले विराजें जी, हुकम हुआ सांवलियाजीका
बांह पकड़ मंगवाया ॥ १ ॥

टोंक टोंक पर ध्वजा विराजै झालर घंटा बाजै,
झालरके झनकार सेती अनहद बाजा बाजै ।
शिखर पर भले विराजें जी, हुकम हुआ सांवलियाजीका
बांह पकड़ मंगवाया ॥ २ ॥

तीनों नाले तेरह चौकी मन वांछित फल पाया,
मन चित सेती पूजा कीनी सफल मनोरथ भाया ।
शिखर पर भले विराजें जी, हुकम हुआ सांवलियाजीका
बांह पकड़ मंगवाया ॥ ३ ॥

कोई मांगे नाती पोता कोई मांगे दान,
जातरी मांगे प्रभुके दरशन महा परमाद ।
शिखर पर भले विराजें जी, हुकम हुआ सांवलियाजीका
बांह पकड़ मंगवाया ॥ ४ ॥

नरनारी सब बंदन आया, महा सुकृत फल पाया ।
खुशाल चंदने चरण कमलका हरष हरष गुण गाया,
शिखर पर भले विराजें जी, हुकम हुआ सांवलियाजीका
बांह पकड़ मंगवाया ॥ ५ ॥

—: * :—

श्री भक्तामर स्तोत्र पूजा

ओं जय, जय, जय। नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु ।

अनुष्टुप ।

परमज्ञान वाणासि, घातिकर्म प्रघातिनं ।
महा धर्म प्रकर्त्तारं, वंदेहमादि नायकं ॥१॥
भक्तामर महास्तोत्रं, मंत्रपूजां करोम्यहं ।
सर्वजीव हितागारं, आदिदेवं महाम्यहं ॥२॥

ओं ह्रीं श्री आदिदेव अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं । ओं ह्रीं श्री आदिदेव अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । ओं ह्रीं श्री आदिदेव अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

अथाष्टकं ।

सुरसुरीनदसंभृत जीवनैः,
सकल ताप हरैः सुख कारणैः ।
वृषभनाथ वृषांक समन्वितं,
शिवकरं प्रयजे हत किल्विषं ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्री वृषभनाथ जिनेंद्राय जलं ।

मलय चंदन मिश्रित कुंकुमैः,
सुरभितागत षट् पद नंदनैः ।

वृषभनाथ वृषांक समन्वितं,
शिवकरं प्रयजे हत किल्विषं ॥ चंदनं ॥

कमल जाति समुद्भवतंदुलैः,
परम पावन पंच सु पुंजकैः।
वृषभनाथ वृषांक समन्वितं,
शिवकरं प्रयजे हत किल्विषं ॥ अक्षतं ॥

जलज चंपक जाति सुमालती,
वकुल पाड़ल कुंद सु पुष्पकैः।
वृषभनाथ वृषांक समन्वितं,
शिवकरं प्रयजे हत किल्विषं ॥ पुष्पं ॥

वटक खज्जक मंडक पायसैं,
विविध मोदक व्यंजन सद्रसैः।
वृषभनाथ वृषांक समन्वितं,
शिवकरं प्रयजे हत किल्विषं ॥ नैवेद्यं ॥

रविकर द्युति सन्निभ दीपकैः,
प्रवल मोह घनांध निवारकैः।

वृषभनाथ वृषांक समन्वितं,
शिवकरं प्रयजे हत किल्विषं ॥ दीपं ॥

स्वगुरु धूप भरैर्घटनिष्टतैः
प्रतिदिशं मिलिनालि समूहकैः ।
वृषभनाथ वृषांक समन्वितं,
शिवकरं प्रयजे हत किल्विषं ॥ धूपं ॥

नविन लिंबुकलांगलि दाड़िमैः
कदलि पूंग कपिच्छ शुभैः फलैः ।
वृषभनाथ वृषांक समन्वितं,
शिवकरं प्रयजे हत किल्विषं ॥ फलं ॥

कमल गंध शुभाक्षतपुष्पकैश्चरुभि,
दीप सु धूप फलार्घकैः ।
जिनपति च यजे सुखकारकं,
वदति मेरु सु चंद्र यतीश्वरं ॥ अर्घं ॥

प्रत्येक पूजा

वसंत तिलका छंद ।

भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणा-,
मुद्योतकं दलितपापतमोवितानं ।

सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगंयुगादा,
वालंबनं भवजले पततां जनानां ॥ १ ॥

ओं ह्रीं प्रणतदेव समूह मुकुटाग्रमणि महापापांधकार विनाशकाय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घं ॥ १ ॥

यः संस्तुतः सकलवाङ्मयतत्त्वबोधा-
दुद्भूत बुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः ॥
स्तोत्रैर्जगत्त्रितयचित्तहरैरुदारैः,
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेंद्रं ॥ २ ॥

ओं ह्रीं गणधरचारणसमस्त स्पर्धिंद्रचंद्रादित्यसुरेंद्रनरेंद्रव्यंतरेंद्र-नागेंद्र चतुर्विधमुनींद्रस्तवितचरणारविंदाय श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घं ॥ २ ॥

बुद्ध्या विनापि विबुधार्चितपादपीठ-
स्तोतुं समुद्यतमतिर्विगतत्रपोऽहं ।
बालं विहाय जलसंस्थितमिंदुबिंब,
मन्यः क इच्छति जनः सहसा गृहीतुं ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं विगतबुद्धिगर्वापहारसहित श्रीमानतुंगाचार्य भक्तिसहिताय श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घं ॥ ३ ॥

वक्तुं गुणान्गुणसमुद्रशशांककांतान्,
कस्ते क्षमः सुरगुरुप्रतिमोऽपिबुद्ध्या ।

कल्पांतकालपवनोद्धतनक्रचक्रं,
को वा तरीतुमलमंबुनिधिं भुजाभ्यां ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं त्रिभुवनगुणसमुद्र चंद्रकांतमणितेजशरीरसमस्त सुरनाथ स्तवित श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घं ॥ ४ ॥

सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश,
कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः।
प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य मृगो मृगेन्द्रं,
नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थं ॥५॥

ओं ह्रीं समस्त गणधरादि मुनिवर प्रतिपालक मृगबालवत श्री आदिनाथ परमेश्वराय अर्घं ॥ ५ ॥

अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम,
त्वद्भक्तिरेव मुखरी कुरुते बलान्माम्।
यत्कोकिलः किलमधौ मधुरं विरौति,
तच्चाम्रचारुकलिकानिकरैकहेतु ॥ ६ ॥

ओं ह्रीं श्रीजिनेंद्र चंद्रभक्ति सर्वसौख्यं तुच्छभक्ति बहु सुखदाय-काय श्रीजिनेंद्राय आदि परमेश्वराय अर्घं ॥ ६ ॥

त्वत्संस्तवेन भवसंततिसन्निबद्धं,
पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजां।

आक्रांतलोकमलिनीलमशेषमाशु,
सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमंधकारं ॥ ७ ॥

ओं ह्रीं अनंत भव पातक सर्व विघ्नविनाशकाय तव स्तुतिसौख्यदायकाय श्रीआदि परमेश्वराय अर्घं ॥ ७ ॥

मत्वेति नाथ तव संस्तवनं मयेद-
मारभ्यते तनुधियापि तव प्रभावात्।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु,
मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिंदुः ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं श्रीजिनेंद्र स्तवन सत्पुरुष चित्त चमत्काराय श्रीआदि परमेश्वराय अर्घं ॥ ८ ॥

आस्तां तवस्तवनमस्तसमस्त दोषं,
त्वत्संकथापि जगतां दुरितानि हंति।
दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव,
पद्माकरेषु जलजानि विकासभांजि ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं जिनपूजनस्तवन कथाश्रवणेन समस्त पाप विनाशनाय जगत्त्रय भव्यजीव भवविघ्ननाशसमर्थाय च श्रीआदि परमेश्वराय अर्घं ॥ ९ ॥

नात्यद्भुतं भुवनभूषण भूतनाथ!
भूतैर्गुणैर्भुविभवंतमभिष्टुवंतः।

तुल्या भवंति भवतो ननु तेन किं वा,
भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥१०॥

ओं ह्रीं त्रैलोक्यगुण मंडित समस्तोपमा सहिताय श्रीआदि परमेश्वराय अर्घं ॥ १० ॥

दृष्ट्वाभवंतमनिमेषविलोकनीयं,
नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्यचक्षुः ।
पीत्वापयः शशिकरद्युतिदुग्धसिंधोः,
क्षारं जलं जलनिधे रसितुं क इच्छेत् ॥११॥

ओं ह्रीं श्रीजिनेंद्र दर्शनेन अनंत भव संचित अघसमूह विनाशकाय श्रीप्रथम जिनेंद्राय अर्घं ॥ ११ ॥

यैः शांतरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं,
निर्मापित स्त्रिभुवनैक ललामभूत ।
तावंत एव खलु तेप्यणवः पृथिव्यां,
यत्ते समानमपरं न हि रूपमस्ति ॥१२॥

ओं ह्रीं त्रिभुवन शांत स्वरूपाय त्रिभुवन तिलकाय मानाय श्री आदि परमेश्वराय अर्घं ॥ १२ ॥

वक्त्रं क्व ते सुरनरोनगनेत्रहारि,
निश्शेषनिर्जितजगत्त्रितयोपमानं ।

बिंबं कलंकमलिनं क्व निशाकरस्य.
यद्वासरे भवति पांडुपलाशकल्पं ॥ १३ ॥

ओं ह्रीं त्रैलोक्यविजयरूप अतिशय अनंतचंद्र तेजजित महातेज पूजमानाय श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घं ॥ १३ ॥

संपूर्ण मंडलशशांककलाकलाप-
शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लंघयंति ।
ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वरनाथमेकं.
कस्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टं ॥१४॥

ओं ह्रीं शुभगुणातिशयरूप त्रिभुवनजीत जिनेंद्र गुण विराजमानाय श्रीप्रथमजिनेंद्राय अर्घं ॥ १४ ॥

चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाभि-
र्नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गं ।
कल्पांतकालमरुता चलिताचलेन,
किं मंदराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ॥ १५ ॥

ओं ह्रीं मेरुचंद्र अचलशील शिरोमणि त्रनाद्यराजमंडित चतुर्विध वनिता विरहित शीलसमुद्राय श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घं ॥ १५ ॥

निर्धूम वर्तिरपवर्जिततैलपूरः.
कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि ।

गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां,
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाशः ॥ १६ ॥

ओं ह्रीं धूम्रस्नेह वातादि विघ्नरहिताय त्रैलोक्य परम केवलदीपकाय श्रीप्रथमजिनेंद्राय अर्घं ॥ १६ ॥

नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः,
स्पष्टी करोपि सहसा युगपज्जगंति।
नांभोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभावः,
सूर्यातिशायिमहिमासि मुनींद्र लोके ॥ १७ ॥

ओं ह्रीं राहु चन्द्र पूजित कर्म प्रकृति त्तयति निरावरण ज्योतिरूप लोकद्वयावलोकी सदोदयादिपरमेश्वराय अर्घं ॥ १७ ॥

नित्योदयं दलितमोहमहांधकारं,
गम्यं न राहु वदनस्य न वारिदानां।
विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकांति,
विद्योतयज्जगदपूर्वशशांकविंबं ॥ १८ ॥

ओं ह्रीं नित्योदय रूप और राहु करके हू ना ग्रसे जाय एसे त्रिभुवन सर्वकला सहित विराजमानाय श्री आदि परमेश्वराय अर्घं ॥ १८ ॥

किं शर्वरीषु शशिनाह्नि विवस्वता वा,
युष्मन्मुखेन्दुदलितेषु तमस्सु नाथ!

निष्पन्न शालिवनशालिनि जीवलोके,
कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रैः ॥१६॥

ओं ह्रीं चन्द्र सूर्योदयास्त रजनी दिवस रहित परम केवलोदय महादीप्ति विराजमानाय श्री आदि देवाय आदि परमेश्वराय अर्घं ॥ १६ ॥

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं,
नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु।
तेजःस्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं,
नैवं तु काचशकले किरणाकुलेपि ॥ २० ॥

ओं ह्रीं हरि हरादि ज्ञानरहिताय सर्वज्ञ परम ज्योति केवलज्ञान सहिताय श्री आदि परमेश्वराय अर्घं ॥ २० ॥

मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा,
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः,
कश्चिन्मनो हरति नाथ भवांतरेपि ॥ २१ ॥

ओं ह्रीं त्रिभुवन मनमोहन जिनेंद्ररूप अन्य दृष्टान्त रहित परम बोध मंडिताय श्री आदि जिनाय अर्घं ॥ २१ ॥

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयंति पुत्रान्,
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता।

सर्वादिशो दधति भानि सहस्त्ररश्मिं,

प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालं ॥ २२ ॥

ओं ह्रीं त्रिभुवन वनितोपमार्गहित श्रीजिनवर माताजनितजिनेंद्र पूर्व दिग् भास्कर केवल ज्ञान भास्कराय श्रीआदिब्रह्म जिनाय अर्घं ॥ २२

त्वमामनंति मुनयः परमं पुमांस-

मादित्यवर्णममलं तमसः पुरस्तात् ।

त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयंति मृत्युं,

नान्यः शिवश्शिवपदस्य मुनींद्र पंथाः ॥२३॥

ओं ह्रीं त्रैलोक्य पावनादित्यवर्ण परमोष्टोत्तर शत लक्षण नव शत व्यंजनाय समुदाय एक सहस्र अष्ट मंडिताय श्री आदिजिनेंद्राय अर्घं ॥ २३ ॥

त्वामव्ययं विभुमचिंत्यमसंख्यमाद्यं,

ब्रह्माणमीश्वरमनंतमनंगकेतुं ।

योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं,

ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदंति संतः ॥ २४ ॥

ओं ह्रीं ब्रह्माविष्णु श्रीकण्ठ गणपति त्रिभुवन दैवत्व संविताय संविकाय श्री आदि परमेश्वराय अर्घं ॥ २४ ॥

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात्,

त्वं शंकरोऽसि भुवनत्रयशंकरत्वात् ।

धातासि धीर शिवमार्गविधेर्विधानाद्,
व्यक्तं त्वमेव भगवन्पुरुषोत्तमोसि ॥२५॥

ओं ह्रीं बुद्धिदर्शक शेषधर ब्रह्मादि समस्तानंतनामसहिताय श्री आदि जिनेन्द्राय अर्घं ॥ २५ ॥

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्त्तिहराय नाथ,
तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय ।
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं नमो जिनभवोदधिशोषणाय ॥ २६ ॥

ओं ह्रीं अधो मध्योर्द्ध लोकत्रय कृताहोरात्रि नमस्कार समस्तार्ति रौद्रविनाशक त्रिभुवनेश्वर भवोदधि तरणतारणसमर्थाय श्री आदि परमेश्वराय अर्घं ॥ २६ ॥

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै-
स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश ।
दोषैरुपात्तविविधाश्रयजातगर्वैः,
स्वप्नांतरेपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥ २७ ॥

ओं ह्रीं परमगुणाश्रित एकादि अवगुणरहिताय श्रीआदि परमेश्वराय अर्घं ॥ २७ ॥

उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख-
माभाति रूपममलं भवतो नितांतं ।

स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितानं,
बिंबं रवेरिवपयोधरपार्श्ववर्त्ति ॥ २८ ॥

ओं ह्रीं अशोक वृक्ष प्रातिहार्य सहिताय श्री आदि परमेश्वराय अर्घं ॥ २८ ॥

सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे,
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातं ।
बिंबं वियद्विलसदंशुलतावितानं,
तुंगोदयाद्रिशिरसीवसहस्त्ररश्मेः ॥२९॥

ओं ह्रीं सिंहासन प्रातिहार्य सहिताय श्री प्रथम जिनेंद्राय अर्घं ॥२९॥

कुंदावदातचलचामरचारुशोभं,
विभ्राजते तव वपुः कलधौतकांतं ।
उद्यच्छशांकशुचिनिर्झरवारिधार-
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौंभं ॥ ३० ॥

ओं ह्रीं चतुःषष्ठि चामर प्रातिहार्य सहिताय श्री प्रथम जिनेंद्राय अर्घं ॥ ३० ॥

छत्रत्रयं तव विभाति शशांककांत-
मुच्चैःस्थितं स्थगितभानुकरप्रतापं ।

मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोभं,
प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमेश्वरत्वं ॥ ३१ ॥

ओं ह्रीं छत्रत्रय प्रातिहार्य सहिताय श्री आदि परमेश्वराय अर्घं ॥३१॥

गंभीरताररवपूरितदिग्विभाग-
स्त्रैलोक्यलोकशुभसंगमभूतिदक्षः ।
सद्धर्मराजजयघोषणघोषकः सन्,
खे दुन्दुभिर्ध्वनति ते यशसः प्रवादी ॥ ३२ ॥

ओं ह्रीं अष्टादश कोटि वादित्र प्रातिहार्य सहिताय श्री परमादि जिनाय अर्घं ॥ ३२ ॥

मंदारसुन्दरनमेरुसुपारिजात-
संतानकादिकुसुमोत्करवृष्टिरुद्धा ।
गंधोदबिंदुशुभमंदमरुत्प्रयाता,
दिव्यादिवः पतति ते वयसां ततिर्वा ॥ ३३ ॥

ओं ह्रीं समस्त पुष्प जाति वृष्टि प्रातिहार्य सहिताय श्री आदि जिनेंद्राय अर्घं ॥ ३३ ॥

शुम्भत्प्रभावलयभूरिविभा विभोस्ते,
लोकत्रये द्युतिमतां द्युतिमाक्षिपंती ।

प्रोद्यद्दिवाकरनिरंतरभूरिसंख्या,
दीप्त्या जयत्यपि निशामपि सोमसोम्यां ॥३४॥

ओं ह्रीं कोटि भास्कर प्रभा मंडित भामंडल प्रातिहार्यमहिताय श्री परमादि जिनाय अर्घं ॥ ३४ ॥

स्वर्गापवर्गगममार्गविमार्गणेष्टः,
सद्धर्मतत्त्वकथनैकपटुस्त्रिलोक्याः ।
दिव्यध्वनिर्भवति ते विशदार्थ सर्व,
भाषास्वभावपरिणामगुणैः प्रयोज्यः ॥३५॥

ओं ह्रीं सलिल जलधर पटलगर्जित ध्वनि योजन प्रमान प्रातिहार्य सहिताय श्री आदि परमेश्वराय अर्घं ॥३५॥

उन्निद्रहेमनवपंकजपुञ्जकांती,
पर्युल्लसन्नखमयूखशिखाभिरामौ ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेंद्र! धत्तः,
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयंति ॥३६॥

ओं ह्रीं हेम कमलोपरि गमन देवकृतातिशाय सहिताय श्रीआदि परमेश्वराय अर्घं ॥३६॥

इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेंद्र,
धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ।

याहक्प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा,
ताहक् कुतो ग्रहगणस्य विकाशिनोपि ॥३७॥

ओं ह्रीं धर्मोपदेश समये समवसरण विभूति मंडिताय श्रीआदि परमेश्वराय अर्घं ॥३७॥

श्च्योतन्मदाविलविलोलकपोलमूल-
मत्तभ्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपं ।
ऐरावताभमिभमुद्धतमापतंतं,
दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानां ॥३८॥

ओं ह्रीं मस्तकगलितरण सुर गजेंद्र महादुर्द्धर भय विनाशकाय श्रीजिनादि परमेश्वराय अर्घं ॥३८॥

भिन्नेभकुम्भगलदुज्जवलशोणिताक्त-
मुक्ताफलप्रकरभूषितभूमिभागः ।
बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोपि,
नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥३९॥

ओं ह्रीं आदिदेव नाम प्रमादान्महासिंह भय विनाशकाय श्री युगादि परमेश्वराय अर्घं ॥३९॥

कल्पांतकालपवनोद्धतवह्निकल्पं,
दावानलंज्वलितमुज्जवलमुत्स्फुलिंगं ।

विश्वं जिघित्सुमिव संमुखमापतंतं,
त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषं ॥४०॥

ओं ह्रीं महावह्नि विश्वभक्षण समर्थ जिननाम जल विनाशकाय श्री आदि ब्रह्मणे अर्घं ॥४०॥

रक्तेक्षणं समदकोकिलकंठनीलं,
क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतंतं ।
आक्रामति क्रमयुगेण निरस्तशंक-
स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥४१॥

ओं ह्रीं रक्तनयन सर्प जिन नागदमन्योषधि समस्त भय विनाशकाय श्रीजिनादि परमेश्वराय अर्घं ॥४१॥

वल्गत्तुरंगगजगर्जितभीमनाद-
माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनां ।
उद्यद्दिवाकरमयूखशिखापविद्धं,
त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु भिदामुपैति ॥४२॥

ओं ह्रीं महासंग्राम भय विनाशकाय सर्वांग रक्षणकराय श्री प्रथम जिनेंद्राय अर्घं ॥४२॥

कुंताग्रभिन्नगजशोणितवारिवाह-
वेगावतारतरणातुरयोधभीमे ।

युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षास्,
त्वत्पादपंकजवना श्रयिणो लभंते ॥४३॥

ओं ह्रीं महारिपुयुद्धे जयदायकाय श्रीआदि परमेश्वराय अर्घं ॥४३॥

अंभोनिधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्र-
पाठीनपीठभयदोल्वणवाडवाग्नौ।
रंगत्तरंगशिखरस्थितयानपात्रास्,
त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद्व्रजंति ॥४४॥

ओं ह्रीं महासमुद्र चलित यान महादुर्जय भय विनाशकाय श्री जिनादि परमेश्वराय अर्घं ॥४४॥

उद्भूतभीषणजलोदरभारभुग्नाः,
शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशाः।
त्वत्पादपंकजरजोमृतदिग्धदेहा,
मर्त्या भवंति मकरध्वजतुल्यरूपाः ॥४५॥

ओं ह्रीं दश प्रकार ताप जलंधराष्टादश कुष्ट सन्निपात महद्रोग विनाशकाय परम कामदेवरूप प्रकटाय श्री जिनेश्वराय अर्घं ॥४५॥

आपादकंठमुरुश्रृङ्खलवेष्टितांगा,
गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजंघाः।

त्वन्नाममंत्रमनिशं मनुजाः स्मरंतः,
सद्यः स्वयं विगतबंधभया भवंति ॥४६॥

ओं ह्रीं महाबन्धन आपाद कंठ पर्यंत वैरिकृतोपद्रव भय विनाशकाय श्री आदि परमेश्वराय अर्घं ॥४६॥

मत्तद्विपेन्द्रमृगराजदवानलाहि-
संग्रामवारिधि महोदरबंधनोत्थं ।
तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव,
यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥४७॥

ओं ह्रीं सिंह गजेंद्र राक्षस भूत पिशाच शाकिनी रिपु परमोपद्रव भय विनाशकाय श्री जिनादि परमेश्वराय अर्घं ॥४७॥

स्तोत्र स्रजं तव जिनेंद्र गुणैर्निबद्धां,
भक्त्या मयाविविधवर्णविचित्रपुष्पां ।
धत्ते जनो य इह कंठगतामजस्रं,
तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥४८॥

ओं ह्रीं पठक पाठक श्रोता वा श्रद्धावान मानतुंगाचार्यादि समस्त जीव कल्याणदाय श्री आदि परमेश्वराय अर्घं ॥४८॥

वन सुगंध सु तंदुल पुष्पकैः,
प्रवर मोदक दीपक धूपकैः ।

फल वरैः परमात्म पद प्रदं,
प्रवियजे श्री आदिनाथ जिनेश्वरं ॥१॥

ओंह्रीं अष्ट चत्वारिंशत्कमलेभ्यः पूर्णार्घं।

जयमाला

श्लोक।

प्रमाणद्वय कर्त्तारं स्यादस्ति वाद वेदकं।
द्रव्यतत्व नयागारमादिदेवं नमाम्यहं ॥१॥

छंद।

आदि जिनेश्वर भोगागारं, सर्व जीववर दया सुधारं।
परमानंदरमासुखकंदं, भव्यजीवहित करणममंदं ॥२॥
परम पवित्र वंशवर मंडण, दुख दारिद्र काम बल खंडन।
वेदकर्म दुज्जय बल दंडण, उज्जल ध्यान प्रति शुभ मंडण ३॥
चतु अशीतिलक्ष पूरव जीवित पर, धनुष पंचशत मानस जिनवर।
हेमवर्ण रूपौघ विमल कर, नगर अयोध्या स्थानक व्रत धर ४॥
नाभिराज परमात्म सुवेता, माता मरुदेवी गुणणेता।
सोल स्वप्न पर भेद विख्याता, त्रिभुवननायक पुत्र विधाता ५॥
गर्भकल्याणक सुरपति कीधा। जन्मकल्याणक मेरुसिर सीधा।
स्वयं स्वयंभू दीक्षा धारी। केवल बोध सु त्रिभुवन प्यारी ६॥
अष्ट गुणाकर सिद्ध दिवाकर, परम धर्म विस्तारण जय भर।
शीततापरहित भव हारी, सर्व सौख्य निरुपम गुण धारी ७॥

घत्ता ।

जय आदि सु ब्रह्मा, त्रिभुवन ब्रह्मा, ब्रह्मास्वातम स्वरूप पर ।
जय बोध सु ब्रह्मा, पंच सु ब्रह्मा, ब्रह्म सुमति जलधि निकर ।
ओं ह्रीं श्रीआदि परमदेवाय जयमालार्घं नि०

शार्दूल विक्रीडित ।

देवोऽनेक भवार्जितो गत महा पापः प्रदीपानलः ।
देवः सिद्धवधू विशाल हृदयालंकार हारोपम ॥
देवोष्टादश दोष सिंधुर घटा दुर्भेद पंचाननो ।
भव्यानांविदधातु वांछित फलं श्री आदिनाथो जिनः ॥

श्लोक ।

लक्ष्मीचंद्रगुरुर्जीतो मूलसंघ विदाग्रणी ।
पट्टाभयचंद्रो देवो दयानंदि विदांवरः ॥
रत्नकीर्ति कुमुदेंदु सुमतिः सागरोदितः ।
भक्तामर महास्तोत्र पूजा चक्री गुणाधिका ॥

इति श्री मानतुङ्गाचार्य विरचित भक्तामर स्तोत्र पूजा समाप्ता ।

पंच बालयति तीर्थंकर पूजा।

दोहा।

श्रीजिन पंच अनंग जित, वासु पूज्य मल्लि नेमि।
पारसनाथ सुवीर अति, पूजूं चित धरि प्रेम॥१॥

ओं ह्रीं पंच बालयति तीर्थंकरा अत्रावत्रावतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं, पुष्पांजलि क्षिपेत्।

अथाष्टक।

शुचि शीतल सुरभि सुनीर लायो भर झारी,
दुख जामन मरन गहीर, याको परिहारी।
श्री वासु पूज्य मल्लि नेम, पारस वीर अति,
नमूं मन वच तन धरि प्रेम पांचों बालयति॥

ओं ह्रीं श्री वासु पूज्यजी, मल्लिनाथजी, नेमनाथजी, पारसनाथजी, महावीर स्वामीजी, श्री पंच बालयती तीर्थंकरेभ्यो नमः जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन केशर करपूर, जल में घसि आनों,
भव तप भंजन सुखपूर, तुमको मैं जानों।
श्री वासु पूज्य मल्लि नेम, पारस वीर अति,
नमूं मन वच तन धरि प्रेम पांचों बालयति॥ चंदनं॥
वर अक्षत विमल बनाय, सुवरण थाल भरे,
बहु देश देशके लाय, तुमरी भेंट धरे।

श्री वासु पूज्य मल्लि नेम, पारस वीर अति,
नमूं मन वच तन धरि प्रेम पांचों बालयति ॥ अक्षतं ॥
यह काम सुभट अति सूर, मनमें क्षोभ करो,
मैं लायो सुमन हजूर, याको वेग हरो।
श्री वासु पूज्य मल्लि नेम, पारस वीर अति,
नमूं मन वच तन धरि प्रेम पांचों बालयति ॥ पुष्पं ॥
षट् रस पूरित नैवेद्य, रसना सुख कारी,
द्वय करम वेदनी छेद, आनन्द है भारी।
श्री वासु पूज्य मल्लि नेम, पारस वीर अति,
नमूं मन वच तन धरि प्रेम पांचों बालयति ॥ नैवेद्यं ॥
धरि दीपक जगमग ज्योति, तुम चरणन आगे,
मम मोहतिमिर क्षय होत, आतम गुण जागे।
श्री वासु पूज्य मल्लि नेम, पारस वीर अति,
नमूं मन वच तन धरि प्रेम पांचों बालयति ॥ दीपं ॥
ले दशविधि धूप अनूप, खेऊं गंध मई,
दशबंध दहन जिन भूप तुमहो कर्म जई।
श्री वासु पूज्य मल्लि नेम, पारस वीर अति,
नमूं मन वच तन धरि प्रेम पांचों बालयति ॥ धूपं ॥
पिस्ता अरु दाख बदाम, श्रीफल लेय घने,
तुम चरन जजूं गुणधाम, द्यो सुख मोक्ष तने।

श्री वासु पूज्य मल्लि नेम, पारस वीर अति,
नमूं मन वच तन धरि प्रेम पाचों बालयति ॥ फलं ॥
सजि वसुविधि द्रव्य मनोज्ञ, अरघ बनावत हैं,
वसुकर्म अनादि संयोग, ताहि नसावत हैं।
श्री वासु पूज्य मल्लि नेम, पारस वीर अति,
नमूं मन वच तन धरि प्रेम पांचों बालयति ॥ अर्घं ॥

जयमाला ।

दोहा ।

बालब्रह्मचारी भये, पांचों श्री जिनराज ।
तिनकी अब जयमालिका, कहूं स्वपर हितकाज ॥

पद्धड़ि छन्द ।

जय जय जय जय श्री वासु पूज्य,
तुम सम जग में नहीं और दूज ।
तुम महा लक्ष सुर लोक छार,
जब गर्भ मात माहीं पधार ॥२॥
षोड़श स्वपने देखे सुमात,
बल अवधि जान तुम जन्म तात ।
अति हर्ष धार दंपति सुदान,

बहु दान दियो जाचक जनान ॥३॥
छप्पन कुमारिका कियो आन,
तुम मात सेव बहु भक्ति ठान।
छः मास अगाऊ गर्भ आय,
धनपति सुवरन नगरी रचाय ॥ ४ ॥
तुम तात महल आंगन मंझार,
तिहुं काल रतन धारा अपार।
वरषाए षट् नव मास सार,
धनि जिन पुरुषन नयनन निहार ॥ ५ ॥
जय मल्लिनाथ देवन सुदेव,
शत इन्द्र करत तुम चरण सेव।
तुम जन्मत ही त्रय ज्ञान धार,
आनन्द भयो तिहुं जग अपार ॥ ६ ॥
तब ही ले चहुं विधि देव संग,
सौ धर्म इन्द्र आयो उमङ्ग।
सजि गज ले तुम हरि गोद आप,

वन पांडुक शिल ऊपर सुथाप ॥ ७ ॥
क्षीरोदधि तैं बहु देव जाय,
भरि जल घट हाथों हाथ लाय।
करि न्हवन वस्त्र भूषण सजाय,
दे मात नृत्य तांडव कराय ॥ ८ ॥
पुनि हर्ष धार हृदय अपार,
सब निर्जर तब जय जय उचार।
तिस अवसर आनंद है जिनेश,
हम कहिवे समरथ नहिं लेश ॥ ६ ॥
जय जादोपति श्री नेमनाथ,
हम नमत सदा जुग जोरि हाथ।
तुम ब्याह समय पशुवन पुकार,
सुनि तुरत छुड़ाये दया धार ॥ १० ॥
कर कंकण अरु सिर मौर बंद,
सो तोड़ भये छिन में स्वच्छन्द।
तब ही लौकान्तिक देव आय,
वैराग्य वर्द्धनी थुति कराय ॥ ११ ॥

ततच्छिण शिवका लायो सुरेन्द्र,
आरूढ़ भये तापर जिनेन्द्र।
सो शिवका निज कंधन उठाय,
सुर नर खग मिल तप वन ठराय ॥ १२ ॥
कच लौंच वस्त्र भूषण उतार,
भये जती नगन मुद्रा सुधार।
हरि केश लेय रतनन पिटार,
सो क्षीर उदधि मांही पधार ॥ १३ ॥
जय पारशनाथ अनाथ नाथ,
सुर असुर नमत तुम चरण माथ।
जुग नाग जरत कीनों सुरक्ष,
यह बात सकल जगमें प्रत्यक्ष ॥ १४ ॥
तुम सुर धनु सम लखि जग असार,
तप तपत भये तन ममत क्षार।
शठ कमठ कियो उपसर्ग आय,
तुम मन सुमेरु नहिं डगमगाय ॥ १५ ॥
तुम शुक्ल ध्यान गहि खड़ग हाथ,

अरि च्यारि घातिया कर सुघात।
उपजायो केवल ज्ञान भानु,
आयो कुवेर हरि वच प्रमाण ॥ १६ ॥
की समोशरण रचना विचित्र,
तहां खिरत भई वाणी पवित्र।
मुनि सुर नर खग तिर्यंच आय,
सुनि निज निज भाषा बोध पाय ॥ १७ ॥
जय वर्द्धमान अन्तिम जिनेश,
पायो न अंत तुम गुण गणेश।
तुम च्यारि अघाती करम हान,
लियो मोक्ष स्वयं सुख अचलथान ॥ १८ ॥
तब ही सुरपति बल अवधि जान,
सब देवन युत बहु हर्ष ठान।
सजि निज वाहन आयो सुतीर,
जहं परमौदारिक तुम शरीर ॥ १६ ॥
निर्वाण महोत्सव कियो भूर,
ले मलयागिर चंदन कपूर।

बहु द्रव्य सुगंधित सर सम्भार,
तामें श्री जिनवर वपु पधार ॥ २० ॥
निज अगनि कुमारिन मुकुट नाय,
तिहं रतनन शुचि ज्वाला उठाय।
तिस सर माहीं दीनी लगाय,
सो भस्म सबन मस्तक चढ़ाय ॥ २१ ॥
अति हर्ष थकी रचि दीप माल,
शुभ रतन मई दश दिश उजाल।
पुनि गीत नृत्य बाजे बजाय,
गुण गाय ध्याय सुरपति सिधाय ॥ २२ ॥
सो थान अबै जगमें प्रत्यक्ष,
नित होत दीप माला सुलक्ष।
हे जिन तुम गुण महिमा अपार,
बसु सम्यक् ज्ञानादिक सु सार ॥ २३ ॥
तुम ज्ञान माहिं तिहुं लोक दर्व,
प्रति बिम्बित हैं चर अचर सर्व।
लहि आतम अनुभव परम ऋद्धि,

भये बीतराग जगमें प्रसिद्ध ॥ २४ ॥
ह्वै बाल यती तुम सबन एम,
अचिरज शिव कांता वरी केम ।
तुम परम शांति मुद्रा सुधार,
किम अष्ट कर्म रिपु को प्रहार ॥ २५ ॥
हम करत वीनती वार वार,
कर जोर स्व मस्तक धार धार ।
तुम भये भवोदधि पार पार,
मोको सुवेग ही तार तार ॥ २६ ॥
अरदास दास ये पूर पूर,
वसु कर्म शैल चक चूर चूर ।
दुख सहन राम अब शक्ति नाहिं,
गही चरण शरण कीजे निवाह ॥ २७ ॥

चौपाई ।

पांचों बाल यति तीर्थेश,
तिनकी यह जयमाल विशेष ।

मन बच काय त्रियोग सम्हार,
जे गावत पावत भव पार ॥ २८ ॥

ओं ह्रीं श्री पंच बालयति तीर्थंकर जिनेंद्रायनमः पूर्णार्घं ॥

दोहा।

ब्रह्मचर्य सों नेह धरि, रचियो पूजन ठाठ।
पांचों बाल यतीनको, कीजे नित प्रतिपाथ॥

इत्याशीर्वादः।

बाहुबलि स्वामी की पूजा।

दोहा।

कर्म अरिगण जीतिके, दरशायो शिव पंथ।
प्रथम सिद्ध पद जिन लयो भोग भूमिके अंत॥ १
समर दृष्टि जल जीत लहि, मल्लयुद्ध जय पाय।
वीर अग्रणी बाहुबलि, वंदों मन वच काय ॥२॥

ओं ह्रीं श्रीमत गोमटेश्वर अत्र अवतर अवतर संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अथ अष्टक चाल जोगीरासा।

जन्म जरा मरनादि तृषा कर, जगत जीव दुख पावें।
तिहि दुख दूर करन जिनपद को पूजन जल ले आवें॥

परम पूज्य वीराधिवीर जिन बाहुबलि बलधारी ।
जिनके चरण कमलको नित प्रति धोक त्रिकाल हमारी ॥१॥

ओं ह्रीं वर्तमानावसर्पिणी समये प्रथम मुक्ति स्थान प्राप्ताय कर्मारि विजयी वीराधिवीर वीराग्रणी श्री बाहुबलि परम योगीन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं ॥ १ ॥

यह संसार मरुस्थल अटवी तृष्णा दाह भरी है,
तिहि दुख वारन चंदन लेके जिन पद पूज करी है ।
परम पूज्य वीराधिवीर जिन बाहुबलि बलधारी,
जिनके चरण कमलको नित प्रति धोक त्रिकाल हमारी ॥२॥

॥ चंदनं० ॥

स्वच्छ मालि शुचि नीरज रजसम गंध अखंड प्रचारी,
अक्षय पदके पावन कारन पूजैं भवि जगतारी ।
परम पूज्य वीराधिवीर जिन बाहुबलि बलधारी,
जिनके चरण कमलको नित प्रति धोक त्रिकाल हमारी ॥३॥

॥ अक्षतं० ॥

हरिहर चक्रपति सुर दानव मानव पशु बस याके,
तिहि मकरध्वज नाशक जिनको पूजों पुष्प चढ़ाके ।
परम पूज्य वीराधिवीर जिन बाहुबलि बलधारी,
जिनके चरण कमलको नित प्रति धोक त्रिकाल हमारी ॥४॥

॥ पुष्पं० ॥

दुखद त्रिजग जीवनको अति ही दोष क्षुधा अनिवारी,
तिहि दुख दूर करनको चरु वर ले जिन पूज प्रचारी ।
परम पूज्य वीराधिवीर जिन बाहुबलि बलधारी,
जिनके चरण कमलको नित प्रति धोक त्रिकाल हमारी ॥५॥

॥ नैवेद्यं० ॥

मोह महातम में जग जीवन सिव मग नाहिं लखावें,
तिहि निरवारन दीपक करले जिनपद पूजन आवें ।
परम पूज्य वीराधिवीर जिन बाहुबलि बलधारी ।
जिनके चरण कमलको नित प्रति धोक त्रिकाल हमारी ॥६॥

॥ दीपं० ॥

उत्तम धूप सुगंध बनाकर दश दिशमें महकावें,
दश विधि बंध निवारन कारण जिनवर पूज रचावें ।
परम पूज्य वीराधिवीर जिन बाहुबलि बलधारी,
जिनके चरण कमलको नित प्रति धोक त्रिकाल हमारी ॥७॥

॥ धूपं० ॥

सरस सुवरण सुगंध अनूपम स्वक्ष महासुचि लावें,
शिव फल कारण जिनवर पदकी फलसों पूज रचावें ।
परम पूज्य वीराधिवीर जिन बाहुबलि बलधारी,
जिनके चरण कमलको नित प्रति धोक त्रिकाल हमारी ॥८॥

॥ फलं० ॥

वसु विधिके वस वसुधा सब ही परवश अति दुख पावें,
तिहि दुख दूर करनको भविजन अर्घ जिनाग्र चढ़ावें।
परम पूज्य वीराधिवीर जिन बाहुबलि बलधारी,
जिनके चरण कमलको नित प्रति धोक त्रिकाल हमारी ॥९॥
॥ अर्घं० ॥

जयमाला दोहा।

आठ कर्म हनि आठगुण प्रगट करे जिन रूप।
सो जयवंतो भुजवली प्रथम भये शिव भूप॥

कुसुमलता छंद।

जै जै जै जगतार शिरोमणि क्षत्रिय वंस असंस महान,
जै जै जै जग जन हितकारी दीनो जिन उपदेश प्रमाण।
जै जै चक्रपति सुत जिनके सतसुत जेष्ठ भरत पहिचान,
जै जै जै श्री ऋषभदेव जिनसो जयवंत सदा जग जान॥१॥

जिनके द्वितीय महादेवी सुचि नाम सुनंदा गुण की खान,
रूप शील सम्पन्न मनोहर तिनके सुत भुजवली महान।
सवापंच शत धनु उन्नत तनु हरितवरण सोभा असमान,
वैडूरजमणि पर्वत मानो नील कुलाचल सम थिर जान॥२॥

तेजवंत परमाणु जगतमें तिन करि रचो शरीर प्रमाण,
सत वीरत्व गुणाकर जाको निरखत हरि हर्ष उर आन।

धीरज अतुल वज्र सम नीरज सम वीराग्रणि अति बलवान,
जिन छवि लखि मनु शशि छवि लाजै कुसुमायुध लीनों सुपुमान
बालसमैं जिन बाल चन्द्रमा शशि से अधिक धरे दुतिसार,
जो गुरुदेव पढ़ाई विद्या शस्त्र शास्त्र सब पढ़ी अपार ।
ऋषभदेव ने पोदन पुरके नृप कीने भुजबली कुमार,
दई अयोध्या भरतेश्वरको आप बने प्रभुजी अनगार ॥४॥
राजकाज षटखंड महीपति सब दल लै चढ़ि आये आप,
बाहुबलि भी सन्मुख आये मंत्रिन तीन युद्ध दिये थाप ।
दृष्टि नीर अरु मल्ल युद्धमें दोनों नृप कीजो बलधाप,
वृथा हानि रुक जाय सैन्यकी यातैं लड़िये आपों आप ॥५॥
भरत भुजबली भूपति भाई उतरे समर भूमिमें जाय,
दृष्टि नीर रण थके चक्रपति मल्लयुद्ध तब करो अघाय ।
पगतल चलत चलत अचला तब कंपत अचल शिखर ठहराय,
निषध नील अचलाधर मानौं भये चलाचल क्रोध बसाय ॥६॥
भुज विक्रमबलबाहुबलीनें लये चक्रपति अधर उठाय,
चक्र चलायो चक्रपति तब सोभा विफल भयो तिहि ठाय ।
अति प्रचंड भुजदंड सुंड सम नृप सार्दूल बाहुबलि राय,
सिंहासन मंगवाय जासपै अग्रजको दीनों पधराय ॥७॥
राजरमा रामासुर धनुमें जोवन दमक दामिनी जान,
भोग भुजंग जंग सम जगको जान त्याग कीनों तिहि थान ।

अष्टापद पर जाय वीरनृप वीर व्रतीधर कीनों ध्यान,
अचल अंग निरभंग संगतज संवतसरलों एक स्थान ॥८॥
विषधर बंबी करी चरनतल ऊपर बेल चढ़ी अनिवार,
युगजंघा कटि बाहूबेढ़ि कर पहुंची वक्षस्थल परसार।
सिरके केश बढ़ जिस मांहीं नभचर पक्षी बसे अपार,
धन्य धन्य इस अचल ध्यानको महिमा सुर गावें उरधार ॥९॥
कर्मनाशि शिव जाय बसे प्रभु ऋषभेश्वरसे पहले जान,
अष्ट गुणांकित सिद्ध शिरोमणि जगदीश्वर पद लयो पुमान।
वीरव्रती वीराग्रगन्य प्रभु बाहूबली जगधन्य महान,
वीरवृत्तिके काज जिनेश्वर नमें सदा जिन बिंब प्रमान ॥१०॥

दोहा।

श्रवनबेलगुल विंध्य गिरि जिनवर बिंब प्रधान।
छप्पन फुट उतंगतनो खड़गासन अमलान ॥१॥
अतिशयवंत अनंत बल धारक बिंब अनूप।
अर्घ चढ़ाय नमों सदा जै जै जिनवर भूप ॥

ओं ह्रीं वर्तमानावसर्पिणी समये प्रथम मुक्तिस्थान प्राप्ताय कर्मारि विजयी वीराधिवीर वीराग्रणी श्री बाहुबलि स्वामिने अनर्घपद प्राप्ताय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

 इत्याशीर्वादः।

श्री चांदन गांव महावीर स्वामी पूजा ।

छन्द ।

श्री वीर सन्मति गांव चादनमें प्रगट भये आय कर ।
जिनको वचन मन कायसे मैं पूजहूं शिर नाय कर ॥
हुये दयामय नार नर लखि, शांतिरूपी भेषको ।
तुम ज्ञानरूपी भानसे कीना सुशोभित देशको ॥
सुर इन्द्र विद्याधर मुनी नरपति नवावें शीसको ।
हम नवत हैं नित चावसों महावीर प्रभु जगदीशको ॥

ओं ह्रीं श्री चांदनगांव महावीर स्वामिन अत्र अवतर संवौषट् आह्वाननं । ओं ह्रीं श्री चांदन गांव महावीर स्वामिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । ओं ह्रीं श्री चांदन गांव महावीर स्वामिन अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

अथाष्टकं ।

क्षीरोदधिसे भरि नीर कंचन के कलशा ।
तुम चरणनि देत चढ़ाय आवागमन नशा ॥
चांदनपुरके महावीर तोरी छवि प्यारी ।
प्रभु भव आताप निवार तुम पद बलिहारी ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्री चांदनपुर महावीर स्वामिने जलं नि०

मलयागिर और कपूर केशर ले हरषों ।
प्रभु भव आताप मिटाय तुम चरननि परसों ॥

चांदनपुरके महावीर तोरी छवि प्यारी।
प्रभु भव आताप निवार तुम पद बलिहारी ॥ चंदनं० ॥
तंदुल उज्ज्वल अति धोय थारी में लाऊं।
तुम सन्मुख पुञ्ज चढ़ाय अक्षय पद पाऊं॥
चांदनपुरके महावीर तोरी छवि प्यारी।
प्रभु भव आताप निवार तुम पद बलिहारी ॥ अक्षतं० ॥
बेला केतुकी गुलाब चंपा कमल लऊं।
जे कामबाण करि नाश तुम्हरे चरण दऊं॥
चांदनपुरके महावीर तोरी छवि प्यारी।
प्रभु भव आताप निवार तुम पद बलिहारी ॥ पुष्पं० ॥
फैनी गुञ्जा अरु स्वार मोदक ले लीजे।
करि क्षुधा रोग निरवार तुम सन्मुख कीजे॥
चांदनपुरके महावीर तोरी छवि प्यारी।
प्रभु भव आताप निवार तुम पद बलिहारी ॥ नैवेद्यं० ॥
घृतमें करपूर मिलाय दीपक में जोरी।
करि मोहतिमिरको दूर तुम सन्मुख बारी॥
चांदनपुरके महावीर तोरी छवि प्यारी।
प्रभु भव आताप निवार तुम पद बलिहारी ॥ दीपं० ॥
दशविधि ले धूप बनाय तामें गंध मिला।
तुम सन्मुख खेऊं आय आठों कर्म जला॥

चांदनपुरके महावीर तोरी छवि प्यारी।
प्रभु भव आताप निवार तुम पद बलिहारी ॥ धूपं० ॥
पिस्ता किसमिस बादाम श्रीफल लौंग सजा।
श्री बर्द्धमान पद राख पाऊं मोक्ष पदा ॥
चांदनपुरके महावीर तोरी छवि प्यारी।
प्रभु भव आताप निवार तुम पद बलिहारी ॥ फलं० ॥
जल गंध सु अक्षत पुष्प चरुवर जोर करों।
ले दीप धूप फल मेलि आगे अर्घ करों ॥
चांदनपुरके महावीर तोरी छवि प्यारी।
प्रभु भव आताप निवार तुम पद बलिहारी ॥ अर्घं० ॥

टोंकके चरणोंका अर्घ

जहां कामधेनु नित आय दुग्ध जु बरसावें।
तुम चरननि दरशन होत आकुलता जावें ॥
जहां छतरी बनी विशाल तहां अतिशय भारी।
हम पूजत मन वच काय तजि संशय सारी ॥
चांदनपुरके महावीर तोरी छवि प्यारी।
प्रभु भव आताप निवार तुम पद बलिहारी ॥
ओं ह्रीं टोंकमें स्थापित श्री महावीर चरणेभ्यो अर्घं।

टीलेके अंदर विराजमान समयका अर्घ

टीलेके अन्दर आप सोहें पदमासन।

जहां चतुर निकाई देव आवें जिन शासन॥
नित पूजन करत तुम्हार करमें ले झारी।
हम हूं वसु द्रव्य बनाय पूजें भरि थारी॥
चांदनपुरके महावीर तोरी छवि प्यारी।
प्रभु भव आताप निवार तुम पद बलिहारी॥
ओं ह्रीं श्री चांदनपुर महावीर जिनेंद्राय टीलेके अंदर विराजमान समयका अर्घं।

पंचकल्याणक

कुंडलपुर नगर मंझार त्रिशला उर आयो।
सुदि छठि असाढ़ सुर आई रतनजु बरसायो॥
चांदनपुरके महावीर तोरी छवि प्यारी।
प्रभु भव आताप निवार तुम पद बलिहारी॥
ओं ह्रीं श्री महावीर जिनेंद्राय असाढ़ सुदि छठि गर्भ मंगल प्राप्ताय अर्घं।

जनमत अनहद भई घोर आये चतुर निकाई।
तेरस शुक्लाकी चैत्र सुर गिरि ले जाई॥
चांदनपुरके महावीर तोरी छवि प्यारी।
प्रभु भव आताप निवार तुम पद बलिहारी॥
ओं ह्रीं श्री महावीर जिनेंद्राय चैत सुदि तेरस जन्म मंगल प्राप्ताय अर्घं।

कृष्णा मंगसिर दश जान लौकांतिक आये।
करि केश लौंच ततकाल झट बनको धाये॥

चांदनपुरके महावीर तोरी छवि प्यारी।
प्रभु भव आताप निवार तुम पद बलिहारी॥
ओं ह्रीं श्री महावीर जिनेंद्राय मंगसिर वदी दशमी तपमंगल प्राप्ताय अर्घं।

बैसाख सुदी दशमांहि घाती क्षय करना।
पायो तुम केवल ज्ञान इन्द्रनिकी रचना॥
चांदनपुरके महावीर तोरी छवि प्यारी।
प्रभु भव आताप निवार तुम पद बलिहारी॥
ओं ह्रीं श्री महावीर जिनेंद्राय बैसाख सुदी दशमी केवलज्ञान प्राप्ताय अर्घं।

कार्तिक जु अमावस कृष्ण पावापुर ठाहीं।
भयो तीनलोकमें हर्ष पहुंचे शिव माहीं॥
चांदनपुरके महावीर तोरी छवि प्यारी।
प्रभु भव आताप निवार तुम पद बलिहारी॥
ओं ह्रीं श्री महावीर जिनेंद्राय कार्तिक वदी अमावस मोक्षमंगल प्राप्ताय अर्घं।

जयमाला. दोहा।

मंगलमय तुम हो सदा श्रीसन्मति सुखदाय।
चांदनपुर महावीरकी कहूं आरती गाय॥

पद्धड़ी छन्द।

जय जय चांदनपुर महावीर, तुम भक्तजनों की हरत पीर।
जड़ चेतन जगके लखत आप, दई द्वादशांग वानी अलाप॥१॥

अब पंचम काल मंझार आय, चांदनपुर अतिशय दई दिखाय।
टीलेके अंदर बैठि वीर, नित हरा गायका तुमने क्षीर ॥२॥
ग्वालाको फिर आगाह कीन, जब दरशन अपना तुमने दीन।
मूरति देखी अति ही अनूप, है नग्न दिगंबर शांति रूप ॥३॥
तहां श्रावक जन बहु गये आय, किये दरशन करि मनवचनकाय।
है चिह्न शेरका ठीक जान, निश्चय है ये श्रीवर्द्धमान ॥४॥
सब देशनके श्रावक जु आय, जिन भवन अनूपम दियो बनाय।
फिर शुद्ध दई वेदी कराय, तुरतहिं गजरथ फिर लयो सजाय ॥ ५
ये देख ग्वाल मनमें अधीर, मम ग्रह को त्यागो नहीं वीर।
तेरे दरशन बिन तजूं प्राण, सुनि टेर मेरी किरपा निधान ॥६॥
कीने रथमें प्रभु विराजमान, रथ हुआ अचल गिरके समान।
तब तरह तरहके किये जोर, बहुतक रथ गाड़ी दिये तोड़ ॥७॥
निशिमांहि स्वप्न सचिवहिं दिखात, रथ चलै ग्वालका लगत हाथ
भोरहिं झट चरण दियो बनाय, संतोष दियो ग्वालहिं कराय ॥८
करि जय जय प्रभु से करी टेर, रथ चल्यो फेर लागी न देर।
बहु निरत करत बाजे बजाई, स्थापन कीने तहँ भवन जाइ ॥९॥
इक दिन मंत्रीको लगा दोष, धरि तोप कही नृप खाइ रोष।
तुमको जब ध्याया वहां वीर, गोलासे झट बच गया वजीर ॥१०
मंत्री नृप चांदन गांव आय, दरशन करि पूजा की बनाय।
करि तीन शिखर मंदिर रचाय, कंचन कलशा दीने धराय ॥११

यह हुक्म कियो जयपुर नरेश, मालाना मेला हो हमेश ।
अब जुड़न लगे बहु नर उ नार, तिथि चैत सुदी पूनों मंझार १२
मीना गूजर आवें विचित्र, सब वरण जुड़े करि मन पवित्र ।
बहु निरत करत गावें सुहाय, कोई २ घृत दीपक रह्यो चढ़ाय १३
कोइ जय जय शब्द करें गंभीर, जय जय जय हे श्री महावीर ।
जैनी जन पूजा रचत आन, कोई छत्र चंवरके करत दान ॥ १४
जिसकी जो मन इच्छा करंत, मन वांछित फल पावें तुरंत ।
जो करें वंदना एकवार, सुख पुत्र संपदा हो अपार ॥१५॥
जो तुम चरणोंमें रखें प्रीत, ताको जगमें को सकें जीत ।
है शुद्ध यहांका पवन नीर, जहां अति विचित्र सरिता गंभीर १६
पूरनमल पूजा रची सार, हो भूल लेउ सज्जन सुधार ।
मेरा है शमशाबाद ग्राम, त्रय काल करूं प्रभुको प्रणाम ॥१७॥

घत्ता ।

श्री वर्द्धमान तुम गुण निधान उपमा न बनी तुम चरनन की ।
है चाह यही नित बनी रहै अभिलाष तुम्हारे दरशन की ॥
ओं ह्रीं श्री चांदन गांव महावीर जिनेंद्राय अर्घं ।

दोहा

अष्टकर्मके दहनको पूजा रची विशाल ।
पढ़े सुनें जो भावसे छूटे जग जंजाल ॥१॥

संवत जिन चौबीस सौ है बासठकी साल ।
एकादश कार्तिक वदी पूजा रची सम्हाल ॥२॥

इत्याशीर्वादः ।

महावीर स्वामी का भजन ।

चाल—रसिया ।

चांदनपुरके महावीर हमारी पीर हरो ॥ टेर ॥
जयपुर राज्य गांव चांदनपुर, तहां बनो उन्नत जिन मंदिर ।
तट नदी गम्भीर, हमारी पीर हरो ॥
चांदनपुरके महावीर हमारी पीर हरो ॥ १ ॥
पूरव बात चली यों आवे, एक गाय चरने को जावे ।
झर जाय उसका क्षीर, हमारी पीर हरो ॥
चांदनपुरके महावीर हमारी पीर हरो ॥ २ ॥
एक दिवस मालिक संग आयो, देख गाय टीलो खुदवायो ।
खोदत भयो अधीर, हमारी पीर हरो ॥
चांदनपुरके महावीर हमारी पीर हरो ॥ ३ ॥
रैन मांहि तब सुपनो दीनों, धीरे धीरे खोद जमीनो ।
है इसमें तस्वीर, हमारी पीर हरो ॥
चांदनपुरके महावीर हमारी पीर हरो ॥ ४ ॥
प्रात होत फिर भूमि खुदाई, वीर जिनेश्वर प्रतिमा पाई ।

भई इकट्ठी भीड़, हमारी पीर हरो ॥
चांदनपुरके महावीर हमारी पीर हरो ॥ ५ ॥
तब ही से हुआ मेला जारी, होय भीड़ हरसाल करारी ।
चैत मास आखीर, हमारी पीर हरो ॥
चांदनपुरके महावीर हमारी पीर हरो ॥ ६ ॥
लाखों मीना गूजर आवें, नाचें गावें गीत सुनावें ।
जय बोलें महावीर, हमारी पीर हरो ॥
चांदनपुरके महावीर हमारी पीर हरो ॥ ७ ॥
जुड़े हजारों जैनी भाई, पूजन पाठ करें सुखदाई ।
मनवचतन धरि धीर, हमारी पीर हरो ॥
चांदनपुरके महावीर हमारी पीर हरो ॥ ८ ॥
छत्र चमर सिंहासन लावें, भरि भरि घृतके दीप जलावें ।
बोलें जै गम्भीर, हमारी पीर हरो ॥
चांदनपुरके महावीर हमारी पीर हरो ॥ ९ ॥
जो कोई सुमरे नाम तुम्हारा, धन संतान बढ़े व्योपारा ।
होय निरोग शरीर, हमारी पीर हरो ॥
चांदनपुरके महावीर हमारी पीर हरो ॥ १० ॥
मक्खन शरण तुम्हारी आयो, पुण्य योगसे दर्शन पायो ।
खुली आज तकदीर, हमारी पीर हरो ॥
चांदनपुरके महावीर हमारी पीर हरो ॥ ११ ॥

आलोचना पाठ ।

यह आलोचनापाठ सामायिक पाठमें प्रथमकर्म प्रतिक्रमण कर्म है
उस कर्मके आदि वा अन्तमें बोलना चाहिये ।

दोहा ।

वंदों पांचों परमगुरु, चौबीसों जिनराज ।
करूं शुद्ध आलोचना, शुद्धिकरनके काज ॥१॥

सखी छंद चौदह मात्रा ।

सुनिये जिन अरज हमारी,
हम दोष किये अति भारी ।
तिनकी अब निर्वृत्ति काजा,
तुम सरन लही जिनराजा ॥ २ ॥
इक वे ते चउ इन्द्री वा,
मनरहित सहित जे जीवा ।
तिनकी नहिं करुणा धारी,
निरदइ ह्वै घात विचारी ॥ ३ ॥
समरंभ समारंभ आरंभ,
मन वच तन कीने प्रारंभ ।

कृत कारित मोदन करिकैं,
क्रोधादि चतुष्टय धरिकैं ॥ ४ ॥
शत आठ जु इमि भेदनतैं,
अघ कीने परछेदनतैं ।
तिनकी कहुं कोलों कहानी,
तुम जानत केवल ज्ञानी ॥ ५ ॥
विपरीत एकांत विनयके,
संशय अज्ञान कुनयके ।
वश होय घोर अघ कीने,
वचनैं नहिं जाय कहीने ॥ ६ ॥
कुगुरनकी सेवा कीनी,
केवल अदयाकरि भीनी ।
याविधि मिथ्यात भ्रमायो,
चहुंगति मधि दोष उपायो ॥ ७ ॥
हिंसा पुनि झूठ जु चोरी,
परवनितासों दृग जोरी ।

आरंभपरिग्रह भीनो,
पनपाप जु या विधि कीनो ॥ ८ ॥
सपरस रसना घ्रानन को,
चखु कान विषयसेवनको।
बहुकरम किये मनमाने,
कछु न्याय अन्याय न जाने ॥ ९ ॥
फल पंच उदंवर खाये,
मधु मांस मद्य चितचाहे।
नहिं अष्टमूलगुणधारी,
सेये कुविसन दुखकारी ॥ १० ॥
दुइवीस अभख जिनगाये,
सो भी निशदिन भुंजाये।
कछु भेदाभेद न पायो,
ज्यों त्योंकरि उदर भरायो ॥ ११ ॥
अनंतानु जु वंधी जानो,
प्रत्याख्यान अप्रत्याख्यानो।

संज्वलन चौकरी गुनिये,
सब भेद जु षोड़श मुनिये ॥ १२ ॥
परिहास अरतिरति शोग,
भय ग्लानि तिवेद संयोग ।
पनवीस जु भेद भये इम,
इनके वश पाप किये हम ॥ १३ ॥
निद्रावश शयन कराई,
सुपनेमधिदोष लगाई ।
फिर जागि विषयवन धायो,
नानाविध विषफल खायो ॥ १४ ॥
कियेऽहार निहारविहारा,
इनमें नहिं जतन विचारा ।
बिन देखी धरी उठाई,
बिन शोधी वस्तु जो खाई ॥ १५ ॥
तब ही परमाद सतायो,
बहु विध विकलप उपजायो ।

कछु सुधिबुधि नाहिं रही है,
मिथ्यामति छाय गयी है ॥ १६ ॥

मरजादा तुमढिंग लीनी,
ताहूमें दोष जु कीनी ।
भिन भिन अब कैसे कहिये,
तुम ज्ञानविषैं सब पइये ॥ १७ ॥

हा हा! मैं दुठ अपराधी,
त्रस जीवनराशि विराधी ।
थावर की जतन न कीनी,
उरमें करुणा नहिं लीनी ॥ १८ ॥

पृथिवी बहु खोद कराई,
महलादिक जागां चिनाई ।
पुन विनगाल्यो जल ढोल्यो,
पंखातैं पवन विलोल्यो ॥ १९ ॥

हा हा! मैं अदयाचारी,
बहु हरितकाय जु विदारी ।

तामधि जीवनके खंदा,
हम खाये धरि आनंदा ॥ २० ॥
हा हा! मैं परमाद बसाई,
बिन देखे अगनि जलाई ।
तामधि जे जीव जु आये,
तेहू परलोक सिधाये ॥ २१ ॥
बीध्यो अनराति पिसायो,
ईंधन बिन सोधि जलायो ।
झाड़ू लै जागां बुहारी,
चिवटी आदि जीव विदारी । ॥ २२ ॥
जल छानि जिवानी कीनी,
सो हू पुनि डारि जु दीनी ।
नहिं जलथानक पहुँचाई,
किरिया बिन पाप उपाई ॥ २३ ॥
जल मल मोरिन गिरवायो,
कृमिकुल बहु घात करायो ।

नदियन बिच चीर धुवाये,
कोसनके जीव मराये ॥ २४ ॥
अन्नादिक शोध कराई,
तामें जु जीव निसराई ।
तिनका नहिं जतन कराया,
गरियालैं धूप डराया ॥ २५ ॥
पुनि द्रव्य कमावन काजै,
बहु आरंभ हिंसा साजै ।
कीये अघ तिसनावश भारी,
करुणा नहिं रंच विचारी ॥ २६ ॥
इत्यादिक पाप अनंता,
हम कीने श्रीभगवंता ।
संतति चिरकाल उपाई,
वाणीतैं जात न गाई ॥ २७ ॥
ताको जु उदय अब आयो,
नानाविध मोहि सतायो ।

फल भुंजत जियदुख पावै,
वचतैं कैसे करि गावै ॥ २८ ॥

तुम जानत केवल ज्ञानी,
दुख दूर करो शिवथानी ।
हम तो तुम शरण लही है,
जिन तारनविरद सही है ॥ २९ ॥

इक गांवपती जो होवै,
सो भी दुखिया दुख खोवै ।
तुम तीन भुवनके स्वामी,
दुख मेटहु अंतरजामी ॥ ३० ॥

द्रोपदिको चीर बढ़ायो,
सीताप्रति कमल रचायो ।
अंजन से किये अकामी,
दुखमेटो अंतरजामी ॥ ३१ ॥

मेरे अवगुन न चितारो,
प्रभु अपनो विरद सम्हारो ।

सब दोषरहित करि स्वामी,
दुखमेटहु अंतरजामी ॥ ३२ ॥
इन्द्रादिक पदवी न चाहूं,
विषयनिमें नाहिं लुभाऊं।
रागादिक दोष हरीजे,
परमातम निजपद दीजे ॥ ३३ ॥

दोहा।

दोषरहित जिनदेवजी, जिनपद दीज्यो मोय।
सब जीवनके सुख बढ़े, आनंद मंगल होय ॥
अनुभव माणिक पारखी, 'जौहरी' आप जिनंद।
ये ही वर मोहि दीजिये, चरणशरण आनंद ॥

इत्याशीर्वादः।

सामायिक पाठ भाषा

१ प्रतिक्रमण कर्म।

काल अनंत भ्रम्यो जगमें सहिये दुख भारी,
जन्ममरण नित किये पापको ह्वै अधिकारी।

कोटि भवांतरमांहि मिलन दुर्लभ सामायिक,
धन्य आज मैं भयो जोग मिलियो सुखदायक ॥१॥
हे सर्वज्ञजिनेश! किये जे पापजु मैं अब,
ते सब मनवचकाय योगकी गुप्ति बिना लभ ।
आप समीप हजूर मांहि मैं खड़ो खड़ो सब,
दोष कहूं सो सुनो करो नठ दुख देहिं जब ॥२॥
क्रोध मान मद लोभ मोह मायावशि प्रानी,
दुखसहित जे किये दया तिनकी नहिं आनी ।
बिना प्रियोजन एकेंद्रिय बिति चउपंचेंद्रिय,
आप प्रमादहिं मिटे दोष जो लग्यो मोहि जिय ॥३॥
आपसमें इकठौर थाप करि जे दुख दीने,
पेलि दिए पगतलें दाबिकरि प्राण हरीने ।
आप जगतके जीव जितेतिन सबके नायक,
अरज करूं मैं सुनो दोष मेटो दुखदायक ॥४॥
अंजन आदिक चोर महाघनघोर पापमय,
तिनके जे अपराध भये ते क्षमा क्षमा किय ।
मेरे जे अब दोष भये ते क्षमहु दयानिधि,
यह पडिकोणो कियो आदि पटकर्म मांहि विधि ॥५॥

२ द्वितीय प्रत्याख्यान कर्म ।

इसके आदि वा अन्त में आलोचना पाठ बोलकर फिर
तीसरे सामायिक कर्मका पाठ करना चाहिये ।

जो प्रमादवशि होय विराधे जीव घनेरे,
तिनको जो अपराध भयो मेरे अघ ढेरे।
सो सब झूठो होउ जगतपतिके परसादैं,
जा प्रसादतैं मिलै सर्व सुख दुख न लाधैं ॥६॥
मैं पापी निर्लज्ज दया करि हीन महाशठ,
किये पाप अघ ढेर पापमति होय चित्त दुठ।
निंदू हूं मैं बार बार निज जियको गरहूं,
सबविधि धर्म उपाय पाय फिर पापहिं करहूं ॥७॥
दुर्लभ है नरजन्म तथा श्रावक कुल भारी,
सतसंगति संजोग धर्म जिन श्रद्धा धारी।
जिन वचनामृत धार समावर्तै जिनवानी,
तोहू जीव संहारे धिक धिक धिक हम जानी ॥८॥
इन्द्रियलंपट होय खोय निज ज्ञान जमा सब,
अज्ञानी जिमि करै तिसी विधि हिंसक ह्वै अब।
गमनागमन करंतो जीव विराधे भोले,
ते सब दोष किये निंदू अब मन वच तोले ॥९॥
आलोचनविधि थकी दोष लागे जु घनेरे,
ते सब दोष विनाश होउ तुम तैं जिन मेरे।
बारबार इस भांति मोहमद दोष कुटिलता,
ईर्षादिकतैं भये निंदिये जे भयभीता ॥१०॥

३ तृतीय सामायिक भावकर्म।

सब जीवनमें मेरे समताभाव जग्यो है,
सब जिय मोसम समता राखो भाव लग्यो है।
आर्त्त रौद्र द्वय ध्यान छांड़ि करिहूं सामायिक,
संजम मो कब शुद्ध होय यह भावबधायक ॥११॥
पृथिवी जल अरु अग्नि वायु चउकाय वनस्पति,
पंचहि थावरमांहि तथा त्रस जीव बसैं जित।
बेइन्द्रिय तिय चउ पंचेंद्रियमांहि जीव सब,
तिनतैं क्षमा कराऊं मुझपर क्षमा करो अब ॥१२॥
इस अवसरमें मेरे सब सम कंचन अरु तृण,
महल मसान समान शत्रु अरु मित्रहिं सम गण।
जामन मरण समान जानि हम समता कीनी,
सामायिकका काल जितै यह भाव नवीनी ॥१३॥
मेरो है इक आतम तामें ममत जु कीनो,
और सबै मम भिन्न जानि समता रस भीनो।
मात पिता सुत बंधु मित्र तिय आदि सबै यह,
मोतैं न्यारे जानि जथारथ रूप कर्यो गह ॥१४॥
मैं अनादि जगजालमांहि फंसि रूप न जाण्यो,
एकेंद्रिय वे आदि जंतुको प्राण हराण्यो।
ते सब जीवसमूह सुनो मेरी यह अरजी

भवभवको अपराध छिमा कीज्यो कर मरजी ॥१५॥

४ चतुर्थ स्तवनकर्म ।

नमौं ऋषभ जिनदेव अजित जिन जीति कर्मको,
संभव भवदुखहरण करण अभिनंद शर्म को ।
सुमति सुमति दातार तार भवसिंधु पार कर,
पद्मप्रभ पद्माभ भानि भवभीति प्रीति धर ॥१६॥
श्रीसुपार्श्व कृतपाश नाश भव जास शुद्धकर,
श्रीचंद्रप्रभ चंद्रकांतिसम देह कांतिधर ।
पुष्पदंत दमि दोषकोश भविपोष रोषहर,
शीतल शीतल करण हरण भवताप दोषकर ॥१७॥
श्रेयरूप जिनश्रेय ध्येय नित सेय भव्यजन,
वासुपूज्य शतपूज्य वासवादिक भवभयहन ।
विमल विमलमति देन अंतगत है अनंत जिन,
धर्मशर्मशिवकरण शांतिजिन शांतिविधायिन ॥१८॥
कुंथ कुंथुमुख जीवपाल अरनाथ जाल हर,
मल्लि मल्लसम मोहमल्लमारण प्रचार धर ।
मुनिसुव्रत व्रतकरण नमत सुर संघहिं नमि जिन,
नेमिनाथ जिन नेमि धर्मरथमांहि ज्ञानधन ॥१९॥
पार्श्वनाथ जिन पार्श्व उपलसम मोक्ष रमापति,
वर्द्धमान जिन नमूं वमूं भवदुखकर्मकृत ।

या विधि में जिन संघरूप चउबीस संख्यधर,
स्तवं नमं हूं बारबार बंदं शिव सुखकर ॥२०॥

५ पंचम वंदनाकर्म।

वंदूं मैं जिनवीर धीर महावीर सुमनमति,
वर्द्धमान अतिवीर बंदि हूँ मनवचतनकृत।
त्रिशलातनुज महेश धीश विद्यापति वंदूं,
वंदोंनित प्रति कनकरूप तनु पापनिकंदूं ॥२१॥
सिद्धारथ नृपनंददुंद दुख दोप मिटावन,
दुरित दवानल ज्वलित ज्वाल जगजीव उधारन।
कुंडलपुर करि जन्म जगत जिय आनँदकारन,
वर्ष बहत्तर आयु पाय सबही दुख टारन ॥२२॥
सप्तहस्त तनु तुङ्ग भंगकृतजन्ममरणभय,
बालब्रह्ममय ज्ञेय हेय आदेय ज्ञानमय।
दे उपदेश उधारि तारि भवसिंधु जीवघन,
आप बसे शिवमांहि ताहि वंदों मन वच तन ॥२३॥
जाके वंदनथकी दोप दुखदूरहि जावे,
जाके वंदन थकी मुक्तितिय सन्मुख आवे।
जाके वंदनथकी वंद्य होवें सुरगनके,
ऐसे वीर जिनेश वन्दि हूं क्रमयुग तिनके ॥२४॥
सामयिक पटकर्ममाहि वंदन यह पंचम,

वंदों वीरजिनेंद्र इंद्रशतवंद्य वंद्य मम।
जन्ममरणभय हरो करो अघशांति शांतिमय,
मैं अघकोश सुपोष दोषको दोष विनाशय ॥२५॥

६ छठा कायोत्सर्ग कर्म।

कायोत्सर्ग विधान करूं अंतिम सुखदाई,
कायत्यजनमय होय काय सबको दुखदाई।
पूरब दक्षिण नमं दिशा पश्चिम उत्तर में,
जिनगृह वंदन करूं हरूं भवपापतिमिर में ॥२६॥
शिरोनती मैं करूं नमं मस्तक कर धरिकैं,
आवर्तादिक क्रिया करूं मन वच मद हरिकैं।
तीनलोक जिनभवनमांहि जिन हैं जु अकृत्रिम,
कृत्रिम हैं द्वय अर्द्ध द्वीप मांहीं वन्दों जिम ॥२७॥
आठकोडि परि छप्पन लाख जु सहस सत्याणं,
च्यारि शतक पर असी एक जिनमंदिर जाणं।
व्यंतर ज्योतिषमांहि संख्यरहिते जिनमंदिर,
ते सब वंदन करूं हरहु मम पाप संघकर ॥२८॥
सामायिकसम नाहिं और कोउ वैरमिटायक,
सामायिक सम नाहिं और कोउ मैत्रीदायक।
श्रावक अणुव्रत आदि अन्तसप्तम गुणथानक,
यह आवश्यक किये होय निश्चय दुखहानक ॥२९॥

जे भवि आतमकाज-करण उद्यम के धारी,
ते सब काज विहाय करो सामायिक सारी।
राग रोष मदमोहक्रोध लोभादिक जे सब,
बुध महाचन्द विलाय जाय तातैं कीज्यो अब ॥३०॥

इति सामायिक पाठ समाप्त

भक्तामर स्तोत्र भाषा।

आदिपुरुष आदीश जिन, आदि सुविधिकरतार।
धरमधुरंधर परमगुरु, नमों आदि अवतार ॥१॥

चौपाई।

सुरनतमुकुट रतन छवि करैं,
अन्तर पापतिमिर सब हरैं।
जिनपद वंदों मनवचकाय,
भवजलपतित-उधरनसहाय ॥ १ ॥
श्रुतपारग इंद्रादिक देव,
जाकी थुति कीनी कर सेव।
शब्द मनोहर अरथ विशाल,
तिस प्रभुकी वरनों गुनमाल ॥ २ ॥

विबुधवंद्यपद मैं मतिहीन,
होय निलज्ज थुति-मनसा कीन।
जलप्रतिबिंब बुद्धको गहै,
शशिमंडल बालक ही चहै॥ ३॥
गुनसमुद्र तुमगुन अविकार,
कहत न सुरगुरु पावैं पार।
प्रलयपवनउद्धत जलजंतु,
जलधि तिरैको भुजबलवंत॥ ४॥
सो मैं शक्तिहीन थुति करूं,
भक्तिभाववश कछुनहि डरूं।
ज्यों मृगि निजसुतपालन हेत,
मृगपतिसन्मुख जाय अचेत॥ ५॥
मैं शठ सुधीहंसन को धाम,
मुझ तव भक्ति-बुलावै राम।
ज्यों पिक अंबकलीपरभाव,
मधुऋतु मधुर करै आराव॥ ६॥

तुमजस जंपत जन छिनमाहिं,
जनम जनमके पाप नशाहिं।
ज्यों रवि उगै फटै ततकाल,
अलिवत नील निशातमजाल ॥ ७ ॥
तुव प्रभावतैं कहूं विचार,
होसी यह थुति जनमनहार।
ज्यों जल कमलपत्रपै परै,
मुक्ताफलकी द्युति विस्तरै ॥ ८ ॥
तुम गुनमहिमा हतदुखदोष,
सो तो दूर रहो सुखपोष।
पापविनाशक है तुम नाम,
कमलविकाशी ज्यों रविधाम ॥ ९ ॥
नहिं अचंभ जो होहिं तुरंत,
तुमसे तुमगुण वरणत संत।
जो अधीनको आपसमान,
करै न सो निंदित धनवान ॥ १० ॥

इकटक जन तुमकों अविलोय,
अवरविषैरति करै न सोय।
कोकरिक्षीरजलधिजल पान,
क्षारनीर पीवै मतिमान ॥ ११ ॥
प्रभु तुम वीतराग गुणलीन,
जिन परमाणु देह तुम कीन।
हैं तितने ही ते परमाण,
यातैं तुम सम रूप न आन ॥ १२ ॥
कहँ तुम मुख अनुपम अविकार,
सुरनरनागनयनमनहार।
कहां चंद्रमंडल सकलंक,
दिनमें ढाक पत्र सम रंक ॥ १३ ॥
पूरनचन्द जोति छविवंत,
तुमगुन तीनजगत लंघंत।
एक नाथ त्रिभुवन आधार,
तिन विचरतको करै निवार ॥ १४ ॥

जो सुरतिय विभ्रम आरम्भ,
मन न डिग्यो तुम तौ न अचंभ।
अचल चलावै प्रलय समीर,
मेरुशिखर डगमगैं न धीर ॥ १५ ॥

धूमरहित वाती गत नेह,
परकाशै त्रिभुवन घर एह।
वातगम्य नाहीं परचंड,
अपर दीप तुम बलो अखंड ॥ १६ ॥

छिपहु न लुपहु राहुकी छांहि,
जगपरकाशक हो छिन मांहि।
घन अनवर्त्त दाह विनिवार,
रवितैं अधिक धरो गुणसार ॥ १७ ॥

सदा उदित विदलित मनमोह,
विघटित मेघराह अविरोह।
तुम मुखकमल अपूरवचंद,
जगतविकाशी जोति अमंद ॥१८॥

निशदिन शशिरविको नहिं काम,
तुम मुखचंद हरै तम धाम ।
जो स्वभावतैं उपजै नाज,
सजल मेघ तो कौनहु काज ॥ १६ ॥
जो सुबोध सोहै तुममांहि,
हरि हर आदिकमैं सो नाहिं ।
जो द्युति महारतनमैं होय,
काचखंड पावै नहिं सोय ॥ २० ॥

नाराच छन्द ।

सराग देव देख मैं भला विशेष मानिया,
स्वरूप जाहि देख वीतराग तू पिछानिया ।
कछू न तोहि देखके जहां तुही विशेखिया,
मनोग चित्तचोर और भूलहू न पेखिया ॥२१॥
अनेक पुत्रवंतिनी नितंबिनी सपूत हैं,
न तो समान पुत्र और माततैं प्रसूत हैं ।
दिशा धरंत तारिका अनेक कोटि को गिनै,
दिनेश तेजवंत एक पूर्व ही दिशा जनै ॥२२॥

पुरान हो पुमान हो पुनीत पुन्यवान हो,
कहैं मुनीश अन्धकारनाश को सुभान हो।
महंत तोहि जानके न होय वश्य काल के,
न और मोहि मोखपंथ देय तोहि टालके ॥२३॥
अनंत नित्य चित्तकी अगम्य रम्य आदि हो,
असंख्य सर्वव्यापि विष्णु ब्रह्म हो अनादि हो।
महेश कामकेतु योग ईश योग ज्ञान हो,
अनेक एक ज्ञानरूप शुद्ध संतमान हो ॥२४॥
तुही जिनेश बुद्ध है सुबुद्धिके प्रमानतैं,
तुही जिनेश शंकरो जगत्त्रयी विधानतैं।
तुही विधात है सही सुमोखपंथ धारतैं,
नरोत्तमो तुही प्रसिद्ध अर्थके विचारतैं ॥२५॥
नमों करूं जिनेश तोहि आपदा निवार हो,
नमों करूं सुभूरि भूमिलोकके सिंगार हो।
नमों करूं भवाब्धि नीरराशिशोष हेतु हो,
नमों करूं महेश तोहि मोखपंथ देतु हो ॥२६॥

चौपाई १५ मात्रा।

तुम जिन पूरनगुनगन भरे,
दोष गर्वकरि तुम परिहरे।
और देवगण आश्रय पाय,
स्वप्न न देखे तुम फिर आय ॥२७॥
तरु अशोकतर किरन उदार,
तुमतन शोभित है अविकार।
मेघनिकट ज्यों तेज फुरंत,
दिनकर दिपै तिमिर निहनंत ॥२८॥
सिंहासन मणिकिरन विचित्र,
तापर कंचनवरण पवित्र।
तुम तन शोभित किरनविथार,
ज्यों उदयाचल रवितमहार ॥ २९ ॥
कुंदपुहुप सितचमर ढुरंत,
कनक वरन तुमतन शोभंत।
ज्यों सुमेरुतट निर्मल कांति,
झरना झरै नीर उमगांति ॥ ३० ॥

ऊंचे रहैं सूर दुति लोप,
तीन छत्र तुम दिपैं अगोप ।
तीन लोककी प्रभुता कहैं,
मोती झालरसों छवि लहैं ॥ ३१ ॥
दुंदुभि शब्द गहर गंभीर,
चहुंदिशि होय तुम्हारे धीर ।
त्रिभुवनजन शिवसंगम करै,
मानूं जय जय रव उच्चरै ॥ ३२ ॥
मंद पवन गंधोदक इष्ट,
विविध कल्पतरु पुहुप सुवृष्ट ।
देव करैं विकसित दल सार,
मानों द्विजपंकति अवतार ॥ ३३ ॥
तुम तन भामंडल जिनचंद,
सब दुतिवंत करत है मंद ।
कोटिशंख रवितेज छिपाय,
शशि निर्मल निशि करै अछाय ॥ ३४ ॥

स्वर्ग मोक्ष मारग संकेत,
परम धरम उपदेशन हेत।
दिव्य वचन तुम खिरैं अगाध,
सब भाषा गर्भित हितसाध॥ ३५।

दोहा।

विकसित सुवरन कमलदुति,
नखदुति मिलि चमकाहिं।
तुम पद पदवी जहँ धरो,
तहँ सुर कमल रचाहिं॥ ३६॥
ऐसी महिमा तुम विषै,
और धरै नाहिं कोय।
सूरज में जो जोत है,
नहिं तारागण होय॥ ३७॥

षट्पद।

मदअवलिप्तकपोल-मूल अलिकुल झंकारैं।
तिन सुन शब्द प्रचंड क्रोध उद्धत-अति धारैं॥
कालवरन विकराल, कालवत सनमुख आवै।

ऐरावत सो प्रबल, सकल जन भय उपजावै ॥
देखिगयंद न भय करै तुम पदमहिमा लीन।
विपतिरहित संपतिसहित, वरतैं भक्त अदीन॥३८

अति मदमत्तगयंद कुंभथल नखन विदारै।
मोती रक्त समेत डारि भूतल सिंगारै॥
बांकी दाढ विशाल, वदनमें रसना लोलै।
भीमभयानकरूप देखि जन थरहर डोलै॥
ऐसे मृगपति पगतलैं, जो नर आयो होय।
शरण गये तुम चरणकी, बाधा करै न सोय॥३९॥

प्रलयपवनकर उठी आग जो तास पटंतर।
वमैं फुलिंग शिखा उतंग परजलैं निरंतर॥
जगत समस्त निगल्ल भस्मकर हैगी मानों।
तड़तड़ाट दवअनल, जोर चहुंदिशा उठानों॥
सो इक छिनमें उपशमैं, नामनीर तुम लेत।
होय सरोवर परिनमैं विकसित कमल समेत॥४०

कोकिलकंठसमान, श्याम तन क्रोध जलंता।

रक्तनयन फुंकार, मारविषकरण उगलंता ॥
फणको ऊंचो करै, वेग ही सन्मुख धाया।
तब जन होय निःशंक, देख फणिपतिको आया ॥
जो चांपै निज पगतलें, व्यापै विष न लगार।
नागदमनि तुम नामकी है जिनके आधार ॥४१
जिस रनमाहिं भयानक रवकर रहे तुरंगम।
घनसे गज गरजाहिं मत्त मानों गिरि जंगम ॥
अति कोलाहलमाहिं बात जहं नाहिं सुनीजै।
राजन को परचंड, देख बल धीरज छीजै ॥
नाथ तिहारे नामतें अघ छिनमांहि पलाय।
ज्यों दिनकर परकाशतें अन्धकार विनशाय ॥४२
मारै जहां गयंद कुंभ हथियार विदारै।
उमगै रुधिर प्रवाह वेग जलसम विस्तारै ॥
होय तिरन असमर्थ महाजोधा बलपूरे।
तिस रनमें जिन तोय भक्त जे हैं नर सूरे ॥
दुर्जय अरिकुल जीतके, जय पावें निकलंक।
तुम पद पंकज मन वसें ते नर सदा निशंक ॥४३

नक्र चक्र मगरादि मच्छकरि भय उपजावै ।
जामैं वड़वा अग्नि दाहतैं नीर जलावै ॥
पार न पावै जास थाह नहिं लहिये जाकी ।
गरजै अतिगंभीर, लहर की गिनति न ताकी ॥
सुख सौं तिरे समुद्र को, जे तुमगुनसुमराहिं ।
लोलकलोलनके शिखर, पार यान ले जाहिं ॥४४

महा जलोदर रोग, भार पीड़ित नर जे हैं ।
वात पित्त कफ कुष्ट आदि जो रोग गहे हैं ॥
सोचत रहैं उदास नाहिं जीवन की आशा ।
अति घिनावनी देह, धरै दुर्गंधि निवासा ॥
तुम पदपंकजधूलको, जो लावैं निज अंग ।
ते नीरोग शरीर लहि, छिनमें होय अनंग ॥४५॥

पांव कंठतैं जकर बांध सांकल अति भारी ।
गाढी बेड़ी पैरमांहि, जिन जांघ विदारी ॥
भूख प्यास चिन्ता शरीर दुख जे विललाने ।
सरन नाहिं जिन कोय भूपके वंदीखाने ॥
तुम सुमरत स्वयमेव ही बन्धन सब खुल जांहि ।

छिनमें ते सम्पति लहैं, चिन्ता भय बिनसाहिं॥४६
महामत्त गजराज और मृग राज दवानल।
फनपति रण परचगड नीरनिधि रोग महाबल॥
बन्धन ये भय आठ डरपकर मानों नाशै।
तुम सुमरत छिनमाहिं, अभय थानक परकाशै॥
इस अपार संसार में, शरन नाहिं प्रभु कोय।
यातैं तुम पदभक्तको भक्ति सहाई होय ॥४७॥
यह गुनमाल विशाल नाथ तुम गुणन सवारी।
विविध वर्णमय पुहुप, गूंथ मैं भक्ति विथारी॥
जे नर पहिरें कण्ठ भावना मनमें भावै।
मानतुंग ते निजाधीन, शिवलक्ष्मी पावै॥
भाषा भक्तामर कियो हेमराज हितहेत।
जे नर पढ़े सुभावसों ते पावै शिवखेत॥४८॥

इति।

पं० दौलतराम कृत स्तुति

सकल ज्ञेय ज्ञायक तदपि, निजानंद रसलीन।
सो जिनेंद्र जयवंत नित, अरिरज रहसि विहीन॥

पद्धरि छन्द।

जय वीतराग विज्ञानपूर, जय मोहतिमिरको हरन सूर।
जय ज्ञान अनन्तानन्तधार, दृग सुख वीरजमंडित अपार ॥
जय परमशांत मुद्रासमेत, भविजनको निज अनुभूति हेत।
भवि भागनवश जोगेवशाय, तुम धुनि ह्वै सुनि विभ्रम नशाय॥
तुम गुण चिन्तत निज पर विवेक, प्रगटै विघटैं आपद अनेक।
तुम जगभूषण दूषण वियुक्त, सब महिमायुक्त विकल्प मुक्त ॥
अविरुद्ध शुद्ध चेतन स्वरूप, परमातम परम पावन अनूप।
शुभ अशुभ विभाव अभाव कीन, स्वभाविक परिणति मयअछीन
अष्टादश दोष विमुक्त धीर, स्वचतुष्टयमय राजत गंभीर।
मुनि गणधरादि सेवत महंत, नवकेवललब्धि रमा धरंत ॥
तुम शासन सेय अमेय जीव, शिव गये जाहिं जहैं सदीव।
भवसागरमें दुखछार वारि, तारनको औरन आप टारि ॥
यह लखि निज दुखगद हरण काज तुमही निमित्तकारण इलाज।
जाने तातैं मैंशरण आय, उचरौं निज दुख जो चिर लहाय ॥
मैं भ्रम्यो अपनयो विसरि आप, अपनाये विधि फल पुण्य पाप।
निजको परको करता पिछान, परमें अनिष्टता इष्ट ठान ॥
आकुलित भयो अज्ञान धारि, ज्यों मृग मृगतृष्णा जानि वारि।
तन परिणतिमें आपो चितार, कबहूं न अनुभवो स्वपद सार ॥
तुमको बिन जाने जो कलेश, पाये सो तुम जानत जिनेश।

पशु नारक नर सुरगति मंझार, भव धर धर मर्यो अनन्तवार॥
अब काललब्धि बलतैं दयाल, तुम दर्शन पाय भयो खुशाल ।
मन शान्त भयो मिटि सकल द्वंद, चाख्यो स्वातमरस दुखनिकंद
तातैं अब ऐसी करहु नाथ, बिछुरै न कभी तुव चरण साथ।
तुम गुणगण को नहिं छेव देव, जगतारनको तुव विरद एव॥
आतमके अहित विषय कषाय, इनमें मेरी परिणति न जाय ।
मैं रहूं आपमें आप लीन, सो करो होहुं ज्यों निजाधीन॥
मेरे न चाह कछु और ईश, रत्नत्रय निधि दीजे मुनीश ।
मुझ कारजके कारण सु आप, शिव करहु हरहु मम मोहताप॥
शशि शांति करन तपहरण हेत, स्वयमेव तथा तुम कुशल देत।
पीवत पियूष ज्यों रोग जाय, त्यों तुम अनुभवतैं भव नशाय॥
त्रिभुवन तिहुँकालमंझार कोय, नहिं तुम बिन निज सुखदाय होय
मो उर यह निश्चय भयो आज, दुखजलधि उतारन तुम जिहाज
तुमगुणगणमणि गणपती, गणत न पावहिं पार ।
'दौल' स्वल्पमति किमि कहै, नमूं त्रियोग संभार॥

इति पं० दौलतराम कृत स्तुति ।

पं० बुधजन कृत स्तुति ।

प्रभु पतितपावन मैं अपावन, चरन आयो शरणजी ।
यो विरद आप निहार स्वामी, मेट जामन मरण जी॥

तुम ना पिछान्या आन मान्या देव विविध प्रकारजी ।
या बुद्धिसेती निज न जाण्या भ्रम गिण्या हितकारजी ॥
भव विकट वनमें करम बैरी, ज्ञान धन मेरो हस्यो ।
तब इष्ट भूल्यो भ्रष्ट होय, अनिष्ट गति धरतो फिस्यो ॥
धन घड़ी यो धन दिवस यो ही धन जनम मेरो भयो ।
अब भाग मेरो उदय आयो, दरश प्रभुको लखि लयो ॥
छवि वीतरागी नगन मुद्रा दृष्टि नाशा पै धरैं ।
वसु प्रातिहार्य अनंत गुण जुत कोटि रवि छविको हरैं ॥
मिट गयो तिमिर मिथ्यात मेरो, उदय रवि आतम भयो ।
मो उर हरष ऐसो भयो, मनुरंक चिन्तामणि लयो ॥
मैं हाथ जोड़ नमाय मस्तक वीनऊं तुव चरनजी ।
सर्वोत्कृष्ट त्रिलोकपति जिन, सुनहु तारन तरनजी ॥
जाचूं नहीं सुरवास पुनि नरराज परिजन साथजी ।
'बुध' जाचहूं तुव भक्ति भव, दीजिये शिवनाथजी ॥

पं० भूधरकृत स्तुति

अहो! जगतगुरु एक, सुनियो अरज हमारी ।
तुम हो दीनदयालु, मैं दुखिया संसारी ॥
इस भव बनमें वादि, काल अनादि गमायो ।
भ्रमत चहूँगति माहिं, सुख नहिं दुख बहु पायो ॥

कर्म महारिपु जोर, एक ना कान करैं जी।
मन मान्या दुख देहिं काहूसों नाहिं डरैं जी॥
कबहूं इतर निगोद, कबहूं नर्क दिखावैं।
सुरनर पशुगति माहिं, बहुविधि नाच नचावैं॥
प्रभु! इनके परसंग, भव भव माहिं बुरे जी।
जे दुख देखे देव! तुमसों नाहिं दुरे जी॥
एक जनमकी बात, कहि न सकों सुनि स्वामी।
तुम अनन्त परजाय, जानत अन्तरयामी॥
मैं तो एक अनाथ, ये मिलि दुष्ट घनेरे।
कियो बहुत बेहाल, सुनियो साहिब मेरे॥
ज्ञान महानिधि लूटि रंक निबल करि डार्यो।
इन ही तुम मुझ माहिं, हे जिन! अन्तर पार्यो॥
पाप पुण्य मिल दोइ, पायनि बेड़ी डारी।
तन कारागृह माहिं मोहि दिये दुख भारी॥
इनको नेक बिगार, मैं कछु नाहिं कियो जी।
बिन कारन जगवंद्य! बहुविधि बैर लियो जी॥
अब आयो तुम पास सुनि कर, सुजस तिहारो।
नीति निपुन महाराज कीजे न्याय हमारो॥
दुष्टन देहु निकार, साधुनको रख लीजे।
विनवै भूधरदास हे प्रभु! ढील न कीजे॥

पं० भूदरकृत गुरु स्तुति

राग भरथरी—दोहा

ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज॥१॥
मोह महारिपु जानिकैं, छांड्यो सब घरबार।
होय दिगम्बर वन बसे, आतम शुद्ध विचार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज॥२॥
रोग उरग बिल वपु गिण्यो, भोग भुजङ्ग समान।
कदली तरु संसार है, त्यागो सब यह जान॥
ते गुरु मेरे मन वसो, जे भव जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज॥३॥
रतनत्रय निधि उर धरैं, अरु निरग्रन्थ त्रिकाल।
मारयो काम खबीसको, स्वामी परम दयाल॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज॥४॥
पंच महाव्रत आचरैं, पांचों समिति समेत।
तीन गुपति पालैं सदा, अजर अमर पद हेत॥

ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥५॥
धर्म धरैं दश लक्षणी, भावैं भावनासार।
सहैं परीषह बीस द्वै चारित रतन भण्डार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भव जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥६॥
जेठ तपै रवि आकरो सूखे सरवर नीर।
शैल शिखर मुनि तप तपैं दाझैं नगन शरीर॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवि जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥७॥
पावस रैन डरावनी बरसै जलधर धार।
तरुतल निवसैं साहसी चालैं झंझावार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥८॥
शीत पड़े कपि-मद गले, दाहै सब वनराय।
ताल तरंगनिके तटै, ठाड़े ध्यान लगाय॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥९॥
इह विधि दुद्धर तप तपैं, तीनों कालमंझार।
लागे सहज सरूपमें, तनसों ममत निवार॥

ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥५॥
धर्म धरैं दश लक्षणी, भावैं भावनासार।
सहैं परीषह बीस द्वै चारित रतन भण्डार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भव जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥६॥
जेठ तपै रवि आकरो सूखे सरवर नीर।
शैल शिखर मुनि तप तपैं दाझैं नगन शरीर॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवि जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥७॥
पावस रैन डरावनी बरसै जलधर धार।
तरुतल निवसैं साहसी चालैं झंझावार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥८॥
शीत पड़े कपि-मद गले, दाहै सब वनराय।
ताल तरंगनिके तटै, ठाड़े ध्यान लगाय॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥९॥
इह विधि दुद्धर तप तपैं, तीनों कालमंझार।
लागे सहज सरूपमें, तनसों ममत निवार॥

ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥५॥
धर्म धरैं दश लक्षणी, भावैं भावनासार।
सहैं परीषह बीस द्वै चारित रतन भण्डार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भव जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥६॥
जेठ तपै रवि आकरो सूखे सरवर नीर।
शैल शिखर मुनि तप तपैं दाझैं नगन शरीर॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवि जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥७॥
पावस रैन डरावनी बरसै जलधर धार।
तरुतल निवसैं साहसी चालै झंझावार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥८॥
शीत पड़े कपि-मद गले, दाहै सब वनराय।
ताल तरंगनिके तटैं, ठाड़े ध्यान लगाय॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥९॥
इह विधि दुद्धर तप तपैं, तीनों कालमंझार।
लागे सहज सरूपमें, तनमों ममत निवार॥

ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥५॥
धर्म धरैं दश लक्षणी, भावैं भावनासार।
सहैं परीषह बीस द्वै चारित रतन भण्डार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भव जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥६॥
जेठ तपै रवि आकरो सूखे सरवर नीर।
शैल शिखर मुनि तप तपैं दाझैं नगन शरीर॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवि जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥७॥
पावस रैन डरावनी बरसै जलधर धार।
तरुतल निवसैं साहसी चालै झंझावार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥८॥
शीत पड़े कपि-मद गले, दाहै सब वनराय।
ताल तरंगनिके तटै, ठाड़े ध्यान लगाय॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥९॥
इह विधि दुद्धर तप तपैं, तीनों कालमंझार।
लागे सहज सरूपमें, तनसों ममत निवार॥

ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥५॥
धर्म धरैं दश लक्षणी, भावैं भावनासार।
सहैं परीषह बीस द्वै चारित रतन भण्डार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भव जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥६॥
जेठ तपै रवि आकरो सूखे सरवर नीर।
शैल शिखर मुनि तप तपैं दाझैं नगन शरीर॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवि जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥७॥
पावस रैन डरावनी बरसै जलधर धार।
तरुतल निवसैं साहसी चालैं झंझावार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥८॥
शीत पड़े कपि-मद गले, दाहै सब वनराय।
ताल तरंगनिके तटैं, ठाड़े ध्यान लगाय॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥९॥
इह विधि दुद्धर तप तपैं, तीनों कालमंझार।
लागे सहज सरूपमें, तनसों ममत निवार॥

ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज ।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥५॥
धर्म धरैं दश लक्षणी, भावैं भावनासार ।
सहैं परीषह बीस द्वै चारित रतन भण्डार ॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भव जलधि जहाज ।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥६॥
जेठ तपै रवि आकरो सूखे सरवर नीर ।
शैल शिखर मुनि तप तपैं दाझैं नगन शरीर ॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवि जलधि जहाज ।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥७॥
पावस रैन डरावनी बरसै जलधर धार ।
तरुतल निवसैं साहसी चालैं झंझावार ॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज ।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥८॥
शीत पड़े कपि-मद गले, दाहै सब वनराय ।
ताल तरंगनिके तटैं, ठाड़े ध्यान लगाय ॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज ।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥९॥
इह विधि दुद्धर तप तपैं, तीनों कालमंझार ।
लागे सहज सरूपमें, तनसों ममत निवार ॥

ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥५॥
धर्म धरैं दश लक्षणी, भावैं भावनासार।
सहैं परीषह बीस द्वै चारित रतन भण्डार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भव जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥६॥
जेठ तपै रवि आकरो सूखे सरवर नीर।
शैल शिखर मुनि तप तपैं दाझै नगन शरीर॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवि जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥७॥
पावस रैन डरावनी बरसै जलधर धार।
तरुतल निवसैं साहसी चालै झंझावार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥८॥
शीत पड़े कपि-मद गले, दाहै सब वनराय।
ताल तरंगनिके तटै, ठाड़े ध्यान लगाय॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥९॥
इह विधि दुद्धर तप तपैं, तीनों कालमंझार।
लागे सहज सरूपमें, तनसौं ममत निवार॥

ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज ।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥५॥
धर्म धरैं दश लक्षणी, भावैं भावनासार ।
सहैं परीषह बीस द्वै चारित रतन भण्डार ॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भव जलधि जहाज ।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥६॥
जेठ तपै रवि आकरो सूखे सरवर नीर ।
शैल शिखर मुनि तप तपैं दाझैं नगन शरीर ॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवि जलधि जहाज ।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥७॥
पावस रैन डरावनी बरसैं जलधर धार ।
तरुतल निवसैं साहसी चालैं झंझावार ॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज ।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥८॥
शीत पड़े कपि-मद गले, दाहै सब वनराय ।
ताल तरंगनिके तटैं, ठाड़े ध्यान लगाय ॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज ।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥९॥
इह विधि दुद्धर तप तपैं, तीनों कालमंझार ।
लागे सहज सरूपमें, तनसों ममत निवार ॥

ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥५॥
धर्म धरैं दश लक्षणी, भावैं भावनासार।
सहैं परीषह बीस द्वै चारित रतन भण्डार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भव जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥६॥
जेठ तपै रवि आकरो सूखे सरवर नीर।
शैल शिखर मुनि तप तपैं दाझैं नगन शरीर॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवि जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥७॥
पावस रैन डरावनी बरसैं जलधर धार।
तरुतल निवसैं साहसी चालैं झंझावार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥८॥
शीत पड़े कपि-मद गले, दाहै सब वनराय।
ताल तरंगनिके तटैं, ठाड़े ध्यान लगाय॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥९॥
इह विधि दुद्धर तप तपैं, तीनों कालमंझार।
लागे सहज सरूपमें, तनसों ममत निवार॥

ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥५॥
धर्म धरैं दश लक्षणी, भावैं भावनासार।
सहैं परीषह बीस द्वै चारित रतन भण्डार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भव जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥६॥
जेठ तपै रवि आकरो सूखे सरवर नीर।
शैल शिखर मुनि तप तपैं दाझैं नगन शरीर॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवि जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥७॥
पावस रैन डरावनी बरसै जलधर धार।
तरुतल निवसैं साहसी चालै झंझावार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥८॥
शीत पड़े कपि-मद गले, दाहै सब वनराय।
ताल तरंगनिके तटैं, ठाड़े ध्यान लगाय॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥९॥
इह विधि दुद्धर तप तपैं, तीनों कालमंझार।
लागे सहज सरूपमें, तनसों ममत निवार॥

ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥५॥
धर्म धरैं दश लक्षणी, भावैं भावनासार।
सहैं परीषह बीस द्वै चारित रतन भण्डार ॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भव जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥६॥
जेठ तपै रवि आकरो सूखे सरवर नीर।
शैल शिखर मुनि तप तपैं दाझैं नगन शरीर ॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवि जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥७॥
पावस रैन डरावनी बरसैं जलधर धार।
तरुतल निवसैं साहसी चालैं झंझावार ॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥८॥
शीत पड़े कपि-मद गले, दाहै सब वनराय।
ताल तरंगनिके तटैं, ठाड़े ध्यान लगाय ॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥९॥
इह विधि दुद्धर तप तपैं, तीनों कालमंझार।
लागे सहज सरूपमें, तनसों ममत निवार ॥

ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥५॥
धर्म धरैं दश लक्षणी, भावैं भावनासार।
सहैं परीषह बीस द्वै चारित रतन भण्डार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भव जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥६॥
जेठ तपै रवि आकरो सूखे सरवर नीर।
शैल शिखर मुनि तप तपैं दाझैं नगन शरीर॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवि जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥७॥
पावस रैन डरावनी बरसै जलधर धार।
तरुतल निवसैं साहसी चालै झंझावार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥८॥
शीत पड़े कपि-मद गले, दाहै सब वनराय।
ताल तरंगनिके तटैं, ठाड़े ध्यान लगाय॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥९॥
इह विधि दुद्धर तप तपैं, तीनों कालमंझार।
लागे सहज सरूपमें, तनसों ममत निवार॥

ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥५॥
धर्म धरैं दश लक्षणी, भावैं भावनासार।
सहैं परीषह बीस द्वै चारित रतन भण्डार ॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भव जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥६॥
जेठ तपै रवि आकरो सूखे सरवर नीर।
शैल शिखर मुनि तप तपैं दाझैं नगन शरीर ॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवि जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥७॥
पावस रैन डरावनी बरसै जलधर धार।
तरुतल निवसैं साहसी चालै झंझावार ॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥८॥
शीत पड़े कपि-मद गले, दाहै सब वनराय।
ताल तरंगनिके तटैं, ठाड़े ध्यान लगाय ॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥९॥
इह विधि दुद्धर तप तपैं, तीनों कालमंझार।
लागे सहज सरूपमें, तनसों ममत निवार ॥

ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥५॥
धर्म धरैं दश लक्षणी, भावैं भावनासार।
सहैं परीषह बीस द्वै चारित रतन भण्डार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भव जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥६॥
जेठ तपै रवि आकरो सूखे सरवर नीर।
शैल शिखर मुनि तप तपैं दाझैं नगन शरीर॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवि जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥७॥
पावस रैन डरावनी बरसै जलधर धार।
तरुतल निवसैं साहसी चालैं झंझावार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥८॥
शीत पड़े कपि-मद गले, दाहै सब वनराय।
ताल तरंगनिके तटैं, ठाड़े ध्यान लगाय॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥९॥
इह विधि दुद्धर तप तपैं, तीनों कालमंझार।
लागे सहज सरूपमें, तनसों ममत निवार॥

ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज ।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥५॥
धर्म धरैं दश लक्षणी, भावैं भावनासार ।
सहैं परीषह बीस द्वै चारित रतन भण्डार ॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भव जलधि जहाज ।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥६॥
जेठ तपै रवि आकरो सूखे सरवर नीर ।
शैल शिखर मुनि तप तपैं दाझैं नगन शरीर ॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवि जलधि जहाज ।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥७॥
पावस रैन डरावनी बरसै जलधर धार ।
तरुतल निवसैं साहसी चालैं झंझावार ॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज ।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥८॥
शीत पड़े कपि-मद गले, दाहै सब वनराय ।
ताल तरंगनिके तटै, ठाड़े ध्यान लगाय ॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज ।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥९॥
इह विधि दुद्धर तप तपैं, तीनों कालमंझार ।
लागे सहज सरूपमें, तनमों ममत निवार ॥

ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥५॥
धर्म धरैं दश लक्षणी, भावैं भावनासार।
सहैं परीषह बीस द्वै चारित रतन भण्डार ॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भव जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥६॥
जेठ तपै रवि आकरो सूखे सरवर नीर।
शैल शिखर मुनि तप तपैं दाझैं नगन शरीर ॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवि जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥७॥
पावस रैन डरावनी बरसै जलधर धार।
तरुतल निवसैं साहसी चालै झंझावार ॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥८॥
शीत पड़े कपि-मद गले, दाहै सब वनराय।
ताल तरंगनिके तटै, ठाड़े ध्यान लगाय ॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥९॥
इह विधि दुद्धर तप तपैं, तीनों कालमंझार।
लागे सहज सरूपमें, तनसों ममत निवार ॥

ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥५॥
धर्म धरैं दश लक्षणी, भावैं भावनासार।
सहैं परीषह बीस द्वै चारित रतन भण्डार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भव जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥६॥
जेठ तपै रवि आकरो सूखे सरवर नीर।
शैल शिखर मुनि तप तपैं दाझैं नगन शरीर॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवि जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥७॥
पावस रैन डरावनी बरसै जलधर धार।
तरुतल निवसैं साहसी चालै झंझावार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥८॥
शीत पड़े कपि-मद गले, दाहै सब वनराय।
ताल तरंगनिके तटैं, ठाड़े ध्यान लगाय॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥९॥
इह विधि दुद्धर तप तपैं, तीनों कालमंझार।
लागे सहज सरूपमें, तनमों ममत निवार॥

ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥५॥
धर्म धरैं दश लक्षणी, भावैं भावनासार।
सहैं परीषह बीस द्वै चारित रतन भण्डार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भव जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥६॥
जेठ तपै रवि आकरो सूखे सरवर नीर।
शैल शिखर मुनि तप तपैं दाझैं नगन शरीर॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवि जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥७॥
पावस रैन डरावनी बरसै जलधर धार।
तरुतल निवसैं साहसी चालैं झंझावार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥८॥
शीत पड़े कपि-मद गले, दाहै सब वनराय।
ताल तरंगनिके तटैं, ठाड़े ध्यान लगाय॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥९॥
इह विधि दुद्धर तप तपैं, तीनों कालमंझार।
लागे सहज सरूपमें, तनसों ममत निवार॥

ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज ।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥५॥
धर्म धरैं दश लक्षणी, भावैं भावनासार ।
सहैं परीषह बीस द्वै चारित रतन भण्डार ॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भव जलधि जहाज ।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥६॥
जेठ तपै रवि आकरो सूखे सरवर नीर ।
शैल शिखर मुनि तप तपैं दाझैं नगन शरीर ॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवि जलधि जहाज ।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥७॥
पावस रैन डरावनी बरसै जलधर धार ।
तरुतल निवसैं साहसी चालै झंझावार ॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज ।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥८॥
शीत पड़े कपि-मद गले, दाहै सब वनराय ।
ताल तरंगनिके तटै, ठाड़े ध्यान लगाय ॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज ।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥९॥
इह विधि दुद्धर तप तपैं, तीनों कालमंझार ।
लागे सहज सरूपमें, तनसों ममत निवार ॥

ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥५॥
धर्म धरैं दश लक्षणी, भावैं भावनासार।
सहैं परीषह बीस द्वै चारित रतन भण्डार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भव जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥६॥
जेठ तपै रवि आकरो सूखे सरवर नीर।
शैल शिखर मुनि तप तपैं दाझैं नगन शरीर॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवि जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥७॥
पावस रैन डरावनी बरसै जलधर धार।
तरुतल निवसैं साहसी चालैं झंझावार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥८॥
शीत पड़े कपि-मद गले, दाहै सब वनराय।
ताल तरंगनिके तटैं, ठाड़े ध्यान लगाय॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥९॥
इह विधि दुद्धर तप तपैं, तीनों कालमंझार।
लागे सहज सरूपमें, तनसों ममत निवार॥

ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥५॥
धर्म धरैं दश लक्षणी, भावैं भावनासार।
सहैं परीषह बीस द्वै चारित रतन भण्डार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भव जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥६॥
जेठ तपै रवि आकरो सूखे सरवर नीर।
शैल शिखर मुनि तप तपैं दाझै नगन शरीर॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवि जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥७॥
पावस रैन डरावनी बरसै जलधर धार।
तरुतल निवसैं साहसी चालैं झंझावार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥८॥
शीत पड़े कपि-मद गले, दाहै सब वनराय।
ताल तरंगनिके तटै, ठाड़े ध्यान लगाय॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥९॥
इह विधि दुद्धर तप तपैं, तीनों कालमंझार।
लागे सहज सरूपमें, तनसों ममत निवार॥

ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज ।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥५॥
धर्म धरैं दश लक्षणी, भावैं भावनासार ।
सहैं परीषह बीस द्वै चारित रतन भण्डार ॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भव जलधि जहाज ।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥६॥
जेठ तपै रवि आकरो सूखे सरवर नीर ।
शैल शिखर मुनि तप तपैं दाझैं नगन शरीर ॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवि जलधि जहाज ।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥७॥
पावस रैन डरावनी बरसै जलधर धार ।
तरुतल निवसैं साहसी चालै झंझावार ॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज ।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥८॥
शीत पड़े कपि-मद गले, दाहै सब वनराय ।
ताल तरंगनिके तटै, ठाड़े ध्यान लगाय ॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज ।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥९॥
इह विधि दुद्धर तप तपैं, तीनों कालमंझार ।
लागे सहज सरूपमें, तनसों ममत निवार ॥

ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥५॥
धर्म धरैं दश लक्षणी, भावैं भावनासार।
सहैं परीषह बीस द्वै चारित रतन भण्डार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भव जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥६॥
जेठ तपै रवि आकरो सूखे सरवर नीर।
शैल शिखर मुनि तप तपैं दाझै नगन शरीर॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवि जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥७॥
पावस रैन डरावनी बरसै जलधर धार।
तरुतल निवसैं साहसी चालै झंझावार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥८॥
शीत पड़े कपि-मद गले, दाहै सब वनराय।
ताल तरंगनिके तटैं, ठाड़े ध्यान लगाय॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥९॥
इह विधि दुद्धर तप तपैं, तीनों कालमंझार।
लागे सहज सरूपमें, तनसों ममत निवार॥

ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥५॥
धर्म धरैं दश लक्षणी, भावैं भावनासार।
सहैं परीषह बीस द्वै चारित रतन भण्डार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भव जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥६॥
जेठ तपै रवि आकरो सूखे सरवर नीर।
शैल शिखर मुनि तप तपैं दाझैं नगन शरीर॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवि जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥७॥
पावस रैन डरावनी बरसै जलधर धार।
तरुतल निवसैं साहसी चालैं झंझावार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥८॥
शीत पड़े कपि-मद गले, दाहै सब वनराय।
ताल तरंगनिके तटै, ठाड़े ध्यान लगाय॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥९॥
इह विधि दुद्धर तप तपैं, तीनों कालमंझार।
लागे सहज सरूपमें, तनसों ममत निवार॥

ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥५॥
धर्म धरैं दश लक्षणी, भावैं भावनासार।
सहैं परीषह बीस द्वै चारित रतन भण्डार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भव जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥६॥
जेठ तपै रवि आकरो सूखे सरवर नीर।
शैल शिखर मुनि तप तपैं दाझैं नगन शरीर॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवि जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥७॥
पावस रैन डरावनी बरसै जलधर धार।
तरुतल निवसैं साहसी चालै झंझावार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥८॥
शीत पड़े कपि-मद गले, दाहै सब वनराय।
ताल तरंगनिके तटैं, ठाड़े ध्यान लगाय॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥९॥
इह विधि दुद्धर तप तपैं, तीनों कालमंझार।
लागे सहज सरूपमें, तनसों ममत निवार॥

ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥५॥
धर्म धरैं दश लक्षणी, भावैं भावनासार।
सहैं परीषह बीस द्वै चारित रतन भण्डार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भव जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥६॥
जेठ तपै रवि आकरो सूखे सरवर नीर।
शैल शिखर मुनि तप तपैं दाझैं नगन शरीर॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवि जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥७॥
पावस रैन डरावनी बरसै जलधर धार।
तरुतल निवसैं साहसी चालै झंझावार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥८॥
शीत पड़े कपि-मद गले, दाहै सब वनराय।
ताल तरंगनिके तटै, ठाड़े ध्यान लगाय॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥९॥
इह विधि दुद्धर तप तपैं, तीनों कालमंझार।
लागे सहज सरूपमें, तनसों ममत निवार॥

ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥५॥
धर्म धरैं दश लक्षणी, भावैं भावनासार।
सहैं परीषह बीस द्वै चारित रतन भण्डार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भव जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥६॥
जेठ तपै रवि आकरो सूखे सरवर नीर।
शैल शिखर मुनि तप तपैं दाझैं नगन शरीर॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवि जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥७॥
पावस रैन डरावनी बरसै जलधर धार।
तरुतल निवसैं साहसी चालैं झंझावार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥८॥
शीत पड़े कपि-मद गले, दाहै सब वनराय।
ताल तरंगनिके तटै, ठाड़े ध्यान लगाय॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥९॥
इह विधि दुद्धर तप तपैं, तीनों कालमंझार।
लागे सहज सरूपमें, तनसों ममत निवार॥

ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥५॥
धर्म धरैं दश लक्षणी, भावैं भावनासार।
सहैं परीषह बीस द्वै चारित रतन भण्डार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भव जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥६॥
जेठ तपै रवि आकरो सूखे सरवर नीर।
शैल शिखर मुनि तप तपैं दाझैं नगन शरीर॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवि जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥७॥
पावस रैन डरावनी बरसै जलधर धार।
तरुतल निवसैं साहसी चालै झंझाबार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥८॥
शीत पड़े कपि-मद गले, दाहै सब वनराय।
ताल तरंगनिके तटैं, ठाड़े ध्यान लगाय॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥९॥
इह विधि दुद्धर तप तपैं, तीनों कालमंझार।
लागे सहज सरूपमें, तनसों ममत निवार॥

ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥५॥
धर्म धरैं दश लक्षणी, भावैं भावनासार।
सहैं परीषह बीस द्वै चारित रतन भण्डार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भव जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥६॥
जेठ तपै रवि आकरो सूखे सरवर नीर।
शैल शिखर मुनि तप तपैं दाझैं नगन शरीर॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवि जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥७॥
पावस रैन डरावनी बरसै जलधर धार।
तरुतल निवसैं साहसी चालै झंझावार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥८॥
शीत पड़े कपि-मद गले, दाहै सब वनराय।
ताल तरंगनिके तटै, ठाड़े ध्यान लगाय॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥९॥
इह विधि दुद्धर तप तपैं, तीनों कालमंझार।
लागे सहज सरूपमें, तनसों ममत निवार॥

ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥५॥
धर्म धरैं दश लक्षणी, भावैं भावनासार।
सहैं परीषह बीस द्वै चारित रतन भण्डार ॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भव जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥६॥
जेठ तपै रवि आकरो सूखे सरवर नीर।
शैल शिखर मुनि तप तपैं दाझैं नगन शरीर ॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवि जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥७॥
पावस रैन डरावनी बरसै जलधर धार।
तरुतल निवसैं साहसी चालै झंझावार ॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥८॥
शीत पड़े कपि-मद गले, दाहै सब वनराय।
ताल तरंगनिके तटै, ठाड़े ध्यान लगाय ॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥९॥
इह विधि दुद्धर तप तपैं, तीनों कालमंझार।
लागे सहज सरूपमें, तनसों ममत निवार ॥

ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥५॥
धर्म धरैं दश लक्षणी, भावैं भावनासार।
सहैं परीषह बीस द्वै चारित रतन भण्डार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भव जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥६॥
जेठ तपै रवि आकरो सूखे सरवर नीर।
शैल शिखर मुनि तप तपैं दाझैं नगन शरीर॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवि जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥७॥
पावस रैन डरावनी बरसै जलधर धार।
तरुतल निवसैं साहसी चालैं झंझावार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥८॥
शीत पड़े कपि-मद गले, दाहै सब वनराय।
ताल तरंगनिके तटै, ठाड़े ध्यान लगाय॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥९॥
इह विधि दुद्धर तप तपैं, तीनों कालमंझार।
लागे सहज सरूपमें, तनसों ममत निवार॥

ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज ।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥५॥
धर्म धरैं दश लक्षणी, भावैं भावनासार ।
सहैं परीषह बीस द्वै चारित रतन भण्डार ॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भव जलधि जहाज ।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥६॥
जेठ तपै रवि आकरो सूखे सरवर नीर ।
शैल शिखर मुनि तप तपैं दाझैं नगन शरीर ॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवि जलधि जहाज ।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥७॥
पावस रैन डरावनी बरसै जलधर धार ।
तरुतल निवसैं साहसी चालै झंझाबार ॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज ।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥८॥
शीत पड़े कपि-मद गले, दाहै सब वनराय ।
ताल तरंगनिके तटैं, ठाड़े ध्यान लगाय ॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज ।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥९॥
इह विधि दुद्धर तप तपैं, तीनों कालमंझार ।
लागे सहज सरूपमें, तनसों ममत निवार ॥

ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥५॥
धर्म धरैं दश लक्षणी, भावैं भावनासार।
सहैं परीषह बीस द्वै चारित रतन भण्डार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भव जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥६॥
जेठ तपै रवि आकरो सूखे सरवर नीर।
शैल शिखर मुनि तप तपैं दाझैं नगन शरीर॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवि जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥७॥
पावस रैन डरावनी बरसै जलधर धार।
तरुतल निवसैं साहसी चालैं झंझावार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥८॥
शीत पड़े कपि-मद गले, दाहै सब वनराय।
ताल तरंगनिके तटै, ठाड़े ध्यान लगाय॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥९॥
इह विधि दुद्धर तप तपैं, तीनों कालमंझार।
लागे सहज सरूपमें, तनसौं ममत निवार॥

ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥५॥
धर्म धरैं दश लक्षणी, भावैं भावनासार।
सहैं परीषह बीस द्वै चारित रतन भण्डार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भव जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥६॥
जेठ तपै रवि आकरो सूखे सरवर नीर।
शैल शिखर मुनि तप तपैं दाझैं नगन शरीर॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवि जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥७॥
पावस रैन डरावनी बरसै जलधर धार।
तरुतल निवसैं साहसी चालैं झंझावार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥८॥
शीत पड़े कपि-मद गले, दाहै सब वनराय।
ताल तरंगनिके तटैं, ठाड़े ध्यान लगाय॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥९॥
इह विधि दुद्धर तप तपैं, तीनों कालमंझार।
लागे सहज सरूपमें, तनसों ममत निवार॥

ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥५॥
धर्म धरैं दश लक्षणी, भावैं भावनासार।
सहैं परीषह बीस द्वै चारित रतन भण्डार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भव जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥६॥
जेठ तपै रवि आकरो सूखे सरवर नीर।
शैल शिखर मुनि तप तपैं दाझैं नगन शरीर॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवि जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥७॥
पावस रैन डरावनी बरसै जलधर धार।
तरुतल निवसैं साहसी चालैं झंझावार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥८॥
शीत पड़े कपि-मद गले, दाहै सब वनराय।
ताल तरंगनिके तटै, ठाड़े ध्यान लगाय॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥९॥
इह विधि दुद्धर तप तपैं, तीनों कालमंझार।
लागे सहज सरूपमें, तनसों ममत निवार॥

ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥५॥
धर्म धरैं दश लक्षणी, भावैं भावनासार।
सहैं परीषह बीस द्वै चारित रतन भण्डार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भव जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥६॥
जेठ तपै रवि आकरो सूखे सरवर नीर।
शैल शिखर मुनि तप तपैं दाझैं नगन शरीर॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवि जलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥७॥
पावस रैन डरावनी बरसै जलधर धार।
तरुतल निवसैं साहसी चालैं झंझावार॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥८॥
शीत पड़े कपि-मद गले, दाहै सब वनराय।
ताल तरंगनिके तटै, ठाड़े ध्यान लगाय॥
ते गुरु मेरे मन बसो, जे भवजलधि जहाज।
आप तिरैं पर तारही, ऐसे हैं ऋषिराज ॥९॥
इह विधि दुद्धर तप तपैं, तीनों कालमंझार।
लागे सहज सरूपमें, तनसों ममत निवार॥